A Daily News Magazine
इंदौर
मंगलवार, 02 दिसंबर, 2025

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 67, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

नशे का नया चेहरा बन गए हैं चिप्स-कुकीज..

शगुन

दुनिया यह लंबे समय से जानती है कि सिगरेट किस तरह से दिलो-दिमाग पर कब्जा कर लेती है। एक सिगरेट जलाओ और कश लेते ही निकोटिन का असर तुरंत शुरू हो जाता है। कुछ ही सेकंड में यह रासायनिक तत्व दिमाग पर असर डालने लगता है और एक आनंद का एहसास कराता है। कुछ लोगों को इससे बेहद खुशी महसूस होती है और कुछ अत्यधिक चौकन्ने हो जाते हैं। वहीं, कुछ लोगों को शांति या संतुष्टि का अहसास होता है। समय के साथ दिमाग इस तरह के एहसास की आदत डाल लेता है, जिससे निकोटिन पर निर्भरता बढ़ती जाती है। भले ही इससे सेहत पर खराब असर पड़ने या जोखिम के पुख्ता सबूत मौजूद हैं लेकिन लोग अक्सर इस आदत से बाहर निकलने में असफल रहते हैं।

अब सिगरेट की जगह चिप्स या कुकीज का एक पैकेट रखिए। आप उसे खोलते हैं, एक उठाते हैं और कुछ ही सेकंड में आपका हाथ फिर से उसी पैकेट में चला जाता है। यह ठीक वैसा ही है, जैसा प्रिंगल्स की मशहूर टैगलाइन कहती है, 'वंस यू पॉप, यू कांट स्टॉप' यानी एक बार चखा तो खुद को रोकना मुश्किल होगा। यह जानना दिलचस्प है कि यह इच्छा शायद ही कभी भूख से प्रेरित होती है।

लगातार हो रहे शोध यह दिखा रहे हैं कि दिमाग इन अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों (यूपीएफ) यानी अत्यधिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की और ज्यादा मांग ठीक वैसे ही करता है, जैसे वह निकोटिन या दूसरी नशे की चीजों की लालसा करता है। 36 देशों में किए गए करीब 300 अध्ययनों ने दर्ज किया है कि प्रोसेस्ड जंक फूड नशीले पदार्थों जैसी लत पैदा करते हैं।

यह निष्कर्ष अमेरिका के वैज्ञानिकों के एक समूह ने 25 जुलाई को नेचर मेडिसिन पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन में साझा किया। 'नाऊ इज द टाइम टू रिकॉग्नाइज एंड रिस्पांड टू एडिक्शन टू अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड्स' शीर्षक से प्रकाशित इस लेख में कहा गया है कि कुछ खाद्य पदार्थ ऐसे व्यवहार को ट्रिगर कर सकते हैं जो नशीले पदार्थों की लत जैसी ही आदतों से मेल खाते हैं।

नशे पर काम करने वाले कई विज्ञानियों ने इसे स्वीकार कर लिया है और इसके पीछे ऐसे न्यूरोबायोलॉजिकल प्रमाण भी हैं, जो पारंपरिक नशे के मामलों में दिमाग के मूल तंत्रों और सर्किट की समानता दिखाते हैं। 2022 की एक मेटा-विश्लेषण रिपोर्ट बताती है कि यूपीएफ की लत का वैश्विक स्तर पर प्रसार 14 से 20 प्रतिशत के बीच है, जो शराब पीने की लत के समान है।

फिर भी, भोजन की लत को अभी तक औपचारिक रूप से किसी चिकित्सा वर्गीकरण प्रणाली में शामिल नहीं किया गया है, जिनमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत डायग्नोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैनुअल ऑफ मेंटल डिसऑर्डर्स भी शामिल है। नेचर मेडिसिन का लेख चेतावनी देता है कि यह अनदेखी सार्वजनिक स्वास्थ्य पर गंभीर असर डाल सकती है।

सच्चाई यह है कि पैक्ड स्नैक्स और रेडी मील्स आमतौर पर चीनी, नमक, परिष्कृत कार्बोहाइड्रेट और संतृप्त वसा से भरपूर होते हैं। उन्हें जटिल औद्योगिक प्रक्रियाओं से गुजारा जाता है ताकि उनकी शेल्फ लाइफ यानी जीवन बढ़े और स्वाद बेहतर बने लेकिन इस प्रक्रिया में वे पोषक तत्वों के मामले में फिसड्डी और कृत्रिम रसायनों के मामले में समृद्ध हो जाते हैं। अब तक पर्याप्त सबूत सामने आ चुके हैं कि कैलोरी से भरपूर लेकिन पोषण में कमजोर यह यूपीएफ कई गंभीर स्वास्थ्य परिणामों से जुड़े हैं।

नवंबर 2023 में अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना एट चैपल हिल के ग्लोबल फूड रिसर्च प्रोग्राम द्वारा जारी एक फैक्टशीट बताती है कि यूपीएफ का अधिक सेवन न केवल मोटापा और मधुमेह को बढ़ाता है, बल्कि अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोप में यह हृदय रोग, डिमेंशिया, अवसाद और कैंसर जैसे रोगों से भी जुड़ा हुआ है। नेचर मेडिसिन का लेख भी उन शोधों का हवाला देता है जो यूपीएफ की लत को मोटापा, अवसाद और पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर से जोड़ते हैं। यूपीएफ सस्ते हैं और हर जगह उपलब्ध हैं। यह स्थिति को और खराब बनाता है। खाद्य कंपनियों की आक्रामक मार्केटिंग के चलते यह खतरनाक खाद्य पदार्थ चाय की दुकानों से लेकर सुपरमार्केट की गलियों और स्कूल की कैंटीनों तक पहुंच चुके हैं। इन पर चेतावनी लेबल दुर्लभ हैं। ऐसे माहौल में यूपीएफ की लत एक मूक महामारी की तरह फैल रही है।

पंजाब की बच्ची सुहानी कहती है, 'मसाला सबसे बड़ा आकर्षण है।' उसका दूसरा पसंदीदा है तले हुए कॉर्नमील से बना एक और पैक्ड स्नैक पफ कॉर्न्स जो मसालों से लबालब होता है। इन दोनों में से किसी न किसी का सेवन वह हफ्ते में दो से तीन बार जरूर करती है। घर पर भी उसका खानपान कुछ ऐसा ही है। वह हफ्ते में दो बार बर्गर खाती है। उसे आम फ्लेवर वाली आइसक्रीम भी बहुत पसंद है और कभी-कभी वह दिन में चार स्कूप तक खा जाती है। खास बात यह है कि उसके आहार में फल और सब्जियां लगभग गायब हैं। उसके पिता भागीरथ कहते हैं कि परिवार ने घर में जंक फूड की उपलब्धता कम करने की कोशिश की, लेकिन सुहानी स्वस्थ विकल्पों को ठुकरा देती है और कहती है वे 'फीके' हैं।

कक्षा की चर्चाओं से उसे पता है कि जंक फूड सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है। लेकिन वह छोड़ नहीं पाती। शायद कोई कहे कि यह तो एक अस्थायी अवस्था है लेकिन मिशिगन विश्वविद्यालय की मनोविज्ञान की एसोसिएट प्रोफेसर ऐशली गियरहार्ट चेतावनी देती हैं, लोगों ने निकोटिन के बारे में भी दशकों तक यही कहा था।

गियरहार्ट नेचर मेडिसिन लेख की सह-लेखिका भी हैं। वह कहती हैं कि अन्य नशे की तरह भोजन भी तलब, नियंत्रण खोने और लगातार सेवन की प्रवृत्ति पैदा कर सकता है। गियरहार्ट मिशिगन विश्वविद्यालय के फूड एंड एडीक्शन साइंस एंड ट्रीटमेंट लैबरोट्री का संचालन करती हैं और उनका शोध बताता है कि वयस्क भी यूपीएफ की लत के शिकार हो सकते हैं।

2023 में स्विट्जरलैंड स्थित बीमा कंपनी स्विस री और ब्रिटिश मेडिकल जर्नल द्वारा आयोजित मोटापा और मधुमेह सम्मेलन में गियरहार्ट ने एक वयस्क स्वयंसेवक का उदाहरण दिया जो डोनट्स (यूपीएफ श्रेणी में आने वाला उत्पाद) का शौकीन था। टाइप 2 मधुमेह होने और यह जानते हुए भी कि एक डोनट भी नुकसानदेह है, वह एक बार में दर्जन भर खा जाता था। वह खुद को रोक नहीं पाता था। गियरहार्ट कहती हैं, कुछ खाद्य पदार्थ दिमाग पर वैसा ही कब्जा करते हैं जैसा अन्य नशे करते हैं। इसे नजरअंदाज करना समाधान में देरी करता है।

(डाउन टू अर्थ हिंदी में प्रकाशित रिपोर्ट के संपादित अंश)

हिंदुत्व भारत की आत्मा है: दत्तात्रेय होसबोले

- संघ के जनरल सेक्रेटरी ने कहा-धर्मांतरण विरोधी कानूनों को सख्ती से लागू किया जाए

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जनरल सेक्रेटरी दत्तात्रेय होसबोल ने हिंदुत्व के कॉन्सेप्ट पर अपना बात रखी है। आरआरएस जनरल सेक्रेटरी ने हिंदुत्व के कॉन्सेप्ट को भारत की आत्मा बताया है। उन्होंने आगे कहा कि लोगों में जागरुकता बढ़ाकर, सामाजिक मेलजोल बढ़ाकर और कानूनों को सख्ती से लागू करके धर्म बदलने को रोका जा सकता है। आरएसएस सरकार्यवाह ने कहा कि दत्तात्रेय होसबोल ने कहा कि भगवान को इसी रास्ते से पाया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि हमारा भारत वो भारत है जो पूरी सृष्टि को एक मानता है। हिंदू कल्चर के अलग-अलग एक्सप्रेशन और विविधताएं हैं लेकिन इसका मूल एक है। सभा में एक व्यक्ति के धर्म बदलने के सवाल का जवाब देते हुए कहा कि उन्होंने कहा कि धर्म जागरण, सेवा के काम, सामाजिक मेलजोल, संतों के दौरे और कानूनों को सख्ती से

लागू करने से धर्म बदलने पर रोक लग सकती है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति में धर्म का कॉन्सेप्ट सिर्फ अंग्रेजी शब्द रिलीजन तक सीमित नहीं है और इसे बड़े पैमाने पर समझने की जरूरत है। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए कहा कि ट्रैफिक नियम सबसे लिए एक जैसे हैं। गाड़ी एक रिलीजन है और गाड़ी एक धर्म। उन्होंने आगे कहा कि रिलीजन बदला जा सकता है, लेकिन धर्म नहीं। अगर धर्म बदलने के पीछे के इरादे गलत हैं, तो सावधान रहने और ऐसे कामों को रोकने की जरूरत है। इंदौर में आयोजित 'प्रमुख जन गोष्ठी' में होसबोले ने 1975 की इमरजेंसी और अयोध्या आंदोलन की याद दिलाई।

सदन में ड्रामा नहीं डिलीवरी चाहिए

- शीतकालीन सत्र से पहले पीएम मोदी की विपक्ष को नसीहत

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद का शीतकालीन सत्र सोमवार से शुरू हो गया। दोनों सदनों में एसआईआर और वोट चोरी के आरोप के मुद्दे पर हंगामा हुआ। सदन की कार्यवाही से पहले पीएम मोदी ने संसद के बाहर मीडिया से 10 मिनट बात की। उन्होंने कहा, विपक्ष हाल के चुनावों में पराजय की निराशा से बाहर निकले और सदन में मजबूत मुद्दे उठाए। अगर विपक्ष चाहे तो मैं उन्हें टिप्स देने के लिए तैयार हैं कि कैसे परफॉर्म किया जाए। पीएम ने कहा- यह सत्र पराजय की हताशा या विजय के अहंकार का मैदान नहीं बनना चाहिए। नई पीढ़ी के सदस्यों को अनुभव का लाभ मिलना चाहिए। यहां ड्रामा नहीं, डिलीवरी होनी

चाहिए। यहां जोर नीति पर होना चाहिए, नारों पर नहीं। पीएम ने इसके बाद राज्यसभा में नए सभापति सीपी राधाकृष्णन का स्वागत किया और उनके अभिवादन में स्पीच दी।

खड़गे ने कहा- धनखड़ को फेयरवेल नहीं मिला, इसका दुख

शरद की सुबह

मैं पहली पंक्ति लिखता हूँ
और डर जाता हूँ राजा के सिपाहियों से
पंक्ति काट देता हूँ
मैं दूसरी पंक्ति लिखता हूँ
और डर जाता हूँ बाग़ी गुरिल्लों से
पंक्ति काट देता हूँ
मैने अपने प्राणों की ख़ातिर
अपनी हज़ारों पंक्तियों को
ऐसे ही क़त्ल किया है
उन पंक्तियों की आत्माएँ
अक्सर मेरे आसपास ही रहती हैं
और मुझे कहती हैं :
कवि साहिब
कवि हैं या कविता के क़ातिल हैं आप ?
सुने मुनसिफ बहुत इंसाफ़ के क़ातिल
बड़े धर्म की पवित्र आत्मा को
क़त्ल करते भी सुने थे
सिर्फ़ यही सुनना बाक़ी था
कि हमारे वक्त में ख़ौफ के मारे
कवि भी बन गए
कविता के हत्यारे।

– सुरजीत पातर

उज्जैन से अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का शुभारंभ

श्रीकृष्णं वंदे जगद्गुरुम्: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

उज्जैन/भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को 3 दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का शुभारंभ उज्जैन के दशहरा मैदान से किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस अवसर पर सभी को गीता जयंती की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जगत के गुरु भगवान श्रीकृष्ण को हम सभी नमन करते हैं। कुरूक्षेत्र के युद्ध स्थल में मोहग्रस्त अर्जुन को भगवान श्री कृष्ण द्वारा दिये गये उपदेश को समझने व आत्मसात करने के लिए प्रदेश में गीता जयंती से अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

पवित्र नगरी उज्जैन ने हर काल, हर परिस्थिति और हर युग में अपने महत्व को बनाए रखा है। आज से लगभग 5 हजार वर्ष पूर्व भगवान श्री कृष्ण ने कंस का वध किया था, और उसके पश्चात उन्होंने उज्जैन के सांदीपनि आश्रम में आकर महर्षि सांदीपनि से विद्या प्राप्त की थी। सांदीपनि आश्रम में बिना किसी भेदभाव के सभी शिष्यों को एक समान विद्या-अध्ययन करवाया जाता था। भगवान श्री कृष्ण ने जन्म से ही कई संकटों को पार करते हुए विकट परिस्थितियों में भी सहज रहकर संकटों का सामना करना हम सभी को सिखाया। कंस वध के पश्चात उन्होंने अपने नाना उग्रसेन को राज्य हस्तांतरित किया और स्वयं उज्जैन में शिक्षा ग्रहण करने के लिए आये। यहां से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात पूरे विश्व को उनके व्यक्तिव ने प्रभावित किया। वर्तमान में विद्या अध्ययन कर रहे सभी विद्यार्थियों को इससे प्रेरणा लेना चाहिए कि जीवन में शिक्षा का महत्व सर्वाधिक होता है। नई शिक्षा नीति के तहत श्री भगवद्गीता को कुछ राज्यों के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है और कई राज्यों ने इसे अपनी शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनाने के लिए कदम उठाए हैं। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देना है। मुख्मयंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण के गुरु महर्षि सांदीपनि ने उनके गुणों को पहचाना तथा अपना सम्पूर्ण ज्ञान उन्हें दिया। भगवान श्रीकृष्ण इसके पश्चात ही जगत गुरू बने।

गीता में संपूर्ण जीवन का सार

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार प्रदेश में हर्षोल्लास के साथ गीता जयंती कार्यक्रम आयोजित कर रही है। पवित्र गीता एक ऐसा ग्रंथ है, जिसमें भक्ति योग, ज्ञान योग और कर्म योग के साथ संपूर्ण जीवन का सार समाहित है। यह गर्व का विषय है कि नई शिक्षा नीति-2020 में राज्य सरकार ने स्कूली पाठ्यक्रमों में गीता के ज्ञान और गोपाल कृष्ण की लीलाओं को महत्ता दी है। हम सभी के लिए यह धर्म के माध्यम से जीवन के मर्म को समझने का अवसर है। किसी के प्रति हमारा गलत भाव नहीं है, लेकिन सच्चाई और अच्छाई के साथ होना चाहिए।

गीता भवन बनेंगे संस्कृति के केन्द्र

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गीता को हर स्कूली बच्चे के बस्ते में होना चाहिए। गीता जयंती के अवसर पर इंदौर को गीता भवन की सौगात मिलेगी। प्रदेश के प्रत्येक नगरीय निकाय में गीता भवनों का निर्माण कराया जा रहा है। यह ऐसे स्थान होंगे, जहां लाइब्रेरी और कंप्यूटर साइंस के गुर भी सिखाए जाएंगे। गीता भवन भविष्य में हमारी संस्कृति के बड़े केंद्र बनेंगे।

डॉ. सुधीर सक्सेना

दुनिया के 'स्टील सम्राट' कहे जाने वाले लक्ष्मी मित्तल ब्रिटेन छोड़ेंगे

दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी इस्पात कंपनी आर्सेलर मित्तल के मालिक और ब्रिटेन के अव्वल दस अरबपतियों में शुमार 'स्टील सम्राट' लक्ष्मी मित्तल ने यूके-सरकार के टैक्स-सुधारों से असंतोष के चलते ब्रिटेन छोड़ने का फैसला किया है। उन्होंने भावी कराधान से बचने के लिये अपना टैक्स-रेजीडेंस स्विट्जरलैंड में स्थानांतरित कर लिया है और अब वह अपना ज्यादातर समय दुबई में बितायेंगे, जहां पहले से ही उनकी संपत्ति मौजूद है और हाल ही में उन्होंने एक लक्जरी रियल स्टेट में परियोजना में निवेश भी किया है। इन दो ठिकानों के चयन का प्रमुख कारण यह है कि वह अपनी अरबों की बेशकीमती संपदा को टैक्स-फ्री तरीके से अगली पीढ़ी यानि अपने उत्तराधिकारियों को निरापद हस्तांतरित कर सकें। गौरतलब है कि लक्ष्मी मित्तल 15.4 अरब पाउंड की अनुमानित संपत्ति के स्वामी हैं। उन्होंने ब्रिटिश वित्तमंत्री रेचल रीव्ज़ के उस बजट के पेश्तर यूके छोड़ने का निर्णय लिया है, जिसमें धनाढ्य वर्ग पर अधिक कराधान की संभावना है। इस कराधान में 20 प्रतिशत तक एग्जिट टैक्स, मेशन टैक्स और 40 फीसद तक बढ़ाया गया इनहेरिटेंस यानि विरासत कर शामिल है। सन् 2008 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा देश के दूसरे सर्वोच्च सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित लक्ष्मी मित्तल मूल रूप से राजस्थान में चुरू के रहने वाले हैं। 15 जून, सन् 1950 को जनमे लक्ष्मी मित्तल की आयु 75 वर्ष हो गयी है। अपने अमृतवर्ष में उनके इस निर्णय को ब्रिटिश अर्थ व्यवस्था के लिये अप्रत्याशित आघात माना जा रहा है। सन् 1960 की दहाई में मितल परिवार कलकत्ते चला गया था, जहां पिता स्टील मिल चलाते थे। युवा लक्ष्मी ने सेंट जेवियर्स कॉलेज में विज्ञान की पढ़ाई करते हुए मिल में काम भी किया। बताते हैं कि स्नातक की डिग्री हासिल करने के बाद वह वहां ट्रेनी भी रहे। सन् 1976 में वह

इंडोनेशिया चले गये, जहां उन्होंने एक छोटी स्टील कंपनी स्थापित की। इसी इस्पात कंपनी ने आगे चलकर आर्सेलर मित्तल का रूप ले लिया! आर्सेलर मित्तल संप्रति इस्पात उत्पादन में विश्व में दूसरी पायदान पर है। सन् 2004 में इस्पात इंटरनेशनल और एलएनएम होल्डिंग्स के विलय तथा इंटरनेशनल स्टील ग्रुप के एक संग अधिग्रहण के उपरांत मित्तल स्टील की स्थापना हुई। उसके तुरंत बाद सन् 2006 में मित्तल स्टील ने आर्सेलर के साथ विलय के लिए बोली लगाई, फलतः आर्सेलर मित्तल का गठन हुआ।

लक्ष्मी मित्तल के ब्रिटेन को अलविदा कहने की खबर को लंदन से प्रकाशित द 'पुरवाई' ने ब्रेक किया। 'पुरवाई' के संपादक एवं हिन्दी के यशस्वी कथाकार तेजेंद्र शर्मा ने टेलीफोनिक चर्चा में बताया कि लक्ष्मी मित्तल अकेले कुबेर उद्योगपति नहीं हैं, जिन्होंने नयी वित्तीय व्यवस्था से क्षुब्ध होकर यूके को 'सायोनारा' कहा है। उन्होंने बताया कि यहां नान-डोमीसाइल्ड-व्यवस्था, जो दो सौ से भी अधिक वर्षों से लागू थी, विदेश में मूल घर रखने वाले निवासियों को उनकी विदेशी-आय पर कर से छूट देती थी। इस विशेषाधिकार की समाप्ति से मित्तल सरीखे उद्योगपतियों को अपनी वैश्विक आय पर भारी कर चुकाना पड़ता। ब्रिटेन के अनेक राजनेता मानते हैं कि अरबपतियों का ब्रिटेन छोड़ना चिंता का विषय है। बजट की एक उल्लेखनीय बात यह भी है कि बीस लाख पाउंड से अधिक कीमत के घरों पर अतिरिक्त टैक्स का प्रावधान है। लक्ष्मी मित्तल के ही घर की बात करें तो उनका घर लंदन के सबसे महंगे इलाके में है। उनका घर किसी आलीशान महल से कम नहीं है। उनका घर भारतीय उच्चायोग के ऐन सामने है। जहां भारतीय उच्चायुक्त के आवास का पता 9 केनसिंगटन, पैलेस गार्डस है, वहीं लक्ष्मी मित्तल के घर का पता है : 18-19, केनसिंगटन, पैलेस गार्डस। ऐसा ऐश्वर्यपूर्ण शाही जीवन जीने वाले मित्तल अब बर्तानिया छोड़कर, स्विट्जरलैंड और दुबई में अपना ठिकाना बनायेंगे।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 27 °c | न्यूनतम 23°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 02 दिसंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

थरूर कांग्रेस की स्ट्रेटेजिक मीटिंग में फिर नहीं पहुंचे

● कहा-90 साल की मां के साथ हूं, एसआईआर पर हुई बैठक से भी दूर थे

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस वर्किंग कमेटी के मेंबर और एमपी शशि थरूर ने एक बार फिर कांग्रेस के स्ट्रेटेजिक ग्रुप की एक जरूरी मीटिंग अटेंड नहीं की। 30 नवंबर को पार्लियामेंट के विंटर सेशन को लेकर सोनिया गांधी की लीडरशिप में बैठक हुई। हालांकि थरूर के ऑफिस ने बताया कि वह केरल में अपनी 90 साल की मां के साथ हैं। यह दूसरा मौका है जब थरूर पार्टी की किसी मीटिंग में नहीं पहुंचे। इससे पहले खराब सेहत का

हवाला देकर एसआईआर मुद्दे पर बुलाई गई कांग्रेस की मीटिंग में भी वे नहीं पहुंचे थे। उस दौरान वे पीएम मोदी के इवेंट में शामिल हुए थे, जिसे लेकर बवाल मचा था। कांग्रेस की जरूरी मीटिंग्स से थरूर का लगातार गायब रहना पार्टी के अंदर चर्चा का विषय बन गया है। कांग्रेस और थरूर के बीच का रिश्ता लंबे समय से किसी से छिपा नहीं है, खासकर ऑपरेशन सिंदूर के बाद कई मौकों पर थरूर का पीएम मोदी की तरफ झुकाव अक्सर सुर्खियों में रहता है।

बाहुबली की पत्नी विभा देवी नहीं पढ़ पाई शपथ

● विधायक से बोलीं-छुटकी पढ़ ना, बता ना, पीछे मुड़कर देखते रहे सभी एमएलए

पटना (एजेंसी)। 18वीं विधानसभा के पहले सत्र में नवनिर्वाचित सदस्यों ने शपथ ली। बाहुबली राजबल्लभ की पत्नी और नवादा से जदयू विधायक विभा देवी शपथ पत्र नहीं पढ़ पाईं। अटक-अटक के किसी तरह से शपथ पढ़ रही थीं। इस बीच उन्होंने पास बैठी विधायक मनोरमा

देवी से बताने को कहा। फिर मनोरमा देवी के प्रॉम्प्ट करने के बाद उन्होंने टूट-फूटे शब्दों में शपथ ली। वहीं बाहुबली अशोक महतो की पत्नी और वारिसलीगंज विधायक अनीता देवी ने बहुजन के नेताओं कोट करते हुए शपथ लेना शुरू किया। उन्होंने कहा, मैं बहुजन समाज की बेटी अनीता, रुहानी आशीर्वाद लेते हुए बाबा साहब को यादव करते हुए शपथ लेती हूं.... जिसके बाद प्रोटेम स्पीकर ने उन्हें टोका। उन्होंने दोबारा अपना नाम लेते हुए शपथ पढ़ी। बेतिया से बीजेपी विधायक और पूर्व डिप्टी सीएम रेणु देवी ने सदन में गलत शपथ ली। जिसके बाद प्रोटेम स्पीकर ने उन्हें टोका और फिर से शपथ पढ़वाई।

लाखों 'फ्लेमिंगो' से कच्छ का रण हुआ गुलाबी

● सात समंदर पार से गुजरात आए लाखों 'फ्लेमिंगो' पक्षी ● इस बार रिकॉर्ड तीन लाख पहुंच सकती है इनकी संख्या

कच्छ (एजेंसी)। गुजरात के कच्छ के रण में ठंड की दस्तक के साथ ही सायबेरिया, ईरान और यूरोप से विदेशी पक्षियों का आगमन शुरू हो गया है। ठंड की शुरुआत में ही यहां 1 लाख से अधिक फ्लेमिंगो का जमावड़ा हो चुका है।

गुलाबी पंखों वाले फ्लेमिंगों की इस भीड़ से कच्छ का रण का नजारा भी गुलाबी हो गया है। पूर्वी कच्छ वन विभाग के मुख्य अधिकारी आयुष वर्मा ने बताया कि अभी तो इन विदेशी मेहमानों के आगमन का सिलसिला शुरू ही हुआ है। दिसंबर के अंत तक इनकी संख्या तीन लाख तक पहुंच

सकती है, जो कि पूरे कच्छ का सबसे अनोखा नजारा होगा। कच्छ को कहा जाता है फ्लेमिंगो सिटी साइबेरिया, ईरान और यूरोप के ठंडे प्रदेशों से फ्लेमिंगो कच्छ के रण में हर साल सर्दियां बिताने आते हैं। इनके साथ पेंटास्टॉर्क, सफेद और गुलाबी रंग के लेसर व ग्रेटर सहित कई विदेशी पक्षी भी आते हैं। इन्हें देखने के लिए विदेशी मेहमान भी कच्छ आते हैं। गुजरात का रण ऑफ कच्छ खासतौर पर फ्लेमिंगो पक्षियों के प्रजनन स्थल के लिए मशहूर है। इसीलिए इसे फ्लेमिंगो सिटी भी कहा जाता है। सर्दियों के दौरान लाखों की संख्या में गुलाबी पंखों वालों फ्लेमिंगो इस दलदली क्षेत्र को गुलाबी रंग से भर देते हैं। कच्छ के छोटे और बड़े रेगिस्तान, बड़े और छोटे फ्लेमिंगो के लिए एक विशेष स्थान रखते हैं।

संसद परिसर में कुत्ता लेकर पहुंचीं कांग्रेस सांसद रेणुका चौधरी

● बोलीं-ये काटता नहीं, काटने वाले संसद में,भाजपा ने आपत्ति जताई

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन सोमवार को कांग्रेस सांसद रेणुका चौधरी एक कुत्ता लेकर संसद परिसर में पहुंच गईं। इस घटना पर बीजेपी सांसदों ने कड़ा विरोध जताया है। रेणुका चौधरी से जब पूछा गया कि वे कुत्ते को संसद क्यों लाई हैं, तो उन्होंने कहा- सरकार को जानवर पसंद नहीं हैं। इसमें क्या हर्ज है। उन्होंने कहा, ये छोटा और बिल्कुल नुकसान न पहुंचाने वाला जानवर है। काटने वाले और डसने वाले संसद में, कुत्ते नहीं। उनके इस कदम पर बीजेपी सांसद जगदंबिका पाल ने नाराजगी जताई और कहा- रेणुका चौधरी कुत्ता लेकर संसद आईं, यह गलत है। उन पर कार्रवाई होनी चाहिए। विशेषाधिकार का मतलब दुरुपयोग नहीं होता। संसद की

सिक्योरिटी कंसर्न को लेकर कांग्रेस सांसद ने कहा,कौन सा प्रोटोकाल। कहीं कोई कानून बना है क्या। मैं रास्ते में आ रही थी। वहां स्कूटर और कार वाले का टक्कर हुआ।

हिंदी प्रेमियों के संसार में कभी भी सूर्यास्त नहीं होता, हिंदी प्रयोक्ताओं की संख्या 100 करोड़

अंतरराष्ट्रीय हिंदी नागरी सम्मेलन के अवसर पर डॉ. अशोक भार्गव के उद्‌गार

बठिंडा (पंजाब)। वैश्विक मंच पर हिंदी और देवनागरी लिपि की स्वीकार्यता निरंतर बढ़ रही है। आज विश्व के सभी महाद्वीपों के 140 से अधिक राष्ट्रों में हिंदी बोली समझी, लिखी और पढ़ी जा रही है। वह संपर्क भाषा के रूप में भी प्रतिष्ठा प्राप्त कर रही है। आज विश्व में हिंदी प्रयोक्ताओं संख्या लगभग 100 करोड़ से अधिक हो गई, जो संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाओं से बहुत ज्यादा है।

ये उद्गार रीवा एवं शहडोल संभाग के पूर्व कमिश्नर डॉ. अशोक कुमार भार्गव ने भारतीय नागरी लिपि परिषद नई दिल्ली और पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में बठिंडा में आयोजित अंतरराष्ट्रीय हिंदी नागरी सम्मेलन के अवसर पर 'राष्ट्रीय एकता में नागरी लिपि की भूमिका' विषय के द्वितीय सत्र के अध्यक्षीय उद्बोधन में व्यक्त किए। संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मेरी मौलिक अवधारणा है कि कभी कहा जाता था कि ब्रिटिश साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता। यद्यपि अब ब्रिटेन का यह परिदृश्य भी बदल गया। किंतु आज सुखद स्थिति यह है कि हिंदी प्रेमियों और देवनागरी में लिखने वालों के संसार में भी कभी सूर्यास्त नहीं होता।

डॉ. भार्गव ने कहा कि राष्ट्र की एकता अखंडता और भावनात्मक रिश्तों की बुनियाद को सुदृढ़ बनाने

में देवनागरी लिपि की अहम भूमिका रही है। हमारा समग्र सांस्कृतिक चिंतन, वेद, पुराण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, भगवद गीता और भारतीय दर्शन आदि देवनागरी लिपि में ही लिपिबद्ध किए गए हैं।

राष्ट्रीय एकता के लिए देवनागरी को राष्ट्रीय लिपि के तौर पर मान्यता मिलना चाहिए। क्योंकि, इसमें वे सभी गुण है जो हमारी भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली एक मजबूत कड़ी का काम कर सकती है। इससे विभिन्न भाषाओं के मध्य अपरिचय, अविश्वास की दूरी मिटेगी। एक दूसरे के साहित्य संसार को समझ सकेंगे, ज्ञान की श्री वृद्धि होगी,चिंतन का फलक उदार होगा , शोध का स्वरूप अखिल भारतीय होने से व्यापार, व्यवसाय, वाणिज्य, पर्यटन तथा रोजगार को अखिल भारतीय बाजार मिलेगा।

इस अवसर पर डॉ.भार्गव ने देवनागरी लिपि की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए विस्तार से बताया कि देवनागरी लिपि विश्व की सबसे वैज्ञानिक और सर्वोत्तम लिपि है इसके उच्चारण और लेखन में पूर्णतः साम्य है अर्थात् जैसा लिखा जाता है वैसा ही पढ़ा जाता है और जैसा पढ़ा जाता है वैसा ही लिखा जाता है। इसमें कोई मूक वर्ण नहीं है। इसलिए किसी प्रकार की भ्रम की स्थिति नहीं होती जैसा कि रोमन लिपि में होता है। देवनागरी लिपि सीखने में सहज, सरल, नमनीय और बहुत सुंदर है। यह अपेक्षाकृत स्थान भी कम घेरती है। देवनागरी लिपि अपनी अनंत विशेषताओं के कारण विश्व नागरी बनने की सामर्थ्य भी रखती है। उन्होंने कहा कि देवनागरी को राष्ट्रीय लिपि मान्य करने का अर्थ यह नहीं है कि अन्य भाषाओं या लिपियों का सम्मान कम होगा वरन उनकी महत्ता बिल्कुल कम नहीं होगी। देश में सद्भाव, मैत्री, बंधुता निर्मित होगी,भाषायी संकीर्णता, अलगाववाद और पृथकतावाद के विषाणु नष्ट होंगे। लिपिहीन भाषाओं तथा विलुप्तप्राय भाषाओं के लिए भी मार्ग प्रशस्त होगा।

इस अवसर पर नागरी लिपि परिषद नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ प्रेमशंकर पतंजलि, महामंत्री डॉ हरिसिंह पाल, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य किरण हजारीका एवं देश भर के शोधार्थी, शिक्षक, प्राध्यापक, साहित्यकार और विद्वानों सहित नीदरलैंड, अमेरिका, सूरीनाम, मॉरीशस, न्यूजीलैंड सहित अन्य देशों के अनेक प्रतिभागी भी सम्मिलित थे।

चंडीगढ़ में नहीं बनेगी हरियाणा की अलग विधानसभा

● केंद्रीय गृह मंत्रालय ने प्रपोजल रद्द किया

चंडीगढ़ (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने हरियाणा सरकार की चंडीगढ़ में नए विधानसभा भवन बनाने की मांग को खारिज कर दिया है। मंत्रालय ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को साफ सलाह दी है कि इस मामले में अब चंडीगढ़ प्रशासन से किसी तरह की आगे की कार्रवाई न करें। केंद्र सरकार ने चंडीगढ़ को स्वतंत्र यूनियन टेरेटरी का ऐलान करने के लिए 131वें शोध बिल को वापस लेने के बाद पंजाब के लिए यह दूसरा बड़ा फैसला लिया है। यह मुद्दा तब चर्चा में आया था जब जुलाई 2022 में जयपुर में हुई उत्तरी जोनल काउंसिल की बैठक में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने हरियाणा को नई विधानसभा के लिए भूमि उपलब्ध कराने की घोषणा की थी। इसके बाद जुलाई 2023 में प्रशासन ने 10 एकड़ जमीन हरियाणा को देने पर सहमति जताई थी। यह जमीन चंडीगढ़ के आईटी पार्क के पास रेलवे लाइट पॉइंट के नजदीक है।

देशभर के डिजिटल अरेस्ट केस की जांच करेगी अब सीबीआई

● सुप्रीम कोर्ट का निर्देश-राज्य सरकारें जांच एजेंसी की मदद करें

कहा-ये तेजी से बढ़ता साइबर क्राइम,आरबीआई को नोटिस जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने डिजिटल अरेस्ट स्कैम को बेहद गंभीर मानते हुए इसके सभी मामलों की जांच सीबीआई को सौंप दी है। कोर्ट ने कहा कि इस तरह के साइबर फ्रॉड पर तुरंत कार्रवाई की आवश्यकता है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि डिजिटल अरेस्ट स्कैम पर तुरंत ध्यान देने की जरूरत है। एससी ने कहा कि अन्य स्कैम से अलग सीबीआई अब सबसे पहले डिजिटल अरेस्ट स्कैम के मामलों की जांच करेगी। डिजिटल अरेस्ट स्कैम से जुड़े सभी मामलों की जांच अब सीबीआई करेगी। साइबर क्राइम में जिन बैंक अकाउंट्स का इस्तेमाल हुआ है, उनकी जांच के लिए सीबीआई को पूरी स्वतंत्रता दी गई है। संबंधित बैंक अधिकारियों की भूमिका की भी जांच की जा सकेगी। यह फैसला देशभर में बढ़ते डिजिटल फ्रॉड पर नकेल कसने की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने देशभर में तेजी से बढ़ रहे डिजिटल अरेस्ट स्कैम को

बेहद गंभीर मुद्दा मानते हुए इसकी जांच अब सीबीआई को सौंप दी है और इसके साथ ही एजेंसी को कई खास अधिकार भी प्रदान किए हैं। सीजेआई सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली बेंच ने सीबीआई को भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत उन बैंक अधिकारियों की जांच करने की भी पूरी अनुमति दी है, जिनके बैंक खातों का इस्तेमाल डिजिटल अरेस्ट फ्रॉड में किया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने भारतीय रिजर्व बैंक को मामले में पक्षकार बनाया है।

अमृतपाल की पैरोल पर अब अगले सोमवार को सुनवाई

● सांसद के वकील बोले-सेशन में वर्चुअल शामिल होने दे

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब के खडूर साहिब से खालिस्तान समर्थक सांसद अमृतपाल सिंह ने संसद के विंटर सेशन में शामिल होने के लिए पैरोल न देने के पंजाब सरकार के फैसले को पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट में चुनौती दी है। आज इस याचिका पर सुनवाई हुई, जिसमें हाईकोर्ट ने 8 दिसंबर को अगली सुनवाई निर्धारित की है। पंजाब सरकार के वकील ने अदालत में कहा कि अमृतपाल के भाषण से खतरा हो सकता है। उन पर एनएसए के तहत केस दर्ज है। कोई ऐसा प्रोविजन नहीं है कि उन्हें संसद भेजा जा सकता है। वहीं, अमृतपाल सिंह के वकील ने कहा कि हमें संसद में फिजिकल शामिल नहीं होने दिया जा रहा है। ऐसे में हमें वर्चुअल सेशन में हिस्सा लेने की अनुमति दी जाए। इस पर केंद्र के वकील सत्यपाल जैन ने कहा कि संसद में ऐसा कोई तरीका नहीं है। वहीं, मामले में अब अगले सोमवार को सुनवाई होगी।

जवानों का अगला टारगेट हैं 8 खतरनाक नक्सली

● 3 पर 1-1 करोड़ का ईनाम,मिशन को अंजाम देने के लिए बनी खास प्लानिंग

रायपुर (एजेंसी)। खूंखार नक्सली हिडमा के एनकाउंटर के बाद सुरक्षाबल के जवानों को नक्सलियों के बचे हुए टॉप लीडरों पर है। छत्तीसगढ़ का बस्तर कभी नक्सलियों का गढ़ होता था लेकिन अब यहां सुरक्षाबल के जवानों का दबदबा है। जवानों ने हिड़मा, बसवाराजू जैसे टॉप लीडर्स का एनकाउंटर किया है। वहीं, बड़ी संख्या में नक्सली सरेंडर कर रहे हैं। सरेंडर करने वाले नक्सलियों में कई टॉप लीडर भी शामिल हैं। दावा किया जा रहा है कि हिडमा की मौत के बाद नक्सली संगठनों को बड़ा झटका लगा है। संगठन बस्तर में पूरी तरह से टूट चुका है।

● **जवानों का टारगेट हैं टॉप लीडिर**- हिडमा के एनकाउंटर के बाद अब सुरक्षाबल के जवानों का अगला टारगेट देवजी, गणपति, मिशिर बेसरा, पापा राव, गणेश उइके और बारसे देवा जैसे नक्सली हैं। इनमें से कोई संगठन का टॉप लीडर हैं। कोई एक करोड़ रुपये का इनामी है तो किसी के सिर पर 40 लाख रुपये का इनाम घोषित है। देवजी इस समय नक्सलियों को टॉप लीडर है। वह संगठन का महासचिव और पोलित ब्यूरो का मेंबर है। उसके सिर पर 1 करोड़ से ज्यादा का इनाम घोषित है। यह पोलित ब्यूरो का मेंबर और सेंट्रल कमेटी की सलाहकार है। इसके सिर पर 1 करोड़ रुपये का इनाम घोषित है। भास्कर को मिशिर बेसरा उर्फ भास्कर के नाम से जाना जाता है। यह पोलित ब्यूरो का मेंबर और इंचार्ज है। इसके सिर पर एक करोड़ रुपये का इनाम है। यह सेंट्रल कमेट का सदस्य और ओडिशा स्टेट कमेटी सचिव है।

शिमला के जाखू मंदिर में चांदी से होगी नक्काशी

● दानदाता ने रखा प्रस्ताव,न्यास समिति ने मंजूरी दी

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल की राजधानी शिमला स्थित मशहूर जाखू मंदिर में जल्द ही भव्य बदलाव देखने को मिलेंगे। हनुमान मंदिर न्यास समिति जाखू की सोमवार को हुई मीटिंग मंदिर के गर्भगृह के आसपास चांदी की नक्काशी करने का फैसला लिया गया। इस पूरी नक्काशी का खर्च एक दानकर्ता द्वारा वहन किया जाएगा, जिसने खुद आगे बढ़कर यह प्रस्ताव दिया है। डीसी शिमला अनुपम कश्यप की अध्यक्षता में हुई मीटिंग में न्यास ने इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। चांदी की नक्काशी का डिजाइन एसडीएम, न्यास सदस्य और जिला भाषा अधिकारी मिलकर तय करेंगे, ताकि मंदिर की पारंपरिक शैली और धार्मिक महत्व को ध्यान में रखते हुए काम किया जा सके। इस मीटिंग में मंदिर परिसर के विकास से जुड़े विशाल मास्टर प्लान को मंजूरी दी गई। हिमाचल प्रदेश लोक निर्माण विभाग द्वारा तैयार इस प्लान पर 5 करोड़ 67 लाख रुपए की अनुमानित लागत आएगी। इससे जाखू मंदिर में यज्ञशाला का निर्माण किया जाएगा।

बाजार में खुलेआम बिक रहा चाइनीज मांझा सिर्फ कागजों पर बैन, कार्रवाई औपचारिक

बायपास पर 8वीं के बाइक पर जा रहे छात्र की गर्दन को मांझे ने काट दिया

इंदौर। रविवार सुबह 8वीं के छात्र की प्रतिबंधित चाइनीज मांझे ने जान ले ली। यह घटना कनाड़िया थाना के अंतर्गत बायपास की है। ओमेक्स सिटी-2 निवासी 16 वर्षीय गुलशन पुत्र रामकिशन की मौत हो गई। टीआई देवेंद्र मरकाम के अनुसार आठवीं का छात्र गुलशन दोस्त अरुण, नंदू और कृष्णा के साथ रालामंडल घूमने गया था। बाइक गुलशन चला रहा था। चारों सहारा सिटी के सामने पहुंचे ही थे कि धारदार डोर गुलशन की गर्दन में फंस गई। उसने बाइक रोकी मगर डोर ने आधी गर्दन चीर डाली। पीछे बैठे अरुण और कृष्णा ने डोर को पकड़ने का प्रयास किया तो उनकी अंगुलियां भी कट गईं। गुलशन की गर्दन से खून का फव्वारा निकला और वह बेहोश गया। परिवार सहित जा रहा कार चालक गुलशन को नजदीकी अस्पताल ले गया, लेकिन स्थिति देख वहां से एमवाय अस्पताल रवाना कर दिया। ज्यादा खून बहने से गुलशन की मौत हो गई। रिश्तेदार सतीश जाटवा के अनुसार मूलतः ठीकरी निवासी गुलशन मांगलिया स्थित ओमेक्स-2 कॉलोनी में रहता था। उसके पिता मजदूरी करते हैं। गुलशन पढ़ाई के साथ काम करने लगा था। रविवार होने से अरुण, कृष्णा और नंदू के साथ रालामंडल घूमने गया था। कलेक्टर शिवम वर्मा ने 25 नवंबर को ही चाइनीज डोर बेचने-खरीदने पर रोक लगाई थी। घटना के बाद एसीपी रवींद्र बिलवाल और तेजाजी नगर टीआई देवेंद्र मरकाम अरुण को लेकर मौके पर पहुंचे। वहां पुलिस को लाल रंग का चाइनीज मांझा मिला। लोगों ने बताया कि बायपास की टाउनशिप और ऊंची इमारतों से लोग पतंग उड़ाते हैं। चाइनीज मांजा बिजली के खंभे और झाड़ियों में अटका हुआ था। पुलिस के अनुसार पतंग नहीं मिली है। हो सकता है डोर टूट कर आई हो और गुलशन उसकी चपेट में आ गया।

एनजीटी के प्रतिबंध

चायनीज मांजे पर प्रतिबंध को सालों बीत गए, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि जानलेवा डोर खुलेआम बेची जा रही है। कांच और केमिकल से बना यह सिंथेटिक मांजा हर मकर संक्रांति से पहले गुपचुप बाजार में आता है और हादसों की शुरुआत हो जाती है। बैन के बावजूद दुकानों और आनलाइन प्लेटफॉर्म पर इसकी उपलब्धता प्रशासनिक दावों पर सवाल खड़ा कर रही। चायनीज मांजा आम मांझे से अलग होता है। क्योंकि, इसे शीशा-पाउडर से कोट करके धारदार बनाया जाता है। इसमें नायलान, सिंथेटिक फाइबर या प्लास्टिक बेस होता है। इससे यह बेहद धारदार बन जाता है और गर्दन, चेहरे और हाथों की त्वचा आसानी से काट देता है।

प्रतिबंध सिर्फ कागजों पर

ऐसे कई मामलों में इससे गर्दन की नसें तक कट गई। इंसानों के साथ यह पक्षियों के लिए भी जानलेवा है। यह धातु कोटिंग वाली सिंथेटिक डोर होती है, बिजली के तारों में फंसने पर करंट फैलने का खतरा होता है। चायनीज मांजे पर पहली बड़ी कानूनी कार्रवाई 2017 में हुई थी, जब नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने इसे खतरनाक बताया और इसके उत्पादन, बिक्री, भंडारण, परिवहन और उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया। इसके बावजूद कई राज्यों में यह मांजा अभी भी अवैध रूप से बिक रहा है। 2024 में इंदौर में ही दो दुकानों से चायनीज मांझे के 89 बंडल जब्त किए गए थे। पुलिस प्रशासन समय-समय पर रेड करता है और बेचने वालों के खिलाफ कार्रवाई करता है। फिर भी हादसे हो रहे हैं।

इंदौर में हुई घटनाएं

इसी साल 15 जनवरी को बाइक चलाते समय गर्दन में चाइनीज मांजा फंसने से 20 साल के हिमांशु सोलंकी की मौत हुई थी। 4 जनवरी को चाइनीज मांजे के कारण 20 साल के आकाश की गर्दन कटी। गंभीर अवस्था में भर्ती करना पड़ा, उसे 15 टांके लगे। उससे पहले 26 दिसंबर 2024 को दोस्त के साथ बाइक पर जाते समय विनोद अग्रवाल (38) की गर्दन में चायनीज मांजा फंसा था, इस पर उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा।

ठगी कांड में बड़ा खुलासा, चीनी गैंग का कनेक्शन, लीजो का नाम आया

पकड़े गए दो आरोपियों ने गैंग के कई महत्वपूर्ण सुराग उगले

इंदौर। पिछले दिनों गुजरात से ऑनलाइन ठगी के दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया था। पकड़े गए आरोपियों ने इंदौर क्राइम ब्रांच को पूछताछ में जानकारी दी है कि वे चीन के एक व्यक्ति से जुड़े थे और ठगी के रुपए वे चीन भेजते थे। इस मामले में चीन का कनेक्शन सामने आने के बाद काफी बारीकी से पुलिस के द्वारा जांच पड़ताल की जा रही है। पूरे मामले में अब तक 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। पूछताछ में पता चला कि पूरी वारदात अंतरराष्ट्रीय गैंग के जरिए ऑपरेट की जा रही थी। दोनों आरोपियों ने खुलासा किया कि उन्हें कंप्यूटर ऑपरेटर बनाकर लाओस ले जाया गया था, जहां से यह पूरा रैकेट संचालित होता है। पारस और सौरभ फाइंडर की भूमिका में थे। उनका काम सोशल मीडिया पर उन लोगों को तलाशना था जिन्हें आसानी से झांसे में लिया जा सके। इसके बाद दूसरी लेयर वाले चेटर उनसे बात करके विश्वास जीतते थे। फिर टीम लीडर, डायरेक्टर और सबसे ऊपर गैंग का बॉस होता था यानी रैकेट की एक पूरी चेन। आरोपियों ने बताया कि लाओस में उन्हें 16 से 18 घंटे लगातार काम कराया जाता था। काम में गलती होने पर बॉस उन्हें प्रताड़ित करता था। वहां एक डार्क रूम भी था, जहां गलती करने वालों को कई दिनों तक बांधकर रखा जाता था। घंटों खड़ा करके या अन्य तरीकों से सजा दी जाती थी। पूछताछ में उन्होंने चाइनीज स्कैमर 'लीजो' का नाम भी बताया है। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि टेलीग्राम एप के माध्यम से एक ग्रुप में चीन के एक व्यक्ति से दोस्ती हुई थी। उसके द्वारा ऑनलाइन इन्वेस्टमेंट कंपनी के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही यह भी कहा कि हमारे पास कैश रुपया, यूसडीटी में कन्वर्ट होता है। इसके बाद आरोपी मनीष ने अन्य लोगों से संपर्क किया और लोगों को कमीशन के आधार पर जोड़ता गया।

लीजो की फोटो बरामद- क्राइम ब्रांच को आरोपियों के मोबाइल से लीजो की तस्वीर भी मिली है। अधिकारियों ने बताया कि भरत पोर्टल के जरिए आगे की जांच के लिए जानकारी भेजी जाएगी। गैंग में भी कंपनी की तरह रैंकिंग सिस्टम चलता था। अब तक इस मामले में 19 आरोपी गिरफ्तार हो चुके हैं। क्राइम ब्रांच चीनी गैंग की लोकेशन और बाकी सदस्यों के सुराग जुटाने में जुटी है।

महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या की, कारण अस्पष्ट, पति भी बाहर

इंदौर। ललितपुर से लौटकर आए पति से महिला ने बात की, इसके कुछ देर अपने कमरे में जाकर फांसी लगा ली। आत्महत्या के कारण का पता नहीं चल सका। हीरानगर पुलिस के अनुसार, मृतका की पहचान सोनम पति रवि (22) निवासी गौरी नगर के रूप में हुई है। मृतका के पति रवि ने बताया कि वह ललितपुर में अपनी नानी की तेरहवीं में शामिल होने गया था। ललितपुर से लौटते समय उसकी पत्नी सोनम से वीडियो कॉल पर बात हुई थी और सोनम ने सामान्य बातचीत की थी। घटना उस समय हुई जब सोनम की बुआ, जो घर पर मौजूद थीं, वह 11 महीने की बच्ची को लेकर सब्जी लेने के लिए बाहर गईं। इसी बीच सोनम ने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। उसकी बुआ जब घर लौटीं तो उन्होंने सोनम को फंदे से लटका हुआ देखा। आनन-फानन में अन्य लोगों की मदद से सोनम को फंदे से उतारा गया और अस्पताल ले जाया गया, जहाँ डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस मृतका के पति और परिजनों के बयान दर्ज कर रही है। इधर,तीन दिन पहले एमवाय अस्पताल के जेल वार्ड से फरार हुए कैदी विशाल उर्फ अक्कू (29) खोरदे निवासी कुलकर्णी का भट्टा का कोई सुराग नहीं मिल पाया है। उसकी गिरफ्तारी पर जोन तीन के पुलिस उपायुक्त ने 10 हजार रुपए का इनाम घोषित किया है। घटना शुक्रवार सुबह 11.25 बजे से 11. 50 बजे के बीच एमवाय अस्पताल में हुई थी। कैदी को 19 नवंबर को भर्ती कराया गया था। पेट दर्द की शिकायत के बाद एक्सरे में सुई दिखाई दी, इसके बाद उसे अस्पताल लाया गया था।

ब्याज वसूली से परेशान युवक ने फांसी लगाई

इंदौर। सूदखोरों द्वारा लगातार युवक पर पैसों के लिए दबाव बनाया जा रहा था। दबाव के चलते युवक ने अपने कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। भंवरकुआं पुलिस के मुताबिक, मृतक का नाम पवन (24) पिता मनोज पाटिल निवासी श्रीराम नगर है। पवन के जीजा शरद ने बताया कि उसे सबसे पहले पवन की मां ने देखा था। पवन के मोबाइल में इस मामले से जुड़ी कई महत्वपूर्ण जानकारियां हैं, जिन्हें पुलिस जांच में शामिल करेगी। पवन वॉलपेपर लगाने का काम करता था। परिवार के सदस्यों की मानें तो जरूरतों को पूरा करने के लिए पवन ने कुछ लोगों से कर्ज लिया था। ये सूदखोर 4 से 5 प्रतिशत ब्याज पर राशि देते थे और अब उससे भारी रकम की मांग कर रहे थे। वे उसे फोन पर कॉल करके धमकाते थे। पवन के मोबाइल में सभी कर्जदारों के नंबर और उनकी जानकारी दर्ज है, लेकिन उस पर कुल कितना कर्ज था, उन्हें पता नहीं है। पुलिस ने मोबाइल जब्त कर लिया है। पवन के परिवार में उसका एक भाई है, जो निजी कंपनी में काम करता है, जबकि उसके पिता ड्राइवर हैं। पवन की मौत के बाद परिजनों ने रविवार सुबह एक संस्था की मदद से उसकी आंखें दान कीं। पुलिस ने अज्ञात सूदखोरों पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

48 घंटे में नाबालिग चोर पकड़ाए

इंदौर। सक्रिय पुलिसिंग के चलते द्वारकापुरी पुलिस ने एक बार फिर तत्परता साबित की। पुलिस ने थाना क्षेत्र में हाल ही में हुई चोरी की घटनाओं से जहां लोगों में चिंता बढ़ी थी, वहीं पुलिस ने महज 48 घंटे में नाबालिग आरोपी को गिरफ्तार कर घटना का पदार्फाश कर दिया। चोरी की सूचना मिलते ही पुलिस सक्रिय हो गई और रात में ही इलाके में गश्त तेज कर दी। इसे लेकर पिछले दिनों कमिश्नर ने रात्रिकालीन पेट्रोलिंग पर दिए विशेष निदेर्शों का पालन करते हुए टीमों ने आसपास के क्षेत्रों में व्यापक जांच शुरू की। जांच के दौरान पुलिस ने घटनास्थल और आसपास के कैमरों के फुटेज खंगाले। फुटेज के आधार पर संदिग्ध की पहचान हुई और मुखबिरों की मदद से पुलिस कुछ ही घंटों में नाबालिग तक पहुंच गई। पूछताछ के दौरान उसने चोरी की वारदातों को कबूल किया, साथ ही चोरी का सामान भी बरामद कराया। कुछ लोग इन चोरी की घटनाओं को पुलिस के लिए टास्क बता रहे थे, जिसे द्वारकापुरी पुलिस ने त्वरित कार्रवाई कर पूरा किया है। डीसीपी आनंद कलादगी ने घटना की जानकारी मिलते ही विशेष टीम गठित कर जांच पर फोकस किया, जिसके परिणामस्वरूप इतनी जल्दी सफलता हासिल हो सकी।

युवती को बात नहीं करने पर धमकाया

इंदौर। इंस्टाग्राम पर दोस्ती के बाद युवती ने बात करने से इनकार कर दिया तो युवक ने आत्महत्या करने की धमकी दे डाली। युवक कई दिनों से युवती को परेशान कर रहा था। हीरानगर पुलिस को पीड़िता ने बताया कि वर्ष 2021 में उसकी पहचान गगन नामदेव निवासी भोपाल से इंस्टाग्राम के माध्यम से हुई थी। शुरूआती दिनों में दोनों के बीच सामान्य बातचीत के बाद फिर दोस्ती हो गई। कुछ समय बाद गगन का व्यवहार बदल गया। उसने युवती का पीछा करना शुरू कर दिया और उस पर शक जताते हुए जबरन मिलने का दबाव बनाने लगा। 22 सितंबर को गगन बिना बताए युवती के गौरीनगर स्थित घर पहुंचा। जब युवती ने उससे मिलने से मना किया तो वह गाली-गलौज करने लगा। पीड़िता जब अपने ऑफिस के लिए निकली तो गगन उसका पीछा करते हुए बंगाली चौराहा स्थित उसके कार्यस्थल तक पहुंच गया। युवती ने आरोप लगाया कि ऑफिस के बाहर खड़े होकर युवक ने उसे धमकी दी, कि यदि वह उससे बात नहीं करेगी तो वह आत्महत्या कर युवती को फँसा देगा। इतना ही नहीं, गगन ने युवती को साथ चलने का दबाव बनाया।

ई-रिक्शा की बैटरी फटी, एक की मौत, कितना सुरक्षित है यह सफर

बैटरी विस्फोट जैसी घटनाएं लोगों के मन में डर बढ़ा रही

इंदौर। ई-रिक्शा की बैटरी फटने से झुलसी महिला की रविवार को उपचार के दौरान मौत हो गई। हादसे में मृत महिला की मां भी घायल हुई, उसे बाम्बे हास्पिटल में आईसीयू में भर्ती किया गया है। विजय नगर थाना पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, मृतका की पहचान पवित्रा बाई पति विजय चौहान (50) निवासी निरंजनपुर के रूप में हुई। यह हादसा शनिवार को उस वक्त हुआ जब 85 वर्षीय रामकुंवर बाई पति नाथूसिंह ई-रिक्शा में सवार होकर शंकर आई हॉस्पिटल जा रही थी।

रास्ते में हॉस्पिटल से करीब 100 मीटर की दूरी पर अचानक ई-रिक्शा की बैटरी जोरदार धमाके के साथ फट गई। बैटरी फटने से चालक अरुण (34) पिता सत्यप्रकाश गुप्ता और दोनों महिला यात्री गंभीर रूप से झुलस गईं थी। तीनों घायलों को तुरंत एमवाय अस्पताल में भर्ती कराया गया था। पुलिस ने चालक पर केस दर्ज कर लिया है। सड़क पर अचानक उठे धमाके और चीख-पुकार ने लोगों को सहमा दिया। ऐसे में सवाल उठा कि क्या ई-रिक्शा में सफर सुरक्षित है! यह घटना सिर्फ एक परिवार के लिए नहीं, बल्कि हर उस शख्स के लिए चिंता का कारण बन गई है जो रोज ई-रिक्शा से यात्रा करता है. कम किराया, आसान उपलब्धता और पर्यावरण के लिए बेहतर विकल्प होने के बावजूद बैटरी विस्फोट जैसी घटनाएं लोगों के मन में डर बढ़ा रही हैं। सवाल यह है कि आगे ऐसे हादसे न हों, इसके लिए प्रशासन, ड्राइवर और सवारी-तीनों को क्या समझने और क्या बदलने की जरूरत है।

हादसे के बाद इंदौर के ई-रिक्शा यात्रियों में घबराहट है। कई लोगों का मानना है कि यह वाहन छोटी दूरी के लिए तो ठीक है। लेकिन, सुरक्षा के लिहाज से इसमें सुधार की बड़ी जरूरत है। लोगों का कहना है कि ई-रिक्शा को सवारी के हिसाब से सुरक्षित बनाना चाहिए। बैटरी फटने जैसी घटनाओं की गारंटी नहीं तो कम से कम रोक जरूरी है। रिक्शा चालकों दावा करते हैं कि वे पूरी देखरेख के साथ ही ई-रिक्शा चलाते हैं और अधिकतर कंपनी की प्रमाणित बैटरियों का ही उपयोग करते हैं। यह सलाह भी सामने आई कि बैटरी रोज चेक होनी चाहिए, तभी रिस्क कम होगा। बैटरी ओवरचार्ज नहीं करनी चाहिए और यदि गरम हो तो तुरंत चेक करवाई जाए।

किसान की 4 करोड़ की जमीन की फर्जी रजिस्ट्री, एक करोड़ में हड़पी

पुलिस ने जांच शुरू की और आरोपियों पर एफआईआर दर्ज

इंदौर। एक किसान के साथ हुए फर्जीवाड़े के मामले में तुकोगंज पुलिस ने एफआईआर दर्ज की। इस मामले में पटवारी को भी आरोपी बनाया गया। आरोपियों ने स्टाम्प खरीदकर उस पर हस्ताक्षर किए और किसान की जमीन की फर्जी रजिस्ट्री कर ली। आरोप है कि 4 करोड़ की जमीन का दस्तावेज 1 करोड़ के मूल्य का दिखाया गया। तुकोगंज पुलिस ने विजय भट्ट की शिकायत पर अनिल बोहरा निवासी ग्राम मोडी तहसील सुसनेर, और पटवारी रामगोपाल रातडिया के खिलाफ करोड़ों की जमीन की धोखाधड़ी करने के मामले में एफआईआर दर्ज की। पुलिस के अनुसार, रामगोपाल पेशे से पटवारी हैं। आरोप है कि उन्होंने अनिल बोहरा के साथ मिलकर 31 दिसंबर 2022 को स्टाम्प अपने नाम से खरीदा। इस स्टाम्प पर ग्राम डोकरपुरा के किसान अब्दुल रईस, पुत्र अब्दुल रशीद, की 3.378 हेक्टेयर कृषि भूमि बेचने का अनुबंध कूटरचित फर्जी दस्तावेज तैयार किया गया। दस्तावेज में जमीन का सौदा 4 करोड़ बताकर केवल 1 करोड़ 1 लाख की राशि का भुगतान किसान को किया जाना दिखाया गया। रुपयों की प्राप्ति को फर्जी साइन के जरिए स्टाम्प पर दर्शाया गया। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने जांच शुरू की और आरोपियों पर एफआईआर दर्ज कर पूरी जांच शुरू कर दी।

कर्मचारी के नाम की जमीन- इसके अलावा, अनिल बोहरा ने एक और फर्जीवाड़ा किया। उसने किसान रईस के नाम से एक और एग्रीमेंट बनाया। इसमें जमीन का हिस्सा अभय और देवेन्द्र लुनावत के नाम और दूसरा हिस्सा देवीसिंह और प्रभुलाल के नाम कर दिया गया। जांच में पता चला कि पटवारी रामगोपाल रातडिया इसके परिचित हैं और उनकी पत्नी के फार्म हाउस के कर्मचारी भी इस योजना में शामिल थे।

शराब ठेकेदारों के साथ आबकारी अफसरों की भी जांच शुरू की गई

49 करोड़ की धोखाधड़ी, संपत्ति अटैच, 3 जिलों में कार्रवाई

इंदौर। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने वर्ष 2017 में आबकारी विभाग में फर्जी चालान के जरिए हुए करीब 72 करोड़ के घोटाले में शराब ठेकेदारों की करीब 70 करोड़ की संपत्तियों को अटैच किया गया। अटैच संपत्ति में इंदौर, मंदसौर व खरगोन के जमीन, फ्लैट आदि शामिल हैं। ठेकेदारों पर कार्रवाई हो गई, तत्कालीन अफसर अभी बचे हुए हैं, उनकी भूमिका की जांच की बात कही जा रही है। ईडी ने फर्जी चालान घोटाले में 28 संपत्तियों को अटैच किया है। इनका बाजार मूल्य 70 करोड़ से अधिक है। पहले जांच में 49 करोड़ की राशि की धोखाधड़ी सामने आई जो बाद में बढ़ गई। ईडी ने मुख्य आरोपी राजू दशवंत, अंश त्रिवेदी को गिरफ्तार किया। वह जो अभी न्यायिक हिरासत में है। तत्कालीन आबकारी अधिकारियों के ठिकानों पर भी जांच की थी, कुछ के बयान भी लिए गए, लेकिन अभी उन्हें आरोपी नहीं बनाया है। वर्ष 2017 में मामला खुला था और 21 करोड़ का घोटाला बताया गया। बाद में पता चला, दो साल से फर्जी चालान का खेल चल रहा था। सवाल उठे तो तत्कालीन अफसरों के खिलाफ जांच के आदेश हुए। जांच अधिकारी बदलते गए, मामला कोर्ट पहुंचा। 8 साल बाद भी जांच अधूरी है।

अगस्त 2017 में घोटाला सामने आया था। तत्कालीन सहायक आबकारी आयुक्त संजीव दुबे के कार्यकाल में घोटाला हुआ था जिसमें रावजी बाजार थाने में धोखाधड़ी की धाराओं में ठेकेदार व कर्मियों पर केस दर्ज हुआ। विभाग में 3 साल में शराब ठेकेदार-कर्मियों ने चालान की फर्जी रसीद देकर यह घोटाला किया था। लंबे समय तक फर्जी रसीद दी जा रही थीं, लेकिन तत्कालीन अफसरों ने मिलान न कर लापरवाही की। इस पर तत्कालीन सहायक आबकारी आयुक्त सहित अन्य को सस्पेंड किया था।

दो युवकों ने नाम बदलकर दुष्कर्म किया, वीडियो बनाकर धर्म बदलने का दबाव

धमकी के कारण युवती कई बार उनसे डरकर उन्हें पैसे भी देती रही

इंदौर। लसूड़िया थाने में दो युवकों मोहम्मद सुफियान और अमीर अली के खिलाफ दुष्कर्म, ब्लैकमेल और जबरन धर्म परिवर्तन के लिए दबाव बनाने का मामला दर्ज किया गया। पुलिस ने लव जिहाद और जबरन धर्म परिवर्तन की धाराओं में केस दर्ज किया। दोनों की तलाश की जा रही है।

युवती को पुलिस सुरक्षा मुहैया कराई गई। पीड़ित युवती का कहना है कि साल 2021 में ये दोनों लड़के उसके संपर्क में आए। दोनों ने अपना नाम बदलकर हिंदू नाम बताए और उससे दोस्ती की। धीरे-धीरे बातचीत बढ़ी और दोनों ने अलग-अलग समय पर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। युवती का आरोप है कि संबंध बनाने के बाद दोनों ने छिपकर उसकी निजी वीडियो भी बना लिए। इसके बाद उसे ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया। दोनों ने धमकी दी कि अगर तुमने हमारी बात नहीं मानी, तो ये वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर देंगे, इस डर से युवती चुप रही। सबसे गंभीर बात यह कि दोनों आरोपी लगातार युवती पर इस्लाम धर्म कबूल करने का दबाव डालते रहे। कहते कि अगर तुम मुस्लिम धर्म स्वीकार नहीं करोगी तो तुम्हारे वीडियो पूरे शहर में फैला देंगे।

इस डर और धमकी के कारण युवती कई बार उनसे डरकर पैसे भी देती रही। लंबे समय तक यह सिलसिला चलता रहा। युवती मानसिक रूप से बहुत परेशान हो गई। आखिरकार हिम्मत जुटाकर उसने लसूड़िया थाने में शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने उसकी शिकायत को गंभीरता से लिया और तुरंत दोनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया।

लसूड़िया, भंवरकुआ थाना क्षेत्र में चोरी की वारदात

इंदौर। पुलिस की रात्रि गश्त को धता बताते हुए चोरी की वारदातों को अंजाम दे रहे हैं। शुक्रवार-शनिवार की दरमियानी रात लसूड़िया और भंवरकुआ थाना क्षेत्र में तीन स्थानों से चोरों ने सोना, नकदी और घरेलू सामान पर हाथ साफ कर दिया। घटना एक लसूड़िया थाना क्षेत्र के कैलोद हाला स्थित सैटेलाइट जंक्शन की है। फरियादी शिशुपाल मेश्राम के मुताबिक, चोर उसके घर से बदमाश मंगलसूत्र, लॉकेट, चेन, अंगूठी, नकदी और लैपटॉप चुरा ले गए। दूसरी वारदात फिनिक्स टाउनशिप के प्लॉट नंबर 1393-94 में हुई। यहां रहने वाले बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि चोर घर से एसी आउटडोर यूनिट, गैस चूल्हा, इंडक्शन हॉट प्लेट, किचन आइटम का बॉक्स, दो प्लास्टिक ड्रम, स्टडी टेबल, प्लास्टिक स्टूल और अन्य घरेलू सामान लेकर फरार हो गए। तीसरी घटना भंवरकुआं थाना क्षेत्र के हिम्मतनगर पालदा में सामने आई। फरियादी करण वासुरे ने बताया कि उसने और उसके भाई ने मजदूरी की कमाई अपनी मां तारा बाई को सुरक्षित रखने के लिए दी थी, लेकिन 28 नवंबर की दोपहर उन्होंने देखा कि पूरी रकम गायब थी।

धार व झाबुआ सीमा पर बाघ का नया ठिकाना बनने की उम्मीद, सर्वे होगा

200 वनकर्मी करेंगे सर्वे, चार चरणों में वन्यप्राणियों की गणना

इंदौर। धार जिले में बढ़ते तेंदुआ मूवमेंट और मानव-वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं को रोकने के लिए वन विभाग ने व्यापक तैयारी शुरू कर दी। प्रदेशभर में 1 दिसंबर से बाघ, तेंदुआ और अन्य वन्यजीवों की गणना का अभियान प्रारंभ हो रहा है। इस बार खास बात यह है कि धारङ्कझाबुआ सीमा पर बाघ के नए आशियाने के संकेत मिले हैं, जिसे लेकर विभाग विशेष निगरानी रख रहा है। जिले में एक लाख हेक्टेयर से अधिक वन क्षेत्र में चार चरणों में सर्वे किया जाएगा, जिसमें 200 से अधिक वनकर्मी पैदल भ्रमण कर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष साक्ष्यों को एकत्रित करेंगे। मांडू में आयोजित कार्यशाला में करीब 60 कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया।

डीएफओ विजयानंतम टीआर ने बताया कि इस बार गणना पूरी तरह डिजिटल, पेपरलेस और वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित होगी। इस वर्ष पहली बार वनस्पति का सर्वे भी किया जाएगा। बाघों की पहचान यूनिक स्ट्राइप पैटर्न, जबकि तेंदुओं की पहचान रोजेट (धब्बों) के आधार पर होगी। कैमराट्रैप से मिली तस्वीरों का मिलान कर अंतिम संख्या तय की जाएगी। 18 से 24 दिसंबर तक ट्रांजेक्ट लाइन सर्वे में टीम जंगलों में शाकाहारी जीवों को प्रत्यक्ष देखकर डाटा एंट्री करेगी।

गणना के सभी साक्ष्य मल, पगमार्क, स्क्रैच, मूत्र चिह्न मोबाइल ऐप पर अपलोड होंगे, जिनका विश्लेषण वाइल्डलाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, देहरादून करेगा। वर्ष 2022 की गणना में जिले में एक भी बाघ दर्ज नहीं हुआ था, लेकिन इस बार संभावनाएं प्रबल बताई जा रही हैं। डीएफओ ने बताया कि अभियान के दौरान उन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, जहां तेंदुओं द्वारा पालतू पशुओं पर हमला अधिक सामने आते हैं।

संपादकीय

एसआईटी रिपोर्ट में निहित चेतावनी

मध्य प्रदेश में 'लव जिहाद' और धर्म परिवर्तन के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। पिछले साल के मुकाबले इस साल जून तक ही ऐसे मामलों की संख्या लगभग दोगुनी हो चुकी थी। साल 2021 से जून 2025 के बीच प्रदेश में धर्म परिवर्तन के कुल 305 मामले दर्ज हुए। इनमें से 236 लड़कियों को प्रेम जाल में फंसाकर धर्म परिवर्तन कराने के हैं। यानी 77 फीसदी मामलों में धर्म परिवर्तन लव जिहाद के जरिए कराया गया। स्टेट एसआईटी (विशेष जांच दल) की यह रिपोर्ट न सिर्फ चौंकाने वाली है बल्कि चेतावनी भी देती है कि इस पर जल्द काबू नहीं पाया गया तो हालात नियंत्रण से बाहर हो सकते हैं। दूसरे, ज्यादातर ऐसे मामलों में आरोपी कोर्ट में बरी हो रहे हैं, क्योंकि पीड़िताएं कोर्ट में मुकर गई है। ऐसे में यह समस्या सामाजिक, मानसिक और राजनीतिक तीनों है। शुरू में लव जिहाद को महज जुमलेबाजी कहकर खारिज किया गया। जमायत उलेमा ए इस्लाम के चीफ मौलाना असद मदनी तो अब भी यही कहकर सचाई पर परदा डालने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और कह रही है। ऐसा लगता है लव जिहाद के नाम पर हिंदू लड़कियों को फंसाने और उनको बर्बाद करने का मानो कोई अघोषित अभियान चलाया जा रहा है। एसआईटी की रिपोर्ट इसी बात का खुलासा करती है। गौरतलब है कि इस एसआईटी का गठन भोपाल में कॉलेज छात्राओं से सामने आए हाईप्रोफाइल लव जिहाद मामले के बाद मई में हुआ था। एसआईटी ने उन शहरों की भी मैपिंग की है जहां धर्म परिवर्तन के मामले ज्यादा हो रहे हैं। इसमें 88 केस के साथ इंदौर टॉप पर है और भोपाल दूसरे नंबर पर। हालांकि तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि साढ़े चार साल में ऐसे सिर्फ 7 मामलों में सजा हुई है, जबकि 51 में आरोपी बरी हो गए। इसकी मुख्य वजह पीड़िता ने खुद आरोपी से प्रेम संबंध की बात कबूली है। 162 मामले न्यायालय में अब भी विचाराधीन हैं। अधिकांश मामलों में मुस्लिम आरोपियों ने अपना नाम हिंदू रखकर और शुरू में खुद को हिंदू बताकर हिंदू लड़कियों को फंसाया। वीडियो बनाए। चैट किए। ब्लाकमेल किया। लड़की के पूरी तरह जाल में फंसने के बाद अपना असली रूप दिखाकर उन्हें ब्लैकमेल किया कि वो भी मुसलमान बनें। विरोध करने पर लड़कियों को बुरी तरह प्रताड़ित किया। विधर्मी युवाओं के चक्कर में फंसने के बाद ज्यादातर लड़कियों के पास लौटने का रास्ता नहीं बचा। परिवार ने भी उन्हें अकेला छोड़ दिया। ऐसे में मुसलमान बनने के अलावा उनके पास कोई चारा नहीं बचा। ऐसी लड़कियों का कॅरियर और सामाजिक जीवन बर्बाद हो गया। वैसे भी निकाह करने के लिए धर्म बदलना अनिवार्य है। वैसे किसी को भी प्रेम विवाह करने का हक है। लेकिन जोर जबरदस्ती और झूठी बातें कर किसी को फंसाना अपराध है। ऐसे कई मामलों में मां-बाप की शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार भी किया। लेकिन कोर्ट में पीड़िताओं से 'सहमति से सम्बंध' बनाने का हवाला देकर पुलिस को असहाय कर दिया। चूंकि ऐसा बयान देने वाली लड़कियां बालिग होती हैं, इसलिए कोर्ट उनके बयान पर ही विश्वास करती है। जबकि ऐसे बयान आमतौर पर भारी दबाव में दिए जाते हैं। प्रेम सम्बंधों की आड़ में धर्म परिवर्तन और हिंदू लड़कियों को बर्बाद करने का जो खेल चल रहा है, उसे रोकने के लिए पुलिस और कानून के साथ समाज को भी आगे आना होगा। लड़कियों की काउंसलिंग करनी होगी। वरना यह रोग नासूर का रूप ले लेगा। क्योंकि यह मामला अब केवल प्रेम सम्बंधों तक सीमित नहीं रह गया है। बल्कि एक व्यापक षड्यंत्र में तब्दील होता जा रहा है।

महिलाएं अब भी झेल रही हैं अदृश्य जहर का कहर

भोपाल गैस कांड की 41वीं बरसी

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्वतंत्र रूप से पत्रकारिता और सामाजिक विकास के क्षेत्र में सक्रिय हैं।

भारत भी आज उन देशों की सूची में शामिल है जो जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण के दोहरे संकट को सबसे गहराई से झेल रहे हैं। देश में वायु प्रदूषण से हर साल लगभग 17 लाख लोगों की समयपूर्व मौत होने का अनुमान है। शहरी क्षेत्रों में महीनों तक हवा 'बहुत खराब' या 'गंभीर' श्रेणी में बनी रहती है, और इसका सबसे बड़ा असर उन महिलाओं पर पड़ता है जो घर और काम दोनों के बीच अनेक भूमिकाएँ निभाती हैं। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं का बड़ा हिस्सा अब भी बायोमास ईंधन के काले धुएँ में घंटों गुजारता है, जिससे फेफड़ों, आँखों और हृदय की बीमारियां तेजी से बढ़ती हैं। इस दैनिक जोखिम में भी वही पैटर्न दिखता है जो भोपाल की रात में उभरा था कि संकट के समय महिलाएँ अपने परिवार को बचाने में स्वयं को सबसे अंत में रखती हैं, और सामना उन्हें ही सबसे अधिक करना पड़ता है।

21वीं सदी की दुनिया एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहाँ जलवायु परिवर्तन, विषैली हवा और पर्यावरणीय असुरक्षाएँ सिर्फ वैज्ञानिक चेतावनियाँ नहीं रहीं, बल्कि मानवीय अस्तित्व को छूती हुई कठोर वास्तविकताएँ बन गई हैं। वैश्विक आपदाओं चाहे वे बाढ़ हों, तूफ़ान हों, हीटवेव हों या औद्योगिक दुर्घटनाएँ इन सबमें महिलाओं की संवेदनशीलता सबसे अधिक सामने आती है। वैज्ञानिक पत्रिका 'नेचर क्लाइमेट चेंज' के एक अध्ययन में बताया गया कि दुनिया भर में जलवायु आपदाओं के दौरान महिलाओं की मृत्यु दर पुरुषों की तुलना में चौदह गुना अधिक दर्ज की गई है। यह सिर्फ आंकड़ा नहीं, बल्कि पर्यावरणीय विषमता और लैंगिक असमानता का एक तीखा प्रमाण है।

यही वैश्विक संदर्भ हर वर्ष दिसंबर की शुरुआत में हमें एक गहरी स्थानीय सच्चाई की याद दिलाता है भोपाल गैस त्रासदी। 2-3 दिसंबर 1984 की वह रात केवल भारत ही नहीं, पूरी दुनिया के औद्योगिक इतिहास का सबसे भयावह अध्याय थी। यूनियन कार्बाइड के कीटनाशक संयंत्र से रिसी मिथाइल आइसोसायनेट (MIC) गैस ने हजारों लोगों की जान ले ली, लाखों को स्थायी बीमारी की तरफ धकेल दिया, और यह साबित कर दिया कि जब विकास की दिशा में निगरानी, सुरक्षा और मानवीय सरोकार कमजोर पड़ जाते हैं, तो सबसे बड़ी मार आम लोगों पर और सबसे अधिक महिलाओं पर पड़ती है।

भारत भी आज उन देशों की सूची में शामिल है जो जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण के दोहरे संकट को सबसे गहराई से झेल रहे हैं। देश में वायु प्रदूषण से हर साल लगभग 17 लाख लोगों की समयपूर्व मौत होने का अनुमान है। शहरी क्षेत्रों में महीनों तक हवा 'बहुत खराब' या 'गंभीर' श्रेणी में बनी रहती है, और इसका सबसे बड़ा असर उन महिलाओं पर पड़ता है जो घर और काम दोनों के बीच अनेक भूमिकाएँ निभाती हैं। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं का बड़ा हिस्सा अब भी बायोमास ईंधन के काले धुएँ में घंटों गुजारता है, जिससे फेफड़ों, आँखों और हृदय की बीमारियां तेजी से बढ़ती हैं। इस दैनिक जोखिम में भी वही पैटर्न दिखता है जो भोपाल की रात में उभरा था कि संकट के समय महिलाएँ अपने परिवार को बचाने में स्वयं को सबसे अंत में रखती हैं, और सामना उन्हें ही सबसे अधिक करना पड़ता है।

भोपाल गैस त्रासदी के लगभग चार दशक बाद भी प्रभावित समुदाय, विशेषकर महिलाएँ, इसके दीर्घकालिक दुष्प्रभावों से जूझ रही हैं। आधिकारिक रिकॉर्ड में तत्काल मृतकों की संख्या 3,787 दर्ज की गई, जबकि स्वतंत्र आकलनों में यह संख्या दस से पंद्रह हजार के बीच मानी गई। सरकारी दस्तावेज़ों के अनुसार, पाँच लाख अठावन हजार से अधिक लोग इस दुर्घटना से किसी न किसी रूप में क्षतिग्रस्त हुए, इनमें 38,478 लोग आंशिक रूप से और लगभग 3,900 लोग स्थायी रूप से विकलांग हुए। लेकिन आँकड़ों के पीछे छुपी वास्तविकता इससे कहीं अधिक गहरी और कई आयामों वाली है।

महिलाओं ने इस त्रासदी का बोझ सबसे लंबी अवधि तक ढोया है। गैस के सीधे संपर्क में आने वाली महिलाओं में वर्षों तक गंभीर श्वसन रोग, फेफड़ों की क्षमता में कमी, आँखों की जलन, दृष्टि क्षय, त्वचा संबंधी संक्रमण और लगातार बनी रहने वाली शारीरिक थकान देखने को मिली। ICMR और अन्य शोध संस्थानों के अनुसार, गैस के रासायनिक प्रभावों के कारण महिलाओं में हार्मोनल असंतुलन, गर्भाशय संबंधी बीमारियाँ और अस्थायी या स्थायी प्रजनन जटिलताएँ आम हो गईं। गर्भवती महिलाओं पर इसका प्रभाव और भी घातक रहा उनमें गर्भपात की दर बढ़ी, समयपूर्व प्रसव के मामलों में वृद्धि हुई, मृत्यु के साथ जन्में शिशुओं और जन्मजात विकृतियों की घटनाएँ लगातार रिपोर्ट होती रहीं।

जो लड़कियाँ इस त्रासदी के समय बहुत छोटी थीं या बाद में प्रभावित क्षेत्रों में पैदा हुईं, उनमें भी अनेक दीर्घकालिक प्रभाव देखे गए अस्थमा, एनीमिया, प्रतिरक्षा प्रणाली की कमजोरी, बार-बार होने वाले संक्रमण, त्वचा रोग और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियाँ। कई वैज्ञानिक अध्ययनों ने यह भी बताया है कि गैस के संपर्क में आए गर्भों में मौजूद बच्चों में शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक क्षमताओं और शिक्षा-रोज़गार संबंधी संभावनाओं पर भी नकारात्मक असर पड़ा। यह एक ऐसी चोट थी, जिसकी प्रतिध्वनि अगली पीढ़ियों तक जाती रही।

इस त्रासदी की सबसे पीड़ादायक विरासत यह है कि प्रभावित बस्तियों में रह रहीं महिलाएँ आज भी दूषित भूमि और भूजल के संपर्क से मुक्त नहीं हो सकीं। फैक्ट्री परिसर और आसपास की मिट्टी में मौजूद रसायनों ने भूजल को प्रभावित किया, और सालों-साल से यह पानी उन बस्तियों में इस्तेमाल होता रहा जहाँ महिलाएँ ही सबसे पहले पानी भरने, खाना बनाने, साफ-सफाई और बच्चों की देखभाल में इसका इस्तेमाल करती हैं। परिणामस्वरूप उनमें त्वचा रोग, गैस्ट्रिक समस्याएँ, हड्डियों की कमजोरी और अनेक अन्य दीर्घकालिक बीमारियाँ ज्यादा पाई गईं। सामाजिक-आर्थिक बदहाली ने उनके मानसिक स्वास्थ्य पर और भी गहरा असर डाला चिंता, अवसाद, सामाजिक अलगाव और ट्रॉमा की स्थिति बहुत सामान्य रूप से दर्ज की गई।

भोपाल की पीड़ित महिलाएं अक्सर कहती हैं कि यह त्रासदी एक रात की नहीं थी; यह एक धीमा ज़हर है जो चालीस वर्षों से उनकी जिंदगी में बह रहा है। यह बयान उस सामूहिक दर्द और उपेक्षा का प्रतीक है, जिसे देश की औद्योगिक नीतियों, पर्यावरणीय निगरानी और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों ने अब तक पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं किया है।

भोपाल गैस कांड की बरसी यह अनिवार्य सवाल उठाती है क्या हमने इस त्रासदी से कुछ सीखा? यदि सचमुच सबक लिये गए होते, तो आज हमारे शहरों की हवा इतनी विषैली न होती, नदियों में औद्योगिक कचरा इतनी सहजता से न बहाया जाता, ग्रामीण महिलाओं को जल संकट के बीच घंटों भटकने की आवश्यकता न पड़ती और हमारे देश की जलवायु नीतियाँ अभी भी फाइलों और घोषणाओं से आगे बढ़ चुकी होतीं। उद्योगों की सुरक्षा प्रणाली, प्रदूषण नियंत्रण तंत्र, आपदा प्रबंधन ढांचा और पुनर्वास नीतियाँ आज भी आधी आबादी की जरूरतों और संवेदनशीलताओं को केन्द्र में रखने में असफल साबित हो रही हैं।

भोपाल ने दुनिया को यह कठोर पाठ पढ़ाया था कि संवेदनहीन विकास विनाशकारी हो सकता है। आज की जलवायु आपदाएं, प्रदूषित हवा, जल संकट और विषैले औद्योगिक विस्तार उसी पाठ का नया अध्याय लिख रहे हैं। इसलिए यह समय केवल स्मरण का नहीं, बल्कि चेतावनी का भी है कि जब तक पर्यावरणीय नीतियों, जलवायु योजनाओं और पुनर्वास प्रक्रियाओं में महिलाओं को केन्द्र में नहीं रखा जाएगा, तब तक न तो जनस्वास्थ्य सुरक्षित हो सकेगा, न औद्योगिक विकास टिकाऊ होगा और न ही भविष्य की पीढ़ियाँ इस धीमे ज़हर से मुक्त हो पाएंगी।

संविधान दिवस रैली के आसरे चंद्रशेखर आजाद की हुंकार

राजनीति

डॉ. ललित कुमार

लेखक इन्वर्टिस विश्वविद्यालय बरेली में पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष हैं।

पश्चिम उत्तरप्रदेश का मुजफ्फरनगर जिला गुड़ मंडी के नाम से मशहूर जाना जाता है। मुजफ्फरनगर क्षेत्र में गन्ने का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है। ऐसे में सर्दी का मौसम है और बिहार चुनाव की खुमारी भी सभी राजनेताओं के सर से उतर चुकी है। अब ज्यादातर राजनीतिक पार्टियां अपने अपने सूबे में दिलचस्पी दिखने में लग गयी हैं। पश्चिम उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में आजाद समाज पार्टी की संविधान दिवस के उपलक्ष में 'संविधान अधिकार बचाओं और भाईचारा बनाओं' एक महारैली के जरिए करीब 50 लाख लोगों को संविधान दिवस की शपथ दिलाने का प्रण लिया गया। यह रैली बहुजन और अल्पसंख्यक समाज के लोगों को एक मंच पर लाकर सबकी एकजुटता की मिशाल पेश करती हुई दिखती हैं। जिसमें राज्य की दूर-दराज के इलाकों से आए लाखों कार्यकर्ताओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज करके संगठन को मजबूत करने की ओर इशारा किया। यह रैली मुस्लिम समाज के लोगों में एक बड़े बदलाव का संकेत देती हुई दिखती है। साथ ही साथ बहुजन संगठन के पुराने कैडर में सेंधमारी को लेकर भी चिंता खड़ी करती हुई दिखती हैं, लेकिन आजाद समाज पार्टी फिर से पुराने कैडर को मजबूत के लिए बेताब है।

उत्तरप्रदेश के आगामी विधानसभा चुनाव होने में लगभग डेढ़ साल बाकी है, बिहार चुनाव से सबक लेकर सभी विपक्षी पार्टियां यूपी में अपनी सक्रियता बढ़ाने में लग चुकी हैं। बहुजन के मुद्दों की बात करने वाली ओर उनके हक में दिन-रात खड़ी होने वाली आजाद समाज पार्टी ने मुजफ्फरनगर जिले के जीआईसी इंटर कॉलेज मैदान को नीले झंडे और कार्यकर्ताओं से पाट दिया। जहां हर कार्यकर्ता के मन में बहुत से सपने और उम्मीदों की नई किरण दिखी। इसलिए आजाद समाज पार्टी को आगमी विधानसभा चुनाव में एक बेहतर विकल्प के तौर पर देखा जा सकता है। अब सवाल है कि बीएसपी और आजाद समाज पार्टी के वोटर अगर बंट जाते है, तो नुकसान इसमें सबसे ज्यादा दलित समाज का ही होगा। फायदे में अन्य पार्टियां ही रहेंगे। क्योंकि यूपी की राजनीति में अगले साल बहुत से बड़ा बदलाव देखे जा सकता है।

चंद्रशेखर आजाद ने मुजफ्फरनगर रैली के जरिए बहुजन एकता की ताकत का जो परिचय दिया उससे अन्य दलों में एक बेचैनी ज़रूर बढ़ी है। क्योंकि पश्चिमी उत्तरप्रदेश में करीब आठ जिले ऐसे हैं (मेरठ, मुजफ्फरनगर, शामली, सहारनपुर, बागपत, नोएडा, गाजियाबाद और बिजनौर) जिनमें लगभग 42 विधानसभा सीटें है। यानी ज्यादातर सीटों पर दलित-अल्पसंख्यक समुदाय का वोट बैंक काफी निर्णायक साबित होता हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए मुज़फ्फरनगर जिला आजाद समाज पार्टी को एक बड़ी ऑक्सीजन देने का काम कर सकता हैं। आजाद समाज पार्टी की मुज़फ्फरनगर रैली को ऐतिहासिक माना जा रहा हैं। भीम आर्मी एवं आजाद समाज पार्टी प्रमुख ने केंद्र और राज्य सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि संविधान खतरे में है। संविधान हमें बोलने और धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार देता है, लेकिन अगर कोई किसी के हक की आवाज उठाता है तो उसके घर पर बुलडोजर चला दिया जाता है। आजाद समाज पार्टी प्रमुख यही नहीं रुके उन्होंने इस ओर भी इशारा करते हुए कहा कि बहुजन समाज के देश में अच्छे दिन तब आएंगे जब सत्ता की चाबी यानी गुरु खिल्ली, बहुजन समाज के हाथों में होगी। साथ ही उन्होंने डबल इंजन सरकार पर सवाल खड़ा करते हुए कहा यह सरकार वंचित समाज की आवाज को दबाना चाहती है।

मुजफ्फरनगर की इस रैली में सहारनपुर, मेरठ और मुरादाबाद मंडल से लाखों की संख्या में जुटे सभी कार्यकर्ताओं को संविधान बचाने और भाईचारा बनाने की शपथ दिलाई गयी। आजाद समाज पार्टी ने संविधान विरोधी ताकतों को चेताया की भीम आर्मी और आजाद समाज पार्टी अपने इस समाज के लिए एक दीवार बनकर खड़ी रहेगी। चंद्रशेखर आजाद ने साहब कांशीराम के नारों को दोहराते हुए कहा कि

आरक्षण से लेंगे एसपी-डीएम और वोट से लेंगे सीएम-पीएम। यानी इस रैली का पूरा पुरजोर ज्यादातर आरक्षण विरोधी ताकतों के खिलाफ एक बड़ा जुटान माना जा रहा हैं। जिसकी अगुवाई करती आजाद समाज पार्टी बहुजन समाज को एक राजनीतिक चेतना एवं देश में होने वाले जातिवादी और संवैधानिक संस्थाओं पर होने वाले हमले के खिलाफ एकजुट खड़ी होती हुई दिख रही है।

महारैली का मीडिया कवरेज- आजाद समाज पार्टी की इस रैली का कवरेज को जब मैं देख रहा था, तो उसे करीब 30 से ज्यादा यू-ट्यूब चैनल लाइव कवर कर रहे थे। दलित-बहुजन रैली में तकनीकी खराब हुई के कारण रैली का लाइव कवरेज जिस तरीके से किया गया, वह बहुत ही चिंता का विषय है। आजाद समाज पार्टी की इस रैली को देखकर लगता है कि सरकार बहुजन राजनेताओं की आवाज को सही से जनता तक नहीं पहुंचाना जाती। लेख लिखते मैंने पाया कि इस रैली की कवरेज से मेनस्ट्रीम मीडिया का कोई भी चैनल लाइव नहीं दिख रहा था और न ही किसी चैनल पर इस रैली को लेकर कोई चर्चा होती हुई नही दिखी। मैंने पाया कि ज्यादातर वैकल्पिक मीडिया सुबह से इस रैली की हर पल का अपडेट दिखने में लगा हुए थे। जिसमें लगभग 30 से ज्यादा यूट्यूब चैनलों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करके इस रैली को जन-जन तक पहुंचाने का काम किया। यानी इससे साफ देखा जा सकता है कि बहुजन समाज की रैली को मेनस्ट्रीम मीडिया ने कितनी गंभीरता से लेता है।

मुख्यधारा मीडिया कैसे एडवोकेसी तरीकों से चीजों की कवरेज करती है। इस रैली में यह भी सामने आया है। कवर करने वाले ज्यादातर ऐसे यूट्यूब चैनल बहुजन वैचारिकी को आगे बढ़ने का काम कर रहे हैं। जिन्होंने रैली की कवरेज करके उसे सफल बनाने में एक अहम योगदान दिया हैं। जिनमें जंग-ए-समाचार टीवी, जनतंत्र खबर, अमरीश बालियान, देसी टीवी भारत, हिंदुस्तान 24 बेधड़क, अंबेडकर पीपल्स वॉइस, नेशनल दस्तक, ब्रेकिंग न्यूज़ वाला, आजाद दस्तक टीवी, बहुजन साथी, भीम आर्मी ऑफिशल, आदिवासी समाचार, आवाज इंडिया टीवी, भास्कर समाचार, देखो बहुजन दिशा, सच लोक, न्यू गंगा, द पिलर, तथागत लाइव और वरुण ओबराय व्लोग जैसे तमाम यू-ट्यूब चैनल इस कवरेज की दिखने में लगे रहे। जब इन सभी यूट्यूब चैनल के सब्सक्राइबर की संख्या रिसर्च की तो पता चला ज्यादातर यूट्यूब चैनल के सब्सक्राइबर की संख्या लाखों में है। यानी इन सब यू-ट्यूब चैनल के बदौलत ही रैली का कवरेज लाखों करोड़ों लोगों तक पहुंचा। ऑनलाइन के इस ज़माने में अब कोई भी दृश्य जनता की नज़रों से ओझल नहीं हो सकता। इसलिए वैकल्पिक मीडिया ने दिखा दिया कि जो काम मुख्यधारा का मीडिया नही कर सकता उससे कहीं ज्यादा काम वैकल्पिक मीडिया कर रहा है। अब ऐसे में देखना होगा कि मुज़फ्फरनगर की यह रैली आजाद समाज पार्टी के लिए कितना जनधार बढ़ाने में मदद करती है।

महिलाओं की पीड़ा चिन्ता का विषय

घरेलू हिंसा

श्याम कोलारे

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

महिला समाज की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है, क्योंकि उसके बिना किसी भी सभ्यता, संस्कृति या समाज की कल्पना संभव नहीं है। महिला केवल एक शरीर नहीं, बल्कि भावनाओं का अथाह सागर, त्याग की प्रतिमूर्ति और प्रेम की वह शक्ति है जो घर, परिवार और समाज को जीवन देती है। वह बेटी बनकर आशा, बहन बनकर विश्वास, पत्नी बनकर साथ और माँ बनकर सृष्टि का आधार होती है। लेकिन इस महान भूमिका के बावजूद दुखद सच्चाई यह है कि वही स्त्री, जो दुनिया को जीवन देती है, आज भी हिंसा, अपमान और चुप्पी के बोझ तले दबी हुई है। समाज समानता, नारी सम्मान और आधुनिक सोच की बातें तो बहुत करता है, लेकिन जब बात वास्तविकता की आती है, तो स्त्री की स्थिति आज भी उतनी ही पीड़ादायक और चिंताजनक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट इस क्रूर सच्चाई को उजागर करती है कि भारत में करीब 30 प्रतिशत महिलाएं अपने पति या साथी द्वारा हिंसा का शिकार हुई हैं। यह आंकड़ा केवल संख्या नहीं, बल्कि लाखों टूटे सपनों, अनसुनी चीखों और मौन पीड़ा का प्रतीक है। रिपोर्ट के अनुसार 15 से 49 वर्ष की हर पांचवीं महिला मानसिक, आर्थिक, शारीरिक या यौन हिंसा सह रही है। यह वही आयु है जब महिलाएं जीवन निर्माण, आत्मसम्मान, परिवार और भविष्य की नींव रखती हैं, परंतु यही समय उनके लिए सबसे अधिक असुरक्षा और पीड़ा लेकर आता है।

इसी रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया भर में लगभग 84 करोड़ महिलाओं ने अपने जीवन में कभी न कभी पार्टनर द्वारा यौन हिंसा झेली है और यह आंकड़ा साल 2000 के बाद से लगभग स्थिर है, यानी दुनिया आधुनिक हो रही है, पर सोच और मानसिकता आज भी पिछड़ी हुई है। अगर नॉन-पार्टनर की बात करें तो दुनियाभर में 15 से 49 वर्ष की उम्र की लगभग 8.4 प्रतिशत महिलाओं ने किसी अजनबी या परिचित के द्वारा यौन हिंसा का सामना किया है, वहीं भारत में यह आंकड़ा लगभग 4 प्रतिशत है। यह रिपोर्ट 168 देशों के 2000 से 2023 तक के डेटा पर आधारित है और इसे महिलाओं के खिलाफ हिंसा समाप्ति के अंतरराष्ट्रीय दिवस (25 नवंबर) से पहले जारी किया गया। रिपोर्ट यह भी बताती है कि महिलाओं के खिलाफ हिंसा रोकने में सुधार की गति बहुत धीमी है और 2030 तक इसे समाप्त करने का लक्ष्य लगभग असंभव प्रतीत होता है। सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि वर्ष 2022 में वैश्विक सहायता फंड में से केवल 0.2 प्रतिशत धन महिलाओं के खिलाफ हिंसा रोकने वाले कार्यक्रमों पर खर्च किया गया और यह राशि 2025 में और भी कम हो गई है। जबकि दूसरी तरफ युद्ध, मानवीय संकट, जलवायु परिवर्तन और सामाजिक अस्थिरता महिलाओं के लिए हिंसा का खतरा और बढ़ा रही हैं।

हिंसा की शुरुआत हमेशा घावों और चीखों से नहीं होती। यह पहले मनोवैज्ञानिक बंधनों से शुरू होती है—तानों से, शक से, नियंत्रण से, आवाज़ दबाने से, निर्णय छीनने से और फिर धीरे-धीरे यह अपमान, मारपीट, यौन शोषण और मानसिक हिंसा का रूप ले लेती है। और जब स्त्री विरोध करती है, तो समाज उसी से सवाल करता है। उसे समझाया जाता है—'पति है, अधिकार है', 'घर की बात घर में रहे', 'थोड़ा सहन करो, सब ठीक हो जाएगा।' इस तरह धीरे-धीरे उसकी आवाज़, उसका आत्मविश्वास और उसका अस्तित्व खोने लगता है। लेकिन अब समय बदलने का नहीं, बदलाव लाने का समय है। स्त्री का कर्तव्य सहना नहीं, बल्कि सम्मान के साथ जीना है। उसे अनुमति नहीं, अधिकार चाहिए। उसे दया नहीं, समानता चाहिए। उसे चुप्पी नहीं, अपनी आवाज़ चाहिए। अब आवश्यक है कि बेटियों को सिर्फ सजना-संवरना नहीं, बल्कि अपने अधिकारों के लिए बोलना, लड़ना और खुद का सम्मान करना सिखाया जाए। और बेटों को यह समझाना होगा कि स्त्री कोई वस्तु नहीं, बल्कि सम्मान, स्वतंत्रता और अधिकारों से पूर्ण मानव है। यह लेख केवल आंकड़ों का विश्लेषण नहीं, बल्कि उन सभी महिलाओं की आवाज़ है जो वर्षों से दर्द में भी जी रही हैं, जो टूटीं लेकिन झुकी नहीं, जिन्होंने दर्द सहा लेकिन उम्मीद नहीं छोड़ी। यह उन महिलाओं की पुकार है जो आज कह रही हैं—'अब और नहीं।' अगर आज समाज, व्यवस्था और सोच नहीं बदली, तो आने वाला समय और अधिक भयावह होगा। लेकिन यदि आज से जागरूकता, सम्मान और न्याय की दिशा में कदम बढ़ें, तो वह दिन दूर नहीं जब हर स्त्री भय में नहीं, बल्कि गरिमा, समानता और सुरक्षा के साथ जीवन जी सकेगी। क्योंकि जब स्त्री सुरक्षित होती है, तभी परिवार सुरक्षित होता है, जब परिवार सुरक्षित होता है, तब समाज मजबूत होता है, और जब समाज मजबूत होता है, तब एक सशक्त, संवेदनशील और समानता पर आधारित राष्ट्र जन्म लेता है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा अग्निबाण पब्लिकेशन, 121, देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

शांतिलाल जैन

लेखक व्यंग्यकार हैं।

ऑटो रिप्लाई में समाया झूठ

'मैं इमरजेंसी वर्क मीटिंग में हूँ। बाद में कॉल करता हूँ।'

'झूठ लिखना पाप है' - ऐसा तो न कहीं पढ़ा, न कहीं सुना। अलबत्ता 'झूठ बोलना पाप है' - बचपन से सुनते आ रहे हैं। सो बोल नहीं रहे, लिख रहे हैं, धड़ल्ले से लिख रहे हैं। लिख कर रख ले रहे हैं, उसी को बार बार फॉरवर्ड कर दे रहे हैं। लिखना एक बार, फॉरवर्ड अनेक बार। इस कला में प्रशिक्षण की जरूरत नहीं होती श्रीमान्, एक गिफ्ट सी है जो मोबाईल खरीदने के साथ गॉड से मिल जाया करती है। नेटफ्लिक्स पर आप वेब सिरीज़ देख रहे हैं और कॉल रिसीव हुआ। लिखिए कि - 'बॉस के साथ एक अर्जेंट मैटर पर डिस्कशन में हूँ। केबिन से बाहर आकर फोन करता हूँ'। फिर क्या तो आपका केबिन से बाहर निकलना और क्या ही आपका कॉल करना। यकीन मानिए लिखा हुआ झूठ पाप की केटेगरी में नहीं आता। आता तो लाखों व्हाट्सअप अंकल पाप की गठरी सिर पर लादे नरक में प्रवेश की कतार में खड़े होते। उनकी कहानी फिर कभी, फिलवक्त आज के विषय 'ऑटो रिप्लाई में समाया झूठ' पर ही रहते हैं।

वाईफ का मूड सुबह से ख़राब है। मूड अगर सुबह आठ बजे के आसपास ख़राब हुआ है तो नौ साढ़े नौ तक तो माईग्रेन का माइल्ड से सीवियर केटेगरी में कन्वर्जन पक्का है। शॉपिंग ही इलाज़ है। शाम तक क्रेडिट कार्ड की शरण में जाना ही जाना है। तनाव पसरा है घर में कि घंटी बज उठती है। एक दोस्त का कॉल है। उठाऊँगा तो कहेगा - घर पर मिलने आना चाहता हूँ। 'जी बहुत चाहता है सच बोलें, क्या करें हौसला नहीं होता'। कुछ देर की ऊहापोह के बाद हौसला जुटाकर लिखा - 'सॉरी डियर, मैं आपसे मिल नहीं पाउँगा! आउट ऑफ़ स्टेशन हूँ, परसों लौटने का है। लौटने पर मैं जवाब दूँगा। कुछ अर्जेंट हो तो मैसेज करना। बाय।' शहर में, दस मिनिट बाद ही, जो वो सामने पड़ जाता तो........। तो भी कुछ नहीं होता। आजकल झूठ बोलकर लोग शर्मिंदा नहीं होते। सारे ही बंदरों की पूँछ कटी हुई है इन दिनों। ऐसा कुछ हुआ भी नहीं, बस जवाब में उसने वसीम बरेलवी साहब का एक शेर लिख भेजा - 'वो झूठ बोल रहा था बड़े सलीके से, मैं ए'तिबार न करता तो क्या करता'।

अगर अब भी आपको लगता है झूठ लिखने से पाप लग सकता है तो आप ये जिम्मेदारी मोबाइल पर डालकर अपराध-बोध मुक्त हो सकते हैं। ऑटो रिप्लाई का सिस्टम अवेलेबल जो है। मैनेजर साहब ने अपने वाट्सअप अकाउंट में सेट कर रखा है। मैसेज मिला - 'पिताजी नहीं रहे। शवयात्रा 11 बजे निज निवास से निकलेगी।' रिप्लाईड इंस्टेंटली - 'थैंक-यू, आपका संदेश पाकर हमें बहुत खुशी हुई। हमारे प्रतिनिधि आपके पिताजी से शीघ्र संपर्क करेंगे। उनका लोकेशन शेयर कर सकेंगे तो हमें आसानी होगी। आपका दिन शुभ हो।' बैकुंठ धाम की लोकेशन खोजने में कितने ऋषियों, संतों ने हिमालय में अपने आप को गला दिया श्रीमान् मैनेजर साहब!! क्या शेयर करें आपको? ऑटो रिप्लाई तो दादू ने भी सेट किया हुआ है। उसे लगता है हर बार मैं उसे लेख छप जाने का अलर्ट ही भेजता हूँ। मगर उस दिन तो हमारे घर में चोरी हो गई थी। दादू को मैसेज किया। 'बधाई शांतिबाबू' - दादू रिप्लाईड।

वफ़ा के शहर में अब सब झूठ लिखते हैं। जो झूठ सब लिखते हों वो झूठ नहीं रह जाता, न्यू नार्मल हो जाता है। तो लिखिए, धड़ल्ले से लिखिए, झूठ लिखिए, फिलवक्त तो पाप नहीं ही पड़ेगा। पड़ने की संभावना हो तो भी ऑटो रिप्लाई करने वाला मोबाइल हैण्डसेट नरक में जाएगा, आप और हम तब भी बचे रहेंगे।

राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस पर विशेष

श्वेता गोयल

लेखक शिक्षक हैं।

प्रदूषण की कैद में कैद होती पृथ्वी

1984 की उस गैस त्रासदी के दौरान प्राण गंवाने वाले लोगों को याद करने और प्रदूषण नियंत्रण कृत्यों के महत्व से हर व्यक्ति को अवगत कराने के लिए 2 दिसबर का दिन राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस के रूप में चिह्नित किया गया। इस दिन का उद्देश्य प्रदूषण को रोकने में मदद करने वाले कानूनों के बारे में लोगों को जागरूक करना, औद्योगिक आपदाओं के प्रबंधन तथा नियंत्रण के प्रति जागरूकता फैलाना और औद्योगिक प्रक्रियाओं तथा मानवीय लापरवाही से उत्पन्न प्रदूषण को रोकना है। दरअसल आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम पर्यावरण का महत्व भूलते जा रहे हैं। इन दिनों देश के विभिन्न हिस्सों में पर्यावरण प्रदूषण को लेकर जो विकराल स्थिति बरकरार है, ऐसे में इस दिवस का महत्व कई गुना बढ़ जाता है।

प्रतिवर्ष 2 दिसम्बर को भोपाल गैस त्रासदी में जान गंवाने वाले लोगों की याद में भारत में 'राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस' मनाया जाता है। विभिन्न रिपोर्टों के मुताबिक उस गैस त्रासदी में जहरीली गैस के रिसाव के कारण पांच लाख से भी अधिक लोगों की मौत हो गई थी, हालांकि मध्य प्रदेश सरकार द्वारा मौतों की संख्या 3787 घोषित की गई थी। उस गैस त्रासदी को इतने वर्षों बाद भी पूरी दुनिया में इतिहास की सबसे बड़ी औद्योगिक प्रदूषण आपदा के रूप में जाना जाता है। 1984 की उस गैस त्रासदी के दौरान प्राण गंवाने वाले लोगों को याद करने और प्रदूषण नियंत्रण कृत्यों के महत्व से हर व्यक्ति को अवगत कराने के लिए 2 दिसबर का दिन राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस के रूप में चिह्नित किया गया। इस दिन का उद्देश्य प्रदूषण को रोकने में मदद करने वाले कानूनों के बारे में लोगों को जागरूक करना, औद्योगिक आपदाओं के प्रबंधन तथा नियंत्रण के प्रति जागरूकता फैलाना और औद्योगिक प्रक्रियाओं तथा मानवीय लापरवाही से उत्पन्न प्रदूषण को रोकना है। दरअसल आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम पर्यावरण का महत्व भूलते जा रहे हैं। इन दिनों देश के विभिन्न हिस्सों में पर्यावरण प्रदूषण को लेकर जो विकराल स्थिति बरकरार है, ऐसे में इस दिवस का महत्व कई गुना बढ़ जाता है। देश में प्रदूषण को गंभीरता से नियंत्रित करने और रोकने के लिए कानून में कई धाराएं समाहित हैं, जिनमें 1974 का जल (रोकथाम और प्रदूषण नियंत्रण) अधिनियम, 1977 का जल उपकर अधिनियम, 1981 का वायु अधिनियम, 1986 का पर्यावरण (संरक्षण) नियम, 1986 का पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1989 का खतरनाक रासायनिक निर्माण, भंडारण और आयात का नियम, 1989 का खतरनाक अपशिष्ट नियम, 1989 का खतरनाक माइक्रो जीव अनुवांशिक इंजीनियर जीवों या कोशिकाओं के निर्माण, भंडारण, आयात, निर्यात और भंडारण नियम, 1996 का रासायनिक दुर्घटनाओं (इमरजेंसी, योजना, तैयारी और प्रतिक्रिया) नियम, 1998 का जैव चिकित्सा अपशिष्ट नियम, 1999 का पुनर्नवीनीकरण प्लास्टिक निर्माण और उपयोग नियम, 2000 का ओजोन क्षयकारी पदार्थ नियम, 2000 का ध्वनि प्रदूषण नियम, 2000 का नगरपालिका ठोस अपशिष्ट नियम, 2001 बैट्री (मैनेजमेंट और संचालन) नियम, 2006 महाराष्ट्र जैव कचरा नियंत्रण अध्यादेश, 2006 का पर्यावरण प्रभाव आकलन अधिसूचना नियम इत्यादि प्रमुख हैं। इतने सारे अधिनियमों के बावजूद यह विड़म्बना ही है कि देश में प्रदूषण का स्तर निरन्तर बढ़ रहा है और वायु प्रदूषण के मामले में दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, आगरा, फरीदाबाद, वाराणसी, गया, पटना, जयपुर, पटियाला इत्यादि भारत के कई शहरों की गिनती अक्सर विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में होती रही है।

बढ़ते प्रदूषण ने जलवायु परिवर्तन के खतरे को भयावह रूप से तीव्र कर दिया है। हिंदी अकादमी दिल्ली के सौजन्य से प्रकाशित पुस्तक 'प्रदूषण मुक्त सांसें' के अनुसार, औद्योगिकीकरण, जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग, वनों की कटाई और शहरीकरण ने वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा बढ़ाकर पृथ्वी के तापमान को असंतुलित कर दिया है। 'लांसेट' जर्नल की रिपोर्ट इस संकट की गंभीरता को रेखांकित करती है। रिपोर्ट के अनुसार विश्व के 30 देशों में जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों के चलते कृषि उत्पादन में गिरावट का चरण शुरू हो चुका है, जो न केवल खाद्य सुरक्षा को प्रभावित कर रहा है बल्कि करोड़ों लोगों की आजीविका पर भी प्रत्यक्ष खतरा बन गया है। यही नहीं, यूरोप और पूर्वी भूमध्यसागरीय क्षेत्र गर्मी के बढ़ते जोखिम की जद में हैं, जहां 65 वर्ष से अधिक आयु वाले लगभग 42 प्रतिशत लोग भीषण तापमान से होने वाले दुष्प्रभावों का सामना कर रहे हैं। वर्ष 2000 से 2017 के दौरान दुनिया के 15 करोड़ से अधिक लोग भीषण गर्मी की चपेट में आए जबकि वर्ष 2017 में यह संख्या 2016 की तुलना में 1.8 करोड़ अधिक थी। उसके बाद से यह आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है। यह स्पष्ट करता है कि यदि प्रदूषण नियंत्रण और पर्यावरण संरक्षण के ठोस कदम नहीं उठाए गए तो आने वाले वर्षों में जलवायु परिवर्तन मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए गंभीर चुनौती बन सकता है।

प्रदूषण आज न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया के लिए नासूर बनता जा रहा है, जिसकी वजह से बढ़ती बीमारियों के कारण स्वास्थ्य सेवाओं पर बोझ कई गुना बढ़ता जा रहा है। हवा में मौजूद प्रदूषण के कण न केवल दिल, दिमाग और फेफड़ों पर गंभीर असर डालते हैं बल्कि कैंसर जैसी असाध्य बीमारियों का भी कारण बन रहे हैं। प्रतिवर्ष करीब सात मिलियन लोग वायु प्रदूषण के कारण अपनी जान गंवाते हैं। दुनियाभर में प्रदूषण को लेकर इस समय स्थिति इतनी बदतर है कि प्रत्येक दस में से नौ लोगों को शुद्ध हवा नसीब नहीं हो पाती और यदि समय रहते इन परिस्थितियों पर नियंत्रण करने में सफलता नहीं मिली तो यह तय है कि हमारे आने वाली पीढ़ियां जहरीली हवा में ही सांस लेकर जीवन के दिन काटने को विवश होंगी। प्रदूषण से पैदा होती विकराल वैश्विक स्थिति के बारे में प्रदूषण नियंत्रण के लिए कार्यरत शिकागो के प्रो. माइकल ग्रीनस्टोन कहते हैं कि प्रदूषण किसी भी व्यक्ति के लिए ऐसी समस्या है, जिससे स्वयं को बचाने के लिए वह निजी स्तर पर कुछ विशेष नहीं कर सकता बल्कि यह एक सामूहिक प्रयास है।

प्रदूषण को लेकर विभिन्न रिपोर्टों के मुताबिक विश्व की करीब 75 फीसदी आबादी ऐसे क्षेत्रों में रहती है, जहां वायु प्रदूषण का स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों से ज्यादा है। प्रदूषण से कम होती औसत आयु और लगातार बढ़ती शारीरिक व्याधियों को लेकर अब लगभग हर वर्ष चिंताजनक रिपोर्टें आ रही हैं। अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो के शोधकर्ताओं द्वारा तैयार एयर क्वालिटी लाइफ इंडेक्स (एक्यूएलआई) में तो चौंका देने वाला यह तथ्य भी सामने आया कि भारत के अलावा चीन में भी औसत आयु में कमी आने के पीछे वायु प्रदूषण सबसे बड़ा कारण है, जिसकी इसमें करीब 73 फीसदी भागीदारी है। एक्यूएलआई में औसत आयु पर पड़ने वाले प्रभावों के आधार पर वायु प्रदूषण को दुनियाभर में मानव स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ा खतरा बताया गया है।

पर्यावरण विशेषज्ञों का मत है कि प्रदूषण से उम्र पर पड़ने वाला प्रभाव धूम्रपान और टीबी जैसी बीमारियों से भी ज्यादा है और यदि प्रदूषण को लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों का सख्ती से पालन किया जाए तो लोगों की उम्र में कई वर्ष की बढ़ोतरी हो सकती है। चिंतनीय स्थिति यह है कि प्रकृति ने पृथ्वी को जितना खूबसूरत बनाया है, प्रदूषण से पृथ्वी प्रदत्त वह खूबसूरती बर्बाद हो रही है। दरअसल दुनिया जितनी तीव्र गति से विकास के मार्ग पर अग्रसर है, उससे भी तेज रफ्तार से प्रदूषण का स्तर बढ़ाने में भी योगदान कर रही है। ऐसे में संजीदगी से प्रदूषण की रोकथाम के गंभीर प्रयास करने की दरकार है क्योंकि यदि प्रदूषण को नियंत्रित नहीं किया गया तो हमारे आने वाली पीढ़ियां बेहद विषैली हवा में सांस लेने को विवश होंगी और इस दुनिया में जन्म लेते ही बच्चे तरह-तरह की बीमारियों के शिकार होंगे। बढ़ते वायु प्रदूषण, गर्म होती धरती और बीमारियों के विस्फोट ने साफ संकेत दे दिए हैं कि पृथ्वी अब और बोझ सहन नहीं कर सकती। यदि अभी कठोर कदम नहीं उठाए गए तो आने वाली पीढ़ियों को हम एक ऐसी दुनिया सौंपेंगे, जहां सांस लेना भी संघर्ष होगा।

वक्रोक्ति

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

लेखक व्यंग्यकार हैं।

'पुरुषत्व' का पौधा और 'साम्राज्यवादी' वृक्ष

भाई साहब, दुनिया में अब क्या-क्या देखने को मिलेगा! अभी कल की ही बात है, हमारे पड़ोसी, लोटा-प्रसाद, अखबार में एक खबर देखकर ऐसे चौंके जैसे दूध में गिरी मक्खी देखकर कोई शाकाहारी चौंकता है। खबर क्या थी? खबर थी, तालिबान के जनसंपर्क विभाग की। जनसंपर्क! मतलब, 'जन' से संपर्क! यह शब्द ही इतना हास्यास्पद है कि आप हँसे बिना रह नहीं सकते। खैर, इस जनसंपर्क विभाग ने एक घोषणा की। घोषणा क्या, एक परम-पराक्रमी, पुरुषत्व-युक्त, संसार-हिला देने वाला कार्य किया है। उन्होंने हजार पेड़ उखाड़ दिए। क्यों? उनका तर्क यह था कि ये पेड़ 'अमेरिकी साम्राज्यवादियों' ने लगाए थे। और सिर्फ इतना ही नहीं, यह तो बहाना था, असली बात तो यह थी कि उनका यह 'गौरवशाली आंदोलन' ग्लोबलवार्मिंग जैसी 'साम्राज्यवादी' अवधारणाओं से लड़ रहा है। 'हमारा पुरुषत्व-युक्त आंदोलन इन विचारों को खारिज करता है,' उन्होंने फरमाया।

लोटा-प्रसाद ने माथे पर बल डालते हुए कहा, 'परसाई जी, यह कैसा पुरुषत्व है जो पेड़ उखाड़ कर सिद्ध किया जा रहा है? पुरुषत्व तो वह होता है जो मुश्किल समय में खड़ा रहे, और पेड़ तो ऑक्सीजन देते हैं! इन्हें उखाड़ने में कौन सी बहादुरी है?' मैंने उन्हें समझाया, 'देखिए लोटा-प्रसाद, बात सीधी नहीं है, यह 'नया पुरुषार्थ' है। नया पुरुषार्थ मतलब, जो दुनिया मानती है, उसे गलत मानो। दुनिया कहती है पेड़ लगाओ, तुम उखाड़ो। दुनिया कहती है ग्लोबल वार्मिंग सच है, तुम कहो, 'हमारा पुरुषत्व इसे नहीं मानता।' यह सिर्फ ग्लोबल वार्मिंग का विरोध नहीं है, यह तर्क का विरोध है, विज्ञान का विरोध है, और अंततः सांस लेने का विरोध है। यह घोषणा करके उन्होंने सिर्फ पेड़ नहीं उखाड़े, उन्होंने एक साथ तीन-चार अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, कुछ लाख पर्यावरणविदों और करोड़ों-करोड़ों वर्षों के भूवैज्ञानिक इतिहास को एक झटके में उखाड़ फेंका है। अब आप बताइए, इतनी बड़ी 'शक्ति' क्या किसी पहलवान में होगी?' लोटा-प्रसाद सिर खुजलाते रहे।

आगे तालिबान जनसंपर्क विभाग ने फरमाया कि 'हमारे ग्रह के इतिहास में तापमान कई बार ऊपर-नीचे होता रहा है।' और यह कहकर उन्होंने अपना 'गौरवशाली' सीना फुलाया होगा। बात तो सही है, तापमान तो ऊपर-नीचे होता रहता है। लेकिन भाई, जब तापमान ऊपर-नीचे होता है, तो क्या उसे रोकने के लिए पेड़ उखाड़े जाते हैं? जैसे, अगर बुखार आ जाए तो क्या आप थर्मामीटर तोड़ देते हैं? या आग लग जाए तो क्या आप पानी का घड़ा फेंक देते हैं? यह तर्क नहीं है, यह 'अ-तर्क' है। यह 'सत्य पर शक्ति-प्रदर्शन' है।

परसाई जी ने कहाँ है कि जब सत्ता मूर्ख हो जाती है, तो वह सबसे पहले ज्ञान और विज्ञान को दुश्मन मानती है। तालिबान के लिए यह ग्लोबल वार्मिंग भी 'साम्राज्यवादी षड्यंत्र' है। क्यों? क्योंकि इसे 'गोरे लोग' मानते हैं! अगर 'गोरे लोग' कहते हैं 2+2=4, तो इनका 'पुरुषत्व' फौरन कहेगा, 'नहीं! यह 'चार' तो पश्चिमी संस्कृति का प्रतीक है, हमारा सच्चा इस्लामी योग तो शून्य होना चाहिए!' तापमान का ऊपर-नीचे होना प्रकृति का नियम है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि मनुष्य अपनी गतिविधियों से उसे खतरनाक स्तर तक बढ़ा दे। यह बात विज्ञान कहता है, लेकिन विज्ञान तो 'कोमल' है, 'स्त्री-सुलभ' है। और तालिबान का आंदोलन? वह तो 'मर्दाना' है। मर्दानगी क्या है? जो सबके विरुद्ध हो! 'तापमान बढ़ रहा है, तो बढ़ने दो! हमारे पुरुषत्व पर क्या असर पड़ेगा? हम तो आग में भी खड़े हो जाएँगे!' यह है वह 'मर्दानी' विचारधारा, जो अंततः अपने ही लोगों को बिना ऑक्सीजन के छोड़ देगी। क्या खूब 'जन-संपर्क' है, जो जनता की जान का दुश्मन बन जाए!

असली बात तो यह है कि उन्होंने उन पेड़ों को इसलिए उखाड़ा क्योंकि उन्हें अमेरिकियों ने लगाया था। 'परोपकार' एक ऐसी चीज है, जो अगर दुश्मन कर दे, तो वह 'पाप' बन जाता है। अब अमेरिकियों ने अगर अफगानिस्तान में पेड़ लगाए थे, तो बेशक उनका कोई न कोई स्वार्थ रहा होगा। शायद अपनी छावनी के पास हरी-भरी घास देखना चाहते होंगे, या शायद सिर्फ दिखाने के लिए लगाए होंगे। लेकिन भाई, पेड़ तो पेड़ है! हवा तो वह शुद्ध ही करेगा, चाहे उसे राम लगाए या रहीम, चाहे अमेरिकी लगाए या तालिबानी।

लेकिन नहीं! तालिबान के लिए यह 'प्रतीक' की लड़ाई है। पेड़ सिर्फ लकड़ी नहीं हैं, वे 'अमेरिकी प्रभाव' के प्रतीक हैं। जैसे कोई व्यक्ति अपने घर से दुश्मन के दिए हुए तोहफे को निकाल फेंकता है, भले ही वह तोहफा कितना भी कीमती क्यों न हो, उसी तरह तालिबान ने पेड़ उखाड़ दिए। यह दिखाता है कि उनके दिमाग में घृणा कितनी गहरी बैठी है। यह घृणा इतनी गहरी है कि वे अपने ही देश की हवा, पानी, और मिट्टी को नुकसान पहुँचाने को तैयार हैं। यह 'राष्ट्रवाद' नहीं है, यह 'आत्म-विनाशवाद' है।

और अंत में, उन्होंने इस पूरे कारनामे पर #ClimateActionNow का हैशटैग भी लगा दिया। यानी, पेड़ उखाड़ना ही उनके लिए 'जलवायु कार्रवाई' है। यह तो ठीक वैसे ही है जैसे कोई हत्यारा लाश को ठिकाने लगाकर चिल्लाए, 'देखो, मैंने समाज की कितनी सेवा की!' यानी, गलत काम करो, और उसी पर 'पुण्य' का मुहर लगा दो। यही आजकल की राजनीति का सार है।

लोटा-प्रसाद ने पूरी बात सुनी, फिर गहरी साँस ली और बोले, 'परसाई जी, मुझे लगता है यह सिर्फ तालिबान की बात नहीं है। यह तो उस अंध-विरोध की कहानी है, जो दुनिया के हर कोने में फैल रहा है। जब कोई शासक वर्ग, केवल अपने विरोधियों को गलत साबित करने के लिए, विज्ञान, प्रकृति, और सामान्य ज्ञान को भी ठोकर मारने लगता है, तो यही होता है। वे पेड़ उखाड़ रहे हैं, हम यहाँ ज्ञान की जड़ें काट रहे हैं। परिणाम एक ही होगा- सांस का संकट। उनके देश में हवा की कमी होगी, हमारे देश में बुद्धि की।'

मैंने कहा, 'ठीक कहते हो लोटा-प्रसाद! दुनिया का सबसे बड़ा संकट अब ग्लोबल वार्मिंग नहीं, बल्कि 'ब्रेन वार्मिंग' है। यानी, दिमाग का गर्म हो जाना, जिसमें तर्क की ठंडी हवा घुस ही न पाए। पेड़ तो फिर भी लगाये जा सकते हैं, पर मूर्खता की जड़ें अगर एक बार जम गईं, तो उन्हें उखाड़ना बहुत मुश्किल है। तालिबान तो एक छोटा-सा उदाहरण है, असली खतरा तो उन नेताओं से है जो हर देश में बैठकर, ऐसे ही 'पुरुषत्व' के नाम पर, हमारी सामूहिक बुद्धि को उखाड़ रहे हैं।' और हम सब, जो यह देख रहे हैं, सिर्फ हँस सकते हैं, क्योंकि रोने से तो अब कुछ होने वाला नहीं।

विचार

शुजा गांधी

लेखक स्तंभकार हैं!

नेता से लीडर तक भारत को जिस बदलाव की सख्त जरूरत है

कई दशकों तक भारतीय राजनीति ने दिखावे को दृष्टि से ऊपर रखा। प्रचार को प्रदर्शन से ज्यादा महत्व दिया। जिन लोगों ने छवि संभाल ली, वे अक्सर उन लोगों से ऊपर आ गए जो असल काम संभाल सकते थे। परिणाम यह हुआ कि राजनीति में शोर, नाटकीयता और व्यक्तित्व आधारित प्रभुत्व सामान्य हो गया। चुनाव जीतना लक्ष्य बन गया और पीढ़ियां बनाना पीछे छूट गया। लेकिन भारत बदल रहा है। आज का युवा अधिक सूचित है, अधिक महत्वाकांक्षी है, और पुरानी राजनीति को आसानी से स्वीकार नहीं करता। उसे नारे नहीं, क्षमता चाहिए. तमाशा नहीं, समाधान चाहिए। यही बदलाव साफ दिखाता है कि देश को अब पुराने 'नेता' मानसिकता से आगे बढ़कर एक सच्चे 'लीडर' की मानसिकता की जरूरत है।

भारत आज एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। एक ऐसा देश जिसके भीतर युवा ऊर्जा भी है और सदियों पुरानी सभ्यता की गूंज भी। एक उभरती वैश्विक अर्थव्यवस्था भी है और घरेलू चुनौतियों की जटिलता भी। एक ऐसा लोकतंत्र जो जीवंत तो है, लेकिन पुरानी राजनीतिक आदतों से बोझिल भी। इसी द्वंद्व के बीच एक महत्वपूर्ण प्रश्न तेज़ी से उभरता है कि भारत को आगे बढ़ाने के लिए हमें और नेताओं की जरूरत है या सच्चे लीडरों की।

कई दशकों तक भारतीय राजनीति ने दिखावे को दृष्टि से ऊपर रखा। प्रचार को प्रदर्शन से ज्यादा महत्व दिया। जिन लोगों ने छवि संभाल ली, वे अक्सर उन लोगों से ऊपर आ गए जो असल काम संभाल सकते थे। परिणाम यह हुआ कि राजनीति में शोर, नाटकीयता और व्यक्तित्व आधारित प्रभुत्व सामान्य हो गया। चुनाव जीतना लक्ष्य बन गया और पीढ़ियां बनाना पीछे छूट गया।

लेकिन भारत बदल रहा है। आज का युवा अधिक सूचित है, अधिक महत्वाकांक्षी है, और पुरानी राजनीति को आसानी से स्वीकार नहीं करता। उसे नारे नहीं, क्षमता चाहिए. तमाशा नहीं, समाधान चाहिए। यही बदलाव साफ दिखाता है कि देश को अब पुराने 'नेता' मानसिकता से आगे बढ़कर एक सच्चे 'लीडर' की मानसिकता की जरूरत है।

'नेता' की छवि एक पुराने दौर की देन है। वह उस समय में बनी जब जानकारी का प्रवाह एकतरफा था। नागरिकों के पास सवाल पूछने की शक्ति सीमित थी। राजनीति का ढांचा कृपा, कृपापात्रता और व्यक्तिगत प्रभाव पर चलता था। नेता हर जगह दिखता था, ऊंची आवाज में बोलता था और ताकत का प्रदर्शन करता था, भले ही वह ताकत सतही ही क्यों न हो। यह राजनीति दूरी पर फलती थी, संवाद पर नहीं। आदेश पर चलती थी, सहयोग पर नहीं।

आज यह समाज वैसा नहीं रहा। तकनीक ने जागरूकता को लोकतांत्रिक बना दिया है। हर नागरिक सवाल पूछ सकता है, आलोचना कर सकता है और जवाब मांग सकता है। राजनीतिक पितृत्व अब स्वीकार्य नहीं रहा। पुराने ढांचे की सत्ता एक ऐसे समाज के सामने कमजोर पड़ जाती है जो पहले से कहीं अधिक सशक्त हो चुका है। साफ शब्दों में कहें तो भारत अब पुराने नेता मॉडल को पीछे छोड़ चुका है।

लीडर कुछ और होता है। लीडरशिप आवाज की ऊंचाई नहीं, सोच की गहराई है। यह पद से नहीं, व्यवहार से बनती है। यह रोज़ की आदतों, जिम्मेदारियों और अनुशासन का नाम है। एक लीडर सक्रिय रूप से सुनता है, पारदर्शी संवाद करता है और फैसले ऊचार्जित भावनाओं से नहीं, ठोस समझ से लेता है। वह संस्थाओं को कमजोर नहीं करता, मजबूत बनाता है। असहमति से डरता नहीं, उसे लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा मानता है. भारत जैसे विविध देश में सुनने की क्षमता बोलने की क्षमता से अधिक मूल्यवान हो सकती है।

सच्चे लीडरों में समान गुण होते हैं। सहानुभूति, जवाबदेही, अनुकूलनशीलता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता। ये गुण कमजोरी नहीं, शक्ति के चिन्ह हैं।

गलती स्वीकार करने का साहस, आलोचना से सीखने की स्थिरता और खुद को सर्वज्ञ न मानने की विनम्रता किसी भी लीडर की वास्तविक पहचान है। नेता आदेश दिलवा सकता है, लीडर भरोसा जीतता है। और भरोसा ही स्थायी नेतृत्व की नींव है।

भारत के सामने आज जो चुनौतियां हैं, वे जटिल हैं। जलवायु परिवर्तन से बेरोजगारी तक, पब्लिक हेल्थ से डिजिटल गवर्नेंस तक, आज के मुद्दे सतही राजनीति से हल नहीं हो सकते। वे रणनीतिक सोच, तथ्य आधारित निर्णय और विशेषज्ञों के साथ गंभीर संवाद की मांग करते हैं। यह समय उन लीडरों का है जो जटिलता को समझ सकें, न कि उसे तालियों के लिए आसान बनाकर पेश करें। भारत का युवा भी अब असलियत चाहता है। उसे स्पष्टता चाहिए, उद्देश्य चाहिए और न्याय की भावना चाहिए। वह ऐसे लीडरों को चाहता है जो प्रगति को प्रेरित करें, न कि ध्रुवीकरण को गहरा करें। जो उसकी आकांक्षाओं को समझें, न कि उसके डर को भुनाएं।

यह बदलाव केवल राजनीतिक नहीं है। यह सांस्कृतिक परिवर्तन है। इसे राजनीतिक दलों, सरकारों और संस्थाओं में नई नेतृत्व संस्कृति की जरूरत है। कल्पना कीजिए एक ऐसे राजनीतिक माहौल की जहां लीडर अपनी वार्षिक रिपोर्ट सार्वजनिक करें। फैसलों को साफ शब्दों में समझाएं। नागरिकों को शामिल करें। लंबे समय के राष्ट्र-निर्माण को अल्पकालिक सुर्खियों से ऊपर रखें। जहां असहमति को लोकतंत्र की ऊर्जा माना जाए।

यह परिवर्तन संभव है। कई जगहों पर इसकी शुरुआत हो चुकी है। लेकिन इसे राष्ट्रीय संस्कृति बनाने की जिम्मेदारी नागरिकों पर है। भारत को वही नेतृत्व मिलेगा जिसे वह पुरस्कृत करेगा। अगर जनता शोर को महत्व देगी तो उसे शोर करने वाले नेता मिलेंगे। अगर वह सार्थकता को महत्व देगी तो उसे सच्चे लीडर मिलेंगे।

युवाओं, नागरिक समाज, मीडिया और आम मतदाताओं की भूमिका यहां अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें अपेक्षाएं बढ़ानी होंगी। कठिन सवाल पूछने होंगे। और नाटकीयता से प्रभावित होने से बचना होगा। नेतृत्व में बदलाव संसद से नहीं आएगा, यह जनता की चेतना से शुरू होगा। जिस दिन मतदाता यह फर्क समझ लेंगे कि कौन व्यक्ति सत्ता चाहता है और कौन प्रगति, उसी दिन भारतीय राजनीति की गुणवत्ता बदलनी शुरू हो जाएगी।

भारत का भविष्य सबसे तेज आवाजों से नहीं, सबसे मजबूत मूल्यों से तय होगा। ईमानदारी, सहानुभूति, क्षमता, दृष्टि और जवाबदेही को सार्वजनिक जीवन का आधार बनाना होगा. देश को ऐसे नेतृत्व की जरूरत है जो विश्वास जगाए, न कि भय पैदा करे। जो जोड़ने का काम करे, न कि तोड़ने का। जो निर्माण करे, न कि विनाश।

नेता से लीडर तक का सफर मात्र महत्वपूर्ण नहीं है। यह अपरिहार्य है। सवाल सिर्फ इतना है कि भारत इस परिवर्तन को कब अपनाता है। अभी या तब, जब देर हो चुकी होगी।

यह निर्णय तय करेगा कि हम अगली पीढ़ी के लिए कैसा भारत छोड़कर जाते हैं।

चिकित्सा क्षेत्र केवल एक पेशा नहीं, बल्कि मानवता की सेवा का सर्वोच्च मार्ग है : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

एमजीयू हॉस्पिटल में आयोजित व्हाइट कोट सेरेमनी कार्यक्रम में हुए शामिल, नवीन एमबीबीएस बैच के विद्यार्थियों को दीं शुभकामनाएं

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल मानसरोवर मेडिकल कॉलेज और एमजीयू हॉस्पिटल, बिलकिसगंज में आयोजित व्हाइट कोट सेरेमनी कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने चिकित्सा सेवा में प्रवेश करने वाले नवीन एमबीबीएस बैच के सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की और उन्हें शुभकामनाएं दीं। इस साथ ही उन्हें उत्कृष्ट चिकित्सकीय सेवा भावना के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि चिकित्सा क्षेत्र केवल एक पेशा नहीं, बल्कि मानवता की सेवा का सर्वोच्च मार्ग है। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि आने वाला समय आप सभी की निष्ठा, संवेदनशीलता और सेवा-भावना पर निर्भर करेगा। आप अपने ज्ञान, कौशल और मानवीय मूल्यों के साथ समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता रखते हैं। इसलिए चिकित्सकीय दायित्वों का निर्वहन करते हुए हमेशा मरीजों के प्रति करुणा, समर्पण और ईमानदारी बनाए रखें। इस अवसर पर कार्यक्रम में आरोग्य भारती के संगठन सचिव डॉ. अशोक वार्ष्णेय, डीएमई डॉ. अरुणा कुमार और मानसरोवर मेडिकल कॉलेज के संचालक श्री गौरव तिवारी उपस्थित थे।

जल संचय-जन भागीदारी अवॉर्ड से बैतूल जिला सम्मानित, केंद्र सरकार से मिली 25 लाख रुपए की पुरस्कार राशि

13 हजार 499 जल संरचनाएं की जीवित, सीईओ बोले–ग्राउंड लेवल पर काम करने से आए अच्छे परिणाम

एस. द्विवेदी, बैतूल। बारिश में व्यर्थ बहने वाले जल का संचयन करने और लोगों को प्रेरित करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार के जल संसाधन और नदी विकास विभाग द्वारा जल संचय-जन भागीदारी अभियान की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हस्ते सितम्बर 2024 में की थी। इसके अंतर्गत पूरे देश में जल संचय, जन भागीदारी अभियान चलाया गया। देश के विभिन्न राज्यों की तरह मध्यप्रदेश के बैतूल जिले में कलेक्टर व जिला पंचायत सीईओ के मार्गदर्शन में पूर्व में विभिन्न योजनाओं में बनी जल संरचनाओं को जीवित करने का काम जीरो बजट पर अर्थात शासन के द्वारा मनरेगा में जो कार्य पहले से ही किए जा रहे थे, उसके बजट से ही इस अभियान को चलाया गया। जिला पंचायत बैतूल के परियोजना अधिकारी मनरेगा संजय यादव ने हरिभूमि संवाददाता से चर्चा करते हुए बताया कि इस अभियान में अलग से कोई खर्चा नहीं किया गया, बल्कि सरकार के द्वारा मनरेगा में जो काम किए जा रहे थे, उनकी राशि से ही इस अभियान के कार्यों को पूर्ण किया गया। इस अभियान के अंतर्गत बैतूल जिले के कुल 1464 गांवों के 15,671 कार्यों पर फोकस किया गया, जिसमें 1 अप्रैल 2024 से 31 मई 2025 तक चले अभियान के दौरान जनभागीदारी से जिले में कुल 13 हजार 499 जल संरचनाएं जीवित की गई और अभी 2172 जल संरचनाओं पर काम चल रहा है। इस अभियान में जिले के मुलताई, पट्टन और घोड़ाडोंगरी ब्लॉक में श्रेष्ठ कार्य किया गया। इनमें खेत तालाब, स्टॉप डैम, कंटूर ट्रेंच, सोखपीट, चेक डैम, कपिलधारा कूप, तालाब आदि प्रमुख थे।

उत्कृष्ट कार्यो से राष्ट्रीय पटल पर दर्ज कराई उपस्थिति- अभियान के माध्यम से जीवित होने पर जल का संचयन बेहतर तरीके से होने लगा। इससे ना केवल भूमिगत जल स्तर में बढ़ोतरी हुई, बल्कि फसलों को भी अच्छा खासा फायदा मिला। इस प्रकार जल संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए बैतूल जिले ने राष्ट्रीय पटल पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई। जिसके चलते गत 18 नवंबर को न्यू दिल्ली के विज्ञान भवन में हुए छठवें नेशनल वॉटर अवार्ड समारोह में केंद्रीय मंत्री जल शक्ति मंत्रालय सीआर पाटिल ने बैतूल के प्रभारी कलेक्टर व जिला पंचायत सीईओ अक्षत जैन को जल संचय-जन भागीदारी अभियान में राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया। इस दौरान देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मूर्म भी मौजूद थी। इस अवार्ड के साथ बैतूल जिले को 25 लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की गई।

वेस्ट जोन में तीसरे एवं थर्ड केटेगरी में भी तीसरे स्थान पर रहा बैतूल

जनसहभागिता से जल संरक्षण के कार्यो को सफलतापूर्वक करने पर मप्र के बैतूल जिले को केंद्र सरकार के जल संसाधन और नदी विकास विभाग द्वारा जल शक्ति अभियान अंतर्गत नवाचार जल संचय- जन भागीदारी के अंतर्गत वेस्ट जोन में तीसरा स्थान हासिल हुआ है। इस अवार्ड के लिए देश भर के जिलों को कुल चार जोन में बांटा गया था। जिसमें वेस्ट जोन में बैतूल जिले को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। इसके अलावा इस अवार्ड समारोह में कैटेगरी वाइज भी देश के विभिन्न जिलों को पुरस्कृत किया गया था, जिसमें थर्ड केटेगरी में बैतूल जिले को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। थर्ड कैटेगरी में आने वाले जिलों को 25-25 लाख रुपये की राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई। मध्यप्रदेश का खंडवा जिला प्रथम, गुना जिला दूसरे स्थान पर तथा बैतूल जिला तीसरे स्थान पर रहा।

सीईओ बोले - व्यापक रणनीति और जन सहयोग से मिला सम्मान

बैतूल जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन ने हरिभूमि संवाददाता से चर्चा करते हुए बताया कि जिले में जल संरक्षण के लिए एक व्यापक रणनीति अपनाई गई। जिसमें स्वयंसेवी संगठनों, स्वयं सहायता समूहों, उद्योगों और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की गई। कम लागत और अधिक प्रभावी कृत्रिम व प्रभावी जल संरचनाएं स्थापित कर जल संचयन को बढ़ावा दिया गया। स्थानीय संगठनों खासकर जन अभियान परिषद और जनसहभागिता से परियोजनाओं को स्थायित्व मिला। साथ ही नागरिकों को जल संरक्षण के लिए जागरूक करने के लिए लगातार अभियान भी चलाए गए। परिणाम स्वरूप बैतूल जिले ने जल संरक्षण में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। उन्होंने बताया कि बैतूल जिले को वेस्ट जोन में तीसरा स्थान मिला, वेस्ट जोन में कुल सात राज्य थे और उसके अलावा प्रत्येक जोन में अलग-अलग कैटेगरी भी थी। बैतूल जिले की कैटेगरी थर्ड थी, उसमे भी इसे तीसरा स्थान मिला। इसके अंतर्गत जो विभिन्न कार्य किए गए है, उनमें खेत, तालाब कुआं रिचार्ज, सामुदायिक तालाब, स्टाप डेम, चेक डैम आदि है। अलग-अलग श्रेणी के जल संरक्षण के कार्य है। इन कार्यो से पानी स्टोर तो रहता ही है, साथ ही पानी का ग्राउंड लेवल भी बढ़ता है। कुआं रिचार्ज के लिए डगवेल रिचार्ज के लिए पीट बनाते हैं, जिससे ग्राउंड वाटर प्यूरीफाई भी होता और वह कुआं को रिचार्ज भी करता है। यह सभी वॉटर कंजप्शन का काम करते हैं। जनभागीदारी से कई सारे जल स्त्रोतों की साफ सफाई, मरम्मत आदि करवाई गई। जो कि खासकर छोटे स्तर पर ग्राम पंचायत लेवल पर की गई। इसमें जन अभियान परिषद के लोगों का एवं पंचायत स्तर के लोगों का तथा कई सामाजिक संगठनों का भी सराहनीय योगदान प्राप्त हुआ। इसमें जहां नए जल स्त्रोतों के लिए भी कार्य किया गया, तो वहीं पुराने जल स्त्रोतों के रखरखाव के लिए भी सराहनीय कार्य किया गया। इसमें क्षेत्र में मुख्य रूप से खेत तालाब और कुंआ रिचार्ज में बहुत ही अच्छा कार्य हुआ है।

कृति पुरस्कार के लिए 31 दिसंबर तक प्रविष्टि आमंत्रित

भोपाल। हिंदी लेखिका संघ मध्य प्रदेश भोपाल प्रतिवर्ष हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर कृति पुरस्कार प्रदान करता है। इसी क्रम में वर्ष 2024-25 के अखिल भारतीय कृति पुरस्कारों हेतु महिला साहित्यकारों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गई हैं। इच्छुक लेखिकाएं उपन्यास, कहानी, गीत ,नवगीत, कविता ग़ज़ल लघुकथा, बाल कविता, बाल कहानी, हास्य एवं व्यंग, नाटक, आलेख आध्यात्मिक साहित्य, निबंध, यात्रा वृतांत, समीक्षा, अनूदित साहित्य, अहिंदी भाषा भाषी लेखिकाओं की हिंदी में रचनाएं आदि विधाओं में अपनी पुस्तकें भेज सकती हैं। 200 रूपये प्रविष्टि शुल्क के साथ अपनी पुस्तक की दो प्रतियाँ 31 दिसंबर 2025 तक डॉ साधना गंगराड़े,प्रांताध्यक्ष ,हिन्दी लेखिका संघ, कृषक जगत परिसर, 14 प्रेस कॉम्प्लेक्स एमपी नगर जोन-1, पिन-462011 पर रजिस्टर्ड डाक या स्पीड पोस्ट से प्रेषित की जा सकती है। कृति पुरस्कार वर्ष 2026 में लेखिका संघ के वार्षिक उत्सव में प्रदान किए जाएंगे। यदि किसी कारणवश चयनित लेखिका कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो पाती हैं, तो पुरस्कार बाद में डाक द्वारा प्रेषित कर दिए जाएंगे। निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम एवं बाध्यकारी होगा। निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम होगा। पुस्तक प्रकाशन वर्ष 2024 - 25 में ही होनी चाहिए। आयु सीमा नहीं है।

समग्र लिंकिंग नहीं होने पर रुकेगा वेतन, कलेक्टर ने दिए सख्त निर्देश

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने सोमवार को आयोजित बैठक में निर्देशित किया कि सभी अधिकारी-कर्मचारी आईएफएमआईएस पोर्टल से समग्र लिंकिंग अनिवार्य रूप से पूर्ण कराएं, ताकि वेतन आहरण की प्रक्रिया सुचारू रूप से संचालित हो सके। उन्होंने स्पष्ट कहा कि आईएफएमआईएस से समग्र लिंकिंग नहीं होने की स्थिति में संबंधित जिला अधिकारी के दिसंबर माह का वेतन आहरित नहीं किया जाएगा।

डॉ. आनंद पाटनकर ने एमडी मेडिसिन परीक्षा में प्राप्त की सफलता

बैतूल/भौंरा। भौंरा क्षेत्र के प्रतिष्ठित चिकित्सक एवं समाजसेवी डॉ. पाटनकर परिवार के सदस्य डॉ. आनंद पाटनकर ने एमडी मेडिसिन परीक्षा में सफलता अर्जित कर भौंरा क्षेत्र का गौरव बढ़ाया है। वे भौंरा निवासी डॉ. महेश पाटनकर के बड़े पुत्र तथा डॉ. संजय पाटनकर के भतीजे हैं। डॉ. आनंद की इस उपलब्धि से न केवल उनके परिवार में, बल्कि संपूर्ण क्षेत्र में प्रसन्नता का माहौल है। क्षेत्रीय जनों, समाजसेवियों और मित्रों ने उन्हें विभिन्न माध्यमों से शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। लोगों का कहना है कि डॉ. आनंद की सफलता चिकित्सा सेवा क्षेत्र में पाटनकर परिवार की निरंतर निष्ठा और परिश्रम का परिणाम है। भौंरा क्षेत्र में पाटनकर परिवार लंबे समय से चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में सक्रिय रहा है। डॉ. महेश पाटनकर और डॉ. संजय पाटनकर ने वर्षों से ग्रामीण अंचलों में आमजन को सुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास किया है। अब परिवार की नई पीढ़ी में डॉ. आनंद की सफलता से लोगों में यह विश्वास और मजबूत हुआ है कि क्षेत्र को आगे भी बेहतर चिकित्सा सेवाओं का लाभ मिलता रहेगा।डॉ. आनंद पाटनकर की सफलता पर स्थानीय चिकित्सक समुदाय, समाजसेवी संगठनों एवं नागरिकों ने उन्हें बधाई दी है और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

गांजा बेचती महिला तस्कर गिरफ्तार, 375 ग्राम गांजा जब्त

बैतूल। गंज थाना क्षेत्र की इंदिरा कॉलोनी में रविवार रात पुलिस ने छापामार कार्रवाई करते हुए एक महिला को गांजा बेचते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। पुलिस ने महिला के घर से 375 ग्राम गांजा जब्त किया है, जिसकी अनुमानित कीमत 10 हजार रुपये बताई जा रही है। आरोपी महिला को न्यायालय में पेश किया गया। यह कार्रवाई प्रशिक्षु डीएसपी सेफा हाशमी के निर्देशन में की गई, जो करीब एक घंटे तक चली। पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि महिला अवैध रूप से नशीले पदार्थ बेच रही है। सूचना के बाद जब पुलिस बल महिला के घर पहुंचा, तो वह घर पर ही मिली। तलाशी के दौरान महिला के घर से छह अलग-अलग पुड़ियों में रखा गांजा मिला। पुलिस ने मौके पर ही महिला से इसकी तस्दीक करवाई। पुलिस बल ने मौके पर ही बरामद गांजे का वजन किया, जो 375 ग्राम निकला। जानकारी के अनुसार, यह वही महिला है जो जुलाई 2024 में भी गांजा बेचते हुए पकड़ी गई थी। उस समय उसका गांजा बेचते हुए एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। इसके बावजूद वह दोबारा इस अवैध गतिविधि में लिप्त पाई गई। पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि आरोपी महिला के पीछे कौन-सा नेटवर्क सक्रिय है। साथ ही इस बात की भी जांच की जा रही है कि गांजा बैतूल तक किस माध्यम से और कहां से पहुंच रहा है।

7 दिसंबर तक चलेगा फसल बीमा सप्ताह

बैतूल। जिले में रबी मौसम वर्ष 2025-26 के लिए फसलों का बीमा 1 दिसंबर से प्रारंभ हो गया है। इसके क्रियान्वयन के लिए जिले के समस्त विकास खण्डों में फसल बीमा सप्ताह 1 से 7 दिसंबर तक चलेगा, जिसका शुभारंभ उपसंचालक कृषि आनंद कुमार बडोनिया द्वारा 1 दिसंबर को केक काटकर कार्यालय वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी विकासखंड बैतूल में किया गया। सभी तहसीलों में एसबीआई जनरल इंश्योरेंस के प्रतिनिधियों एवं कृषि विस्तार अधिकारियों द्वारा ग्राम पंचायत स्तर पर जाकर फसल बीमा पाठशाला का आयोजन किया जा रहा है। कृषको को फसल बीमा करवाने एवं प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में फसल बीमा करवा कर जोखिम एवं फसल बीमा के हित लाभ के बारे में जागरूक किया जा रहा है। खरीफ में अधिकृत फसलों के लिए कृषक द्वारा दिए गए प्रीमियम राशि में गेहूं सिंचित 646, गेहूं असंचित 394, चना 504 एवं सरसों 482 अलसी 363 मसूर 413 रुपए प्रति हेक्टेयर है। फसल बीमा करवाने की अंतिम तिथि 31 दिसंबर निर्धारित की गई है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत बीमा करवाने के इच्छुक कृषक अपनी निकटतम बैंक शाखा सहकारी समिति अधिकृत चैनल जन सेवा केंद्र (सीएससी) एवं कृषक स्वयं भी राष्ट्रीय फसल बीमा पोर्टल पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर योजना से जुड़ सकते हैं। कृषको के फसल बीमा करवाने के लिए आवश्यक दस्तावेज के रूप में बैंक पासबुक, फसल बुवाई प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, बही, बटाईदार/ठेकेदार होने की स्थिति में भूमि के मालिक द्वारा शपथ पत्र दिया जाना अनिवार्य है। कार्यक्रम के दौरान पिछले सीजन के कुछ लाभांवित किसानों से चर्चा की। ग्राम पंचायत मधुडेढ़ा के कैलाश पाटिल ने बताया कि खरीफ सीजन का 31,000 का क्लेम आया है। किसान से अनुरोध है कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना से जुड़कर योजना का लाभ उठाएं। इस अवसर पर वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्रीमती अलका कूड़ापे, मधुकर तायडे एवं एसबीआई जनरल इंश्योरेंस के जिला प्रबंधक राकेश कुमार बैरवा, तहसील प्रतिनिधि एवं गणमान्य कृषक उपस्थित रहे।

108 कुंडीय महायज्ञ के आयोजन का लेआउट तैयार, रेलवे स्टेडियम में 19 दिसंबर को होगा भव्य आयोजन

स्टेडियम परिसर में शुरू हुई महायज्ञ की तैयारियां

बैतूल/आमला। आमला नगर के रेलवे स्टेडियम में 108 कुंडीय महायज्ञ के लिए तैयारियों ने रफ्तार पकड़ ली है। गायत्री परिवार द्वारा कार्यक्रम स्थल का विस्तृत लेआउट डाल दिया गया है, जिसमें यज्ञ स्थल, आगंतुकों के लिए बैठने की व्यवस्था, सेवा केंद्र तथा पार्किंग एरिया तक हर बिंदु का ध्यान रखा गया है। आयोजन समिति ने बताया कि इस बार महायज्ञ को भव्य पैमाने पर किया जा रहा है, जिसके लिए दर्जनों कार्यकर्ताएं दिनभर मंच, पंडाल और कुंडों की व्यवस्था में जुटे हुए हैं। परिसर में साफ-सफाई और समतलीकरण का काम भी लगातार चल रहा है, ताकि कार्यक्रम के दौरान किसी प्रकार की व्यवधान न उत्पन्न हो। गायत्री परिवार के सदस्यों द्वारा नगर के विभिन्न वार्डों, मोहल्लों और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में घर-घर जाकर महायज्ञ के लिए लोगों को आमंत्रण दिया जा रहा है। पदयात्रा के रूप में कार्यकर्ता टोली बनाकर नागरिकों से संपर्क कर रहे हैं, साथ ही उन्हें कार्यक्रम की महत्ता और विशेषताओं की जानकारी भी दे रहे हैं। बताया जा रहा है कि पिछले कई दिनों से चल रहे इस अभियान को लोगों का भारी सहयोग मिल रहा है। नागरिकों द्वारा न सिर्फ आमंत्रण स्वीकार किया जा रहा है, बल्कि वे स्वयं आयोजन में किसी न किसी रूप में योगदान देने की इच्छा भी जता रहे हैं। आयोजकों के अनुसार 19 दिसंबर को होने वाले इस महायज्ञ में हजारों श्रद्धालुओं के उपस्थित होने का अनुमान लगाया जा रहा है।

भव्य आध्यात्मिक माहौल की तैयारियां, सेवादल और समितियाँ सक्रिय - आयोजन में कोई कमी न रहे, इसके लिए गायत्री परिवार ने विभिन्न समितियों का गठन किया है, जो अलग-अलग जिम्मेदारियाँ संभाल रही हैं। स्थान सज्जा, यातायात, भोजन व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सफाई व्यवस्था जैसी कई टीमें लगातार फील्ड में सक्रिय हैं। महायज्ञ के दौरान पूरे रेलवे स्टेडियम परिसर को आध्यात्मिक वातावरण से महकाने की योजना बनाई गई है, जिसमें स्वागत द्वार, संदेशात्मक झांकियाँ और लाइटिंग की विशेष सजावट की जा रही है। सेवादल सदस्यों का कहना है कि यह कार्यक्रम समाज में सकारात्मक ऊर्जा और संस्कारों के जागरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। आयोजन समिति ने आमला तथा आसपास के क्षेत्रवासियों से इस दिव्य अनुष्ठान में पहुंचकर धर्मलाभ लेने की अपील की है।

अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती पर गूंजी श्रीमद् भागवत गीता की दिव्य ध्वनि

बैतूल। शिवाजी ओपन ऑडिटोरियम में अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती का भव्य एवं आध्यात्मिक आयोजन बड़ी श्रद्धा, सौहार्द और दिव्य भावनाओं के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम में नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, सुधाकर पवार, जिला शिक्षा अधिकारी अनिल सिंह कुशवाह, मुख्य नगरपालिका अधिकारी सतीश मतसेनिया, जिला परियोजना समन्वयक (जिला शिक्षा केन्द्र) भूपेंद्र वरकड़े, जनपद सीईओ शिवानी राय सहित अन्य अधिकारी एवं बड़ी संख्या में स्कूली विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर मंगलाचरण एवं श्रीमद्भगवद्गीता के पावन पाठ से हुआ। समारोह को संबोधित करते हुए सुधाकर पवार ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती का यह पावन दिवस हम सभी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से इस आयोजन के लिए विशेष प्रेरणा मिली है, जिसके लिए उन्होंने मुख्यमंत्री को हार्दिक धन्यवाद और साधुवाद दिया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि आज आवश्यकता है कि हम आधुनिक समय में हमारे पवित्र ग्रंथ और धार्मिक परंपराएँ संरक्षित करें और भावी पीढ़ी को इनके महत्व के प्रति जागरूक करें।

उन्होंने विशेष रूप से बच्चों को गीता का ज्ञान कराने पर बल देते हुए कहा कि गीता को हमारी शिक्षा व्यवस्था और बच्चों की पढ़ाई से जोडऩा समय की महती आवश्यकता है। गीता जयंती के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह दिवस उस पवित्र क्षण को समर्पित है जब भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत के कुरुक्षेत्र युद्ध में अर्जुन को अमृततुल्य गीता का ज्ञान दिया था। इस दिन को मोक्षदा एकादशी के रूप में भी जाना जाता है, जब मानव जाति को धर्म, कर्तव्य और सत्य के स्वरूप का दिव्य उपदेश मिला। उन्होंने बताया कि भगवद्गीता में 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं, जो जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शन देने वाले अमूल्य सरोवर हैं। गीता हमें कर्तव्यपालन, आत्मबल, समर्पण, सत्य और धर्म जैसे महत्वपूर्ण जीवन-मूल्यों की शिक्षा देती है।

इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों, संतजनों, विद्वानों और नागरिकों ने गीता के 15 वें अध्याय का सस्वर पाठ किया। गीता के पवित्र श्लोकों का उच्चारण ने वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। बच्चों द्वारा प्रस्तुत गीता श्लोकों ने सबका मन मोह लिया और यह संदेश दिया कि नई पीढ़ी भी धर्म, संस्कार और अध्यात्म की ओर अग्रसर है। साथ ही पूरे आयोजन स्थल में भक्तिभाव, शांति और सकारात्मक ऊर्जा की अनूठी अनुभूति देखी गई। गीता के उपदेश–धर्म, कर्तव्य, सत्य और आत्मबल–का महत्व सभी के मन में गहराई से उतरा। कार्यक्रम के समापन पर गीता जयंती की महाआरती संपन्न हुई, जिसके दौरान दीपों की ज्योति और मंत्रोच्चार से पूरा वातावरण दिव्य आलोक से भर उठा। उपस्थित श्रद्धालुओं ने विश्व शांति, मानव कल्याण और सद्भावना की कामना करते हुए आरती में सहभागिता की।

भगवान बुद्ध के दिखाए रास्ते पर चलकर ही शांति की स्थापना हो सकती है: प्रभारी मंत्री श्री पंवार

नृत्य नाटिका एवं गीत-संगीत से दिखाई भगवान बुद्ध के शांति, समृद्धि तथा विश्व के लिए बंधुता के संदेश की कहानी

रायसेन (निप्र)। रायसेन जिले के सांची स्थित बुद्ध जम्बूद्वीप पार्क में संस्कृति विभाग म.प्र. शासन द्वारा जिला प्रशासन एवं महाबोधि सोसायटी के सहयोग से आयोजित दो दिवसीय महाबोधि महोत्सव का मछुआ कल्याण एवं मत्स्य विकास विभाग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा जिले के प्रभारी मंत्री श्री नारायण सिंह पंवार, स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री यशवंत मीणा तथा महाबोधि सोसायटी श्रीलंका के प्रमुख श्री वानगल उपतिस्स नायक थेरो द्वारा दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर प्रभारी कलेक्टर श्री तन्मय वशिष्ठ शर्मा, पुलिस अधीक्षक श्री आशुतोष गुप्ता सहित अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर जिले के प्रभारी मंत्री श्री पंवार ने संबोधित करते हुए कहा कि भगवान बुद्ध के शांति के संदेश का आज भी महत्व है। दुनिया के अनेक देशों में युद्ध हो रहे हैं, ऐसी स्थिति में भगवान बुद्ध का शांति का संदेश सार्थक है।

बौद्ध विचार पर एकाग्र दो दिवसीय महाबोधि महोत्सव का आगाज

मानवता के लिए जियो और जीने दो का संदेश महत्वपूर्ण है। सम्राट अशोक के काल में यहां यह स्तूप स्थापित किए गए थे। सांची का महत्व पूरी दुनिया में है। प्रभारी मंत्री श्री पंवार ने कहा कि भगवान बुद्ध के दिखाए रास्ते पर चलकर शांति की स्थापना हो सकती है। उन्होंने कहा कि भगवान बुद्ध की दी हुई सीख को समझते हुए लागों ने बिना किसी डर के अपनी मर्जी से बौद्ध धर्म को अपनाया है।

स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्री पटेल ने इस अवसर पर कहा कि जो आध्यात्म में रूचि रखता है, वह किसी धर्म में बंधता नहीं है। देश-विदेश में बौद्ध धर्म का विस्तार हुआ है। सांची नगर में भगवान बुद्ध के शिष्यों की पवित्र अस्थियां स्तूप परिसर में हैं। ऐसे स्थल पर आने का अवसर पुण्य कार्य करने से मिलता है। कार्यक्रम में प्रभारी कलेक्टर श्री शर्मा तथा महाबोधी सोसायटी श्रीलंका के प्रमुख श्री वानगल उपतिस्स नायक थेरो ने भी संबोधित किया।

संस्कृति विभाग मप्र शासन द्वारा जिला प्रशासन एवं महाबोधि सोसायटी के सहयोग से आयोजित इस दो दिवसीय महाबोधी महोत्सव के पहले दिन श्रीलंका की ललिता गोमरा एवं दल द्वारा श्रीलंका के लोकनृत्य एवं गायन की प्रस्तुति दी गई तो भोपाल के पंचशील सांस्कृतिक मंच द्वारा नृत्य एवं गायन की प्रस्तुतियों के माध्यम से ज्ञान, सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर जीवन में शांति, समृद्धि तथा विश्व के लिए बंधुता का संदेश का प्रसार किया गया। भोपाल की संघरत्ना बनकर एवं साथी कलाकारों ने भगवान बुद्ध की जीवन कथा पर केंद्रित नृत्य नाटिका 'बुद्ध का त्याग' के माध्यम से भगवान बुद्ध के जीवन आदर्शों से देश-विदेश से आए श्रद्धालुओं को जोड़ा तो भोपाल के द साया बैंड के कलाकारों ने भक्ति संगीत के माध्यम से भगवान बुद्ध के विचारों को मंच पर जीवंत किया।

श्रीलंका के दल ने प्रसिद्ध गीत हिमी सरनामर लोक शिवंकर... से भगवान बुद्ध को नमन किया कर मिथ मल पिपिदेवा... गाकर श्रोताओं के मन को आत्मिक शांति का एहसास कराया। कार्यक्रम को विस्तार देते हुए मंगलम पूजा की प्रस्तुति दी, यह प्रार्थना श्रीलंका में त्योहार के समय भगवान से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए की जाती है। पांच मिनट की इस अद्भूत प्रस्तुति के पश्चात भगवान बुद्ध को समर्पित पारंपरिक सिंहली गीतों की प्रस्तुति दी। कलाकारों ने प्रस्तुति के क्रम को आगे बढ़ाते हुए वेस नृत्य लेकर मंच पर नमूदार हुए। किंवदंती के अनुसार इस नृत्य की उत्पत्ति कोहोम्बा कंकरिया(देवता) नामक एक नृत्य अनुष्ठान से हुई है, जिसे कोहोम्बा याक कंकरिया या कंकरिया भी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि मलया राता नामक स्थान के राजा और उसके भाइयों ने पहली कंकरिया नृत्य प्रस्तुति दी थी। इसकी उत्पत्ति भारत की भी मानी जाती है। कलाकारों ने यह नृत्य भगवान बुद्ध को समर्पित कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके पश्चात कलाकारों ने बुद्धं शरणं गच्छमि... गीत पर नृत्य प्रस्तुति दी। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए भोपाल के पंचशील सांस्कृतिक मंच के कलाकारों ने भगवान बुद्ध को समर्पित गीतों पर लोक शैली पर आधारित प्रस्तुति दी। 6 कलाकारों ने 10 मिनट की प्रस्तुति के माध्यम से दिखाया कि तथागत बुद्ध ने मनुष्य को पवित्र रहकर बुद्ध धम्म से जुड़ना सीखाया है।

पवित्रता का मतलब सिर्फ शरीर की सफाई भर नहीं है, बल्कि दूसरों के अंतर्मन से जुड़कर उनकी भावना को जानकर उन्हें सहयोग करना है ताकि आप अपने साथ दूसरों के कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त कर सकें, ऐसा सतत् प्रयास करते रहने को ही पवित्र धम्म कहा गया है। जीवन के इस पवित्र उद्देश्य को कलाकारों ने पवित्रता जीवन में बनाये रखना, यही धम्म है... गीत के माध्यम से बयां किया। नृत्य का निर्देशन कल्पना माणिक ने किया। पहले दिन की सभा में तीसरी प्रस्तुति भोपाल की संघरत्ना बनकर एवं साथी कलाकारों ने भगवान बुद्ध की जीवन कथा पर केंद्रित नृत्य नाटिका 'बुद्ध का त्याग' की दी। नाटिका में एक राजकुमार के सुख, वैभव और महल का जीवन छोड़कर मानवता के कल्याण का मार्ग अपनाने की कथा को पेश किया गया। नाटिका के पहले दृश्य में दिखाया गया कि कैसे राजकुमार सिद्धार्थ जब जीवन के दुःखों, वृद्धावस्था, बीमारी और मृत्यु से परिचत हुए तो उनके मन में वैराग्य का भाव जागा।

संक्षिप्त समाचार

एसआईआर फार्म में गलत जानकारी देने पर होगी कानूनी कार्रवाई

रायसेन (निप्र)। लोकतांत्रिक व्यवस्था को पारदर्शी और निष्पक्ष बनाए रखने के उद्देश्य से चुनाव आयोग ने एसआईआर फार्म में गलत जानकारी देने वालों के लिए कड़ी सजा का प्रावधान दोहराया है। लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 31 और 32 के तहत यदि कोई व्यक्ति एसआईआर फार्म में गलत जानकारी देता है, तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। इस प्रावधान के अनुसार, दोषी पाए जाने पर दो साल तक की कैद और जुर्माना दोनों हो सकते हैं। चुनाव आयोग ने स्पष्ट किया है कि एस आई आई प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए मतदाता द्वारा दी जाने वाली सभी सूचनाओं की सत्यता अनिवार्य है। गलत जानकारी देने को गंभीर अपराध की श्रेणी में रखते हुए आयोग ने चेतावनी दी कि ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई की जाएगी। मतदाता सूची की शुद्धता और विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए आयोग ने सभी मतदाताओं से अपील की है कि वे निर्धारित नियमों का पालन करें और किसी भी प्रकार की मिथ्या सूचना देने से बचें।

नगद इनाम की घोषणा

विदिशा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी ने थाना सिरोंज जिला विदिशा में दर्ज अपराध के फरार आरोपी की सूचना देने अथवा गिरफ्तारी कराने में मदद करने वाले के लिए दो हजार रूपए नगद इनाम देने की घोषणा की है। थाना सिरोंज जिला विदिशा में दर्ज अपराध प्रकरण क्रमांक 604/2024 का फरार आरोपी बलवीर पुत्र घूमन सिंह यादव निवासी सारगपुर थाना सिरोंज जिला विदिशा की सूचना देने अथवा गिरफ्तारी में मदद करने वालो के लिए दो हजार रूपए का नगद इनाम घोषित किया गया है। सूचना देने वाला व्यक्ति चाहे तो उसका नाम गोपनीय रखा जाएगा।

बागरा तवा इंटीग्रेटिव हेल्थ कैंप में 75 लोगों की जांच हुई

नर्मदापुरम (निप्र)। जिला चिकित्सालय सीएमएचओ डॉ नरसिंह गहलोत एवं नोडल अधिकारी प्रियंका दुबे के मार्गदर्शन एवं माखननगर बीएमओ डॉ कल्याणी यादव की देखरेख मेंप्रियांशी एजुकेशनल कल्चरल सोसायटी नर्मदापुरम द्वारा 'लक्ष्यगत हस्तक्षेप परियोजना' के अंतर्गत गत दिव बागरा तवा स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में इंटीग्रेटेड स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 75 व्यक्तियों की व्यापक स्वास्थ्य स्क्रीनिंग की गई। शिविर में किए गए प्रमुख परीक्षणों में 75एचआईवी, 75सिफ़िलिस, 75एचबीएसएजी और 75एचसीजी जांचें शामिल थीं। इन सभी परीक्षणों के परिणामों का तुरंत विश्लेषण कर आवश्यक परामर्श प्रदान किया गया। शिविर के सफल संचालन में मेडिकल ऑफिसर डॉ. अविनाश गौर, एपिडेमियोलॉजी विशेषज्ञ आरएसचौहान, बीईई भीम सिंह यादव, दीपिका भल्लवी, हेमंत यादव, काउंसलर प्रकाश चंद्र यादव, राजेंद्र द्विवेदी, प्रियांशी टीप्रोग्राम मैनेजर मीनाक्षी बाथरी, एसएसके प्रोग्राम मैनेजर रक्षा शुक्ला, काउंसलर आरती बेलवंशी, सोनू गौर, ममता मंडल और ज्योति ने भी सहयोग किया।

दुग्ध समृद्धि सम्पर्क अभियान के द्वितीय चरण हेतु कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण प्रारम्भ

हरदा (निप्र)। मध्य प्रदेश शासन पशुपालन एवं डेयरी विभाग के निर्देशानुसार दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियान का द्वितीय चरण जिले में दिसम्बर माह में चलाया जाना है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य पशुपालक के घर जाकर उन्हें पशुपालन को लाभ का व्यवसाय कैसे बनाया जाए, यह प्रभावी तरीके से समझाया जाना है। उप संचालक पशु चिकित्सा सेवाएं डॉ. अजय रामटेके ने बताया कि अभियान के द्वितीय चरण के संचालन के लिये जिला स्तर पर कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण प्रारम्भ किया गया है। यह प्रशिक्षण 2 दिसम्बर तक जारी रहेगा। इन्हीं कार्यकर्ताओं का द्वितीय प्रशिक्षण विकासखण्ड स्तर पर 3 से 5 दिसम्बर तक चलाया जाएगा। प्रशिक्षण में कार्यकर्ताओं को समझाया जाएगा कि उन्हें पशुपालकों से किस प्रकार चर्चा करनी है। पशुपालक यदि मोबाइल चलाता है तो उसके मोबाइल में विभाग द्वारा बनाई गई वीडियो हस्तांतरित करना है इस वीडियो को देखकर भी वह पशुपालन के बारे में बहुत कुछ सीख सकता है।

केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान गुलाबगंज में आयोजित स्वास्थ्य केम्प में पहुंचे

1201 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण हुआ, निशुल्क दबाव का वितरण और 102 आयुष्मान कार्ड बने

विदिशा (निप्र)। केंद्रीय किसान कल्याण तथा कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की उपस्थिति में आज गुलाबगंज में स्वास्थ्य शिविर संपन्न हुआ। स्वास्थ्य शिविर में 1201 मरीजो का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया है जिसमे 617 महिलाओ एवं 584 पुरूष शामिल हैं। इस शिविर में विभिन्न विषय विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गई हैं। साथ ही शिविर में 102 हितग्राहियों के आयुष्मान कार्ड बनाये गये हैं। शिविर में 18 मरीज केट्रेरेक्ट ऑपरेशन के पाये गये, जिनके ऑपरेशन मेडिकल कॉलेज में किये जाएंगें।

नाक, कान, गला विभाग में 4 ऐसे मरीज पाये गये जिनमें 02 वेल्स पॉलिसी के एवं 02 मरीजो को बैरा टेस्ट के लिये बुलाया गया है। स्त्री रोग विभाग में 09 मरीजो का ऑपरेशन किया जाएगा, जिसमें से 04 मेडिकल कॉलेज एवं 5 जिला चिकित्सालय विदिशा में ऑपरेशन किये जाएंगे। मेडिसिन विभाग में 40 मामले उच्च रक्तचाप वाले पाये गये और 12 मधुमेह के पाये गये जिन्हें ईको कार्डियोग्राफी के लिये मेडिकल कॉलेज बुलाया गया है। 01 मनोरोग मरीज को मेडिकल कॉलेंज बुलाया गया। 309 लोगो की खून की जांच की गई। 179 लोगो की टीबी की जांच की गई और 17 लोगो की जिला मेडिकल बोर्ड में जांच की गई जिनमें से 12 लोगो के दिव्यांग प्रमाण-पत्र बनाये गये। बाकी सभी मरीजो को चिकित्सको के द्वारा निशुल्क दवा वियशतरण और चिकित्सीय परामर्श दिया गया है। साथ ही 70 वर्ष से अधिक आयु वाले हितग्राहियो के भी आयुष्मान कार्ड बनाये गये हैं। स्वास्थ्य शिविर के दौरान कुरवाई विधायक श्री हरि सिंह सप्रे, सिरोंज विधायक श्री उमाकांत शर्मा, विदिशा विधायक श्री मुकेश टंडन, बासौदा विधायक श्री हरि सिंह रघुवंशी सहित अन्य जनप्रतिनिधि गण और कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता, पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी सहित विभागीय अधिकारी, कर्मचारी व आम नागरिक मौजूद रहे।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समाज एवं राष्ट्र के कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं छात्र : श्री टंडन

जादू नहीं विज्ञान है, जिला स्तरीय प्रतियोगिता सम्पन्न

विदिशा (निप्र)। पीएम श्री महारानी लक्ष्मीबाई कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में 'जादू नहीं विज्ञान है समझना आसान है' जिला स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विदिशा विधायक श्री मुकेश टंडन द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी एस.पी. सिंह जाटव तथा विद्यालय प्राचार्य डॉ. दीप्ति शुक्ला उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम की शुरुआत छात्राओं द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुई। विधायक श्री मुकेश टंडन ने विद्यार्थियों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि छात्र अपनी क्षमता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समाज एवं राष्ट्र के कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने विज्ञान नाटिका एवं वैज्ञानिक प्रयोगों के माध्यम से अंधविश्वास, तांत्रिक क्रियाएं एवं सामाजिक कुरीतियों के पीछे छिपे वैज्ञानिक कारणों को सरल ढंग से समझाया। जिला विज्ञान अधिकारी एवं प्राचार्य डॉ. दीप्ति शुक्ला ने बताया कि प्रतियोगिता विद्यालय, विकासखंड और अब जिला स्तर तक संचालित की गई है। विज्ञान नाटिका प्रतियोगिता में प्रथम - शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय, गंजबासौदा, द्वितीय - शासकीय हाई स्कूल, हैदरगढ़ (ग्यारसपुर), तृतीय - शासकीय हाई स्कूल, जोहद (नटेरन) रहे।

'जादू नहीं विज्ञान' प्रयोग प्रतियोगिता में

प्रथम - शासकीय सांदीपनि विद्यालय, कुरवाई, द्वितीय - पीएम श्री एमएलबी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, विदिशा, तृतीय - शासकीय सांदीपनि विद्यालय, सिरोंज रहे। निर्णायक मंडल में प्राचार्य इंदुमती खरे, विज्ञान शिक्षक कल्पना धाकड़ एवं शिल्प जैन शामिल रहीं। कार्यक्रम का संचालन आभा पाराशर ने किया तथा संपूर्ण आयोजन अनीता परसौदिया के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

इटारसी मंडी में 10,973 बोरे उपज की आवक:233 किसान पहुंचे 24 व्यापारियों ने की खरीदी, धान प्रमुख रही

नर्मदापुरम/इटारसी (निप्र)। इटारसी कृषि उपज मंडी में शनिवार को कुल 10,973 बोरे उपज की आवक दर्ज की गई। इस दौरान 233 किसान अपनी विभिन्न फसलें लेकर मंडी पहुंचे, जिनकी खरीदी 24 व्यापारियों द्वारा की गई। मंडी में धान की आवक लगातार बनी हुई है, जिसमें शनिवार को 9,405 बोरे धान उतारी गई। धान बेचने के लिए 182 किसान मंडी आए थे। किसानों ने बताया कि मौसम खुला रहने के कारण उन्हें अपनी उपज मंडी तक लाने में सुविधा हुई। हालांकि, मंडी प्रबंधन के अनुसार, इस वर्ष कुल आवक सामान्य दिनों की तुलना में अभी भी आधी है। इसके बावजूद, धान की आमद लगातार मजबूत बनी हुई है और आने वाले दिनों में इसके और बढ़ने की उम्मीद है। शनिवार को धान की विभिन्न किस्मों के भाव में सामान्य उतार-चढ़ाव देखा गया। पूसा धान 3025 रुपए से 3275 रुपए प्रति क्विंटल बिकी, जबकि सी-30 का भाव 3950 रुपए रहा। इसी तरह, 1718 किस्म 2950 रुपए से 3430 रुपए, मेनका 2250 रुपए से 2570 रुपए, 1886 किस्म 3150 रुपए से 3375 रुपए और 1885 किस्म 3105 रुपए से 3395 रुपए प्रति क्विंटल के भाव पर खरीदी गई। व्यापारियों ने जानकारी दी कि इस सीजन में धान की गुणवत्ता अच्छी मिल रही है, जिसके कारण दाम स्थिर बने हुए हैं। इससे किसानों को भी अपनी उपज का उचित मूल्य प्राप्त हो रहा है।

धान के अलावा, अन्य फसलों की आवक भी मंडी में दर्ज की गई, हालांकि इनकी मात्रा अपेक्षाकृत कम रही। मक्का की 1088 बोरे 1261 रुपए से 1599 रुपए प्रति क्विंटल बिकी। गेहूं की 360 बोरे 2311 रुपए से 2440 रुपए, मूंग की 11 बोरे 1900 रुपए से 4350 रुपए और सोयाबीन की 73 बोरे 3250 रुपए से 4350 रुपए प्रति क्विंटल के भाव पर खरीदी गईं। व्यापारियों के अनुसार, गेहूं और सोयाबीन की आवक अभी कम है, लेकिन दिसंबर के दूसरे सप्ताह से इसमें वृद्धि होने की संभावना है। मूंग की आवक बेहद कमजोर रही, हालांकि अच्छी गुणवत्ता वाली मूंग को ऊंचे दाम मिले। मंडी प्रबंधन ने किसानों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने के लिए व्यवस्थाओं में लगातार सुधार करने की बात कही है। साफ-सफाई, तौल-पर्ची जारी करने और भुगतान प्रक्रिया को सुचारु बनाए रखने के निर्देश दिए गए हैं।

किसानों के हितों की रक्षक है सरकार की भावांतर योजना

सीहोर (निप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में सरकार किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने के लिए लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में राज्य सरकार द्वारा भावांतर योजना शुरू की गई है, ताकि किसानों को उनकी सोयाबीन की फसल का भाव न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम मिलने पर भी नुकसान न उठाना पड़े। योजना में किसानों के पंजीयन के पश्चात अब 24 अक्टूबर से भावांतर योजना के तहत मंडियों में सोयाबीन की निरंतर की जा रही है।

भावांतर योजना के तहत विक्रय के लिए अपनी उपज लेकर सीहोर कृषि उपज मंडी पहुंचे ग्राम झरखेड़ा के किसान श्री फूलसिंह बताते हैं कि इस वर्ष जब सोयाबीन के भाव को लेकर चिंता थी, तभी सरकार की भावांतर योजना उनके लिए राहत बनकर आई है। वे कहते हैं कि अब हमें यह चिंता नहीं कि मंडी में दाम कितना रहेगा, क्योंकि सरकार हमारी मेहनत का पूरा मूल्य सुनिश्चित कर रही है। किसान श्री फूलसिंह ने बताया कि वे योजना के तहत अपनी सोयाबीन की उपज मंडी में विक्रय कि लिए लेकर आए। उन्होंने बताया कि मंडी में तौल, पंजीयन और भुगतान की प्रक्रिया व्यवस्थित तरीके से संचालित की जा रही है। उन्होंने कहा कि मंडी परिसर में किसानों के बैठने, पेयजल एवं अन्य सुविधाओं की अच्छी व्यवस्था की गई है।

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देशानुसार मंडियों में किए गए प्रबंधों की किसानों ने सराहना करते हुए कहा कि खरीदी कार्य पारदर्शी और निष्पक्ष तरीके से चल रहा है। किसान श्री फूलसिंह ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस योजना ने किसानों के भीतर नया आत्मविश्वास पैदा किया है। वे कहते हैं कि अब उन्हें विश्वास है कि उनकी तरह सभी किसानों को उनकी मेहनत का उचित मूल्य मिल सकेगा।

पिपरिया पहुंचे जगद्गुरु शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती:बोले-

सात्विक बने अध्यात्म से जुड़े, भगवान ने सुख बनाया दुख इंसान ने

नर्मदापुरम/पिपरिया (निप्र)। जगदुरु शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने शनिवार शाम इतवारा बाजार जायसवाल परिसर पिपरिया में धर्म सभा को संबोधित किया। वे दो दिवसीय धार्मिक आयोजन में पिपरिया आए है। इस दौरान शंकराचार्य ने कहा ईश्वर ने सिर्फ सुख बनाया दुख आदमी का बनाया हुआ है। हम प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट कर सीमेंट कांक्रीट का जाल बिछा रहे। जंगलों में रहने वाले आदिवासी प्राकृतिक छाया के बीच रहते है वे सुखी और संतुष्ट। उन्होंने आध्यात्मिकता और सात्विकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। संस्कृत के वेदांती ब्राह्मणों की व्याख्या की और कहा उन्हें श्लोक कंठस्थ है। यूनेस्को में इस पर शोध चल रहा। सनातन हिन्दू धर्म की सैद्धांतिक बातों को सरल अर्थों में समझाया। जातिवाद को लेकर कहा भगवान से चारों वर्ण पैदा हुए। यह शास्त्रों में लिखा है। मनुष्य चरित्र से छोटा बड़ा होता है, जाती से नहीं। उन्होंने मंच से कहा व्यक्ति गलत कार्यों को छोड़कर धर्म के बताए मार्ग पर चलता है तो इसे बढ़ावा देना चाहिए।

नगर में निकाली शोभायात्रा : इसके पहले संत जगदुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती शनिवार सुबह पिपरिया पहुंचे। उनके आगमन पर करीब एक किलोमीटर लंबी शोभायात्रा सिलारी चौक से प्रारंभ हुई। जगदुरु शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती का सांडिया रोड पर कई संस्थाओं ने तोरण द्वार सजाकर स्वागत किया। वे एक खुले वाहन में सवार थे। सड़क के दोनों ओर नागरिकों की कतारें उनके अभिनंदन के लिए खड़ी थीं। लोगों ने घरों से पुष्पवर्षा की और सड़क पर कालीन बिछाई गई। जगदुरु ने श्रद्धालुओं को फल, नारियल और वस्त्रों का उपहार दिया। जय माता दी समिति ने सांडिया रोड पर रुद्राक्ष की माला भेंट कर उनका अभिनंदन किया। मंगलवारा चौक पर विधायक ठाकुरदास नागवंशी और नपाध्यक्ष नीना नागपाल ने नगर की ओर से पुष्पवर्षा कर उनका स्वागत किया। दुर्गा मंदिर चौराहे पर भी हजारों नागरिकों ने उनका अभिनंदन किया। लगभग दो घंटे तक चली यह शोभायात्रा इतवारा बाजार स्थित राहुल जायसवाल के धर्म प्रबोधन स्थल पर समाप्त हुई। यहां पंडितों और आचार्यों ने मंत्रोच्चार और आरती के साथ जगदुरु शंकराचार्य का स्वागत किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का रवींद्र भवन भोपाल में अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में गीतापाठियों के साथ समूह चित्र।

विधानसभा शीतकालीन सत्र में

नगर पालिका संशोधन विधेयक पेश

शीतकालीन सत्र में अतिवृष्टि से नुकसान पर चर्चा, छिंदवाड़ा कफ सीरप कांड और बीएलओ की मौत पर हंगामा

भोपाल (नप्र)। शीतकालीन सत्र के पहले दिन सोमवार को लंच के बाद विधानसभा में नियम 139 के अंतर्गत अतिवृष्टि से हुए नुकसान के प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है।

इस दौरान स्पीकर नरेंद्र सिंह तोमर ने नगर पालिका संशोधन विधेयक पेश करने को कहा। नगरीय विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने विधेयक पेश किया। इस पर आज चर्चा होगी।

इससे पहले नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कांग्रेसी विधायकों को थ्री लाइन व्हिप जारी कर नियम 139 के तहत किसानों की समस्याओं पर चर्चा के दौरान सदन में उपस्थित रहने को कहा। मतदान की स्थिति में कांग्रेस विधायकों से सरकार के खिलाफ वोट करने को कहा गया है।

सत्र की शुरुआत में छिंदवाड़ा में कफ सिरप पीने से बच्चों की मौत का मामला उठा। इंदौर के एमवाय अस्पताल में बच्चों को चूहों के कुतरने पर भी कांग्रेस ने सवाल उठाए। जोबट से विधायक सेना पटेल पूतना के ड्रेसअप में विधानसभा पहुंचीं। बच्चों के पुतले लेकर प्रदर्शन किया गया। संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा- कफ

सिरप और इंदौर चूहा कांड को कार्रवाई से विलोपित करें। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार बोले- मैं सिर्फ बच्चों की मृत्यु पर शोक व्यक्त कर रहा हूं। ये इंसानियत पर प्रश्नचिह्न है। कांग्रेस ने एसआईआर में गड़बड़ी और काम के दबाव में बीएलओ की मौत का मुद्दा भी उठाया। नेता प्रतिपक्ष सिंघार ने 8 बीएलओ की मौतों का जिक्र किया तो मंत्री विश्वास सारंग ने आपत्ति की। कहा- नेता प्रतिपक्ष गरिमा का ध्यान रखें। भोपाल की हुजूर विधानसभा से भाजपा विधायक रामेश्वर शर्मा ने भावांतर योजना को लेकर अपनी ही सरकार पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा- हम भावांतर के सही रेट नहीं बता पा रहे हैं। यह हमारी गलती है। हमारे अधिकारियों के साथ-साथ हम भी किसानों को सही जानकारी नहीं दे पा रहे हैं। शीत सत्र 5 दिसंबर तक चलेगा। इस दौरान 4 दिन ही विधानसभा की बैठकें होंगी। 3 दिसंबर को भोपाल गैस त्रासदी की बरसी पर स्थानीय अवकाश के कारण विधानसभा की भी छुट्टी रहेगी।

मंत्री विजयवर्गीय बोले- कांग्रेस के विधायकों को ट्रेनिंग देने की जरूरत- कांग्रेस विधायकों के सवाल बदलने के आरोपों पर संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा- कांग्रेस के विधायकों को ट्रेनिंग देने की जरूरत है। कई बार विधायक सभी नगर निगम से जुड़े सवाल पूछ लेते हैं। ऐसे में जवाब तैयार करने के लिए दस्तावेज टेंपो में भरकर लाने पड़ेंगे।

विधानसभा में नगर पालिका संशोधन विधेयक पेश, अतिवृष्टि पर चर्चा जारी

नियम 139 के अंतर्गत अतिवृष्टि पर चर्चा रोककर स्पीकर नरेंद्र सिंह तोमर ने नगर पालिका संशोधन विधेयक पेश करने को कहा। इस पर नगरीय विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने विधेयक पेश किया। इस पर आज चर्चा होगी। फिलहाल, सदन में अतिवृष्टि से संबंधित मुद्दे पर चर्चा हो रही है।

मंत्री बोले- 2 लाख 67 हजार किसानों को 432 करोड़ रुपए भावांतर दिया

विधानसभा में नियम 139 के अंतर्गत अतिवृष्टि से हुए नुकसान के प्रस्ताव पर चर्चा जारी है। इस दौरान संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि 2 लाख 67 हजार किसानों को 432 करोड़ रुपए भावांतर की राशि के रूप में दिए गए हैं।

मक्का खरीद के लिए केंद्र सरकार को प्रस्ताव ही नहीं दिया

कांग्रेस विधायक जयवर्धन सिंह ने कहा कि मध्य प्रदेश में मक्का खरीद के लिए केंद्र सरकार को कोई प्रस्ताव ही नहीं दिया गया है। जबकि अक्टूबर 2025 में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इसके लिए प्रस्ताव मांगा था। वर्ष 2024 में खंडवा के किसान की 21 एकड़ की सोयबीन फसल खराब हुई थी। किसान ने रू. 6000 प्रीमियम जमा किया था, इसके बावजूद किसान को बीमा के रूप में मात्र 1274 रुपए मिले। यह सच्चाई फसल बीमा योजना की है।

'गीता' अद्भुत और पवित्र ग्रंथ है, जीवन की सारी जिज्ञासाओं का समाधान 'गीता' में है : मुख्यमंत्री

भगवान श्रीकृष्ण के जहाँ-जहाँ चरण पड़े, उन्हें तीर्थ बनाएगी सरकार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि श्रीमद्भगवद्गीता एक अद्भुत, अनुपम और पवित्र ग्रंथ है। गीता के अध्ययन मात्र से ही मनुष्य के जीवन के सभी प्रश्नों और सभी जिज्ञासाओं का शमन (समाधान) हो जाता है। उन्होंने कहा कि गीता का ज्ञान ही सम्पूर्ण सृष्टि के समग्र ज्ञान और चेतना का मूल आधार है। योगीराज भगवान श्रीकृष्ण ने मानव जीवन को धर्म, कर्म और मर्म का वास्तविक मार्ग दिखाया है। भगवान श्रीकृष्ण ने कर्मयोग, निष्काम कर्म और धर्म पालन को ही मनुष्य के जीवन का सर्वोच्च मार्ग इंगित किया है। उन्होंने वीर अर्जुन को सिखाया कि लौकिक जगत में रहते हुए भी मनुष्य को अपने कर्तव्य (स्वधर्म) का पालन करना चाहिए। कर्म करते हुए भी फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए। यही अलौकिक धर्म का मार्ग है, जिससे मनुष्य मोक्ष और परम शांति की ओर बढ़ता है। भगवान श्रीकृष्ण ने विश्व समुदाय को कर्मयोग के जरिए ही अपने धर्म का पालन करने की प्रेरणा दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को रवीन्द्र भवन में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी प्रदेशवासियों को गीता जयंती की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि गीता का ज्ञान हम सबको सिखाता है कि मनुष्य के आत्मा रूपी पिंड को एक दिन अंततः परमात्मा में ही समाहित हो जाना है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गीता जयंती के पावन पर्व पर वैदिक मंत्रोच्चार के बीच दीप प्रज्वलित करने के साथ योगीराज भगवान श्रीकृष्ण के चित्र पर माल्यार्पण कर अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का विधिवत् शुभारंभ किया। गीता महोत्सव में श्रीकृष्ण आराधना एवं आचार्यों/संतों की सन्निधि में 11000 कृष्णमार्गियों/ कृष्ण भक्तों/बटुकों/स्कूली विद्यार्थियों द्वारा एक स्वर में श्रीमद्भगवद्गीता के 15वें अध्याय का सुमधुर पाठ किया गया। गीता के इस पुरूषोत्तम अध्याय के सस्वर पाठ ने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत कर दिया। धर्म, संस्कृति और तकनीक के इस अनूठे आयोजन ने गीता की शिक्षाओं को नए आयामों में प्रस्तुत किया। साथ ही समाज में गीता के मूल्यों के प्रति नई चेतना का जागरण भी किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी गीता पाठियों के साथ समूह चित्र खिंचवाए और उनके आह्लाद में भी शामिल हुए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि गीता जयंती के पावन पर्व पर ऐसा लग रहा है कि गोपाल कृष्ण हमारे आसपास ही विद्यमान हैं। बीते वर्ष लाल परेड ग्राउंड पर 3500 विद्यार्थियों ने एक साथ गीता पाठ कर अद्भुत रिकॉर्ड बनाया था।

पूतना वेश में क्यों चुप है सरकार?

ज़हरीली दवाइयों पर जवाब दे भाजपा सरकार : नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र के प्रथम दिन कांग्रेस विधायक दल ने छिंदवाड़ा कफ़ सिरप कांड में मासूम बच्चों की हुई दर्दनाक मौतों के विरोध में विधानसभा परिसर में जोरदार सांकेतिक प्रदर्शन किया। कांग्रेस विधायक दल के नेता प्रतिपक्ष श्री उमंग सिंघार ने कहा कि पूतना वेश में क्यों चुप है सरकार?

ज़हरीली दवाइयों पर जवाब दे भाजपा सरकार छिंदवाड़ा में ज़हरीली कफ़ सिरप के कारण कई परिवारों के घरों के चिराग हमेशा के लिए बुझ गए, माताओं की गोद सूनी हो गई, लेकिन पूतना वेश धारण की हुई भाजपा सरकार को आज तक स्वास्थ्य विभाग की जिम्मेदारी तय करने, समीक्षा करने और दोषियों पर कार्रवाई करने की फुर्सत नहीं मिली।

उमंग सिंघार ने आरोप लगाया कि प्रदेश की लाचार, लापरवाह और भ्रष्ट स्वास्थ्य व्यवस्था ने मासूम बच्चों की ज़िंदगी के साथ घोर खिलवाड़ किया है। दवाइयों की गुणवत्ता, लाइसेंसिंग, परीक्षण और सप्लाई चेन की पूरी जिम्मेदारी सरकार और स्वास्थ्य विभाग की होती है, लेकिन सरकार ने अब तक न तो पारदर्शी जाँच की रिपोर्ट सार्वजनिक की और न ही किसी बड़े जिम्मेदार अधिकारी या मंत्री पर कार्रवाई की। यह केवल चिकित्सा लापरवाही नहीं, बल्कि सिस्टम स्तर की आपराधिक विफलता है, जिसके लिए शिवराजडॉमोहन यादव सरकार और भाजपा पूरी तरह जवाबदेह है। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि छिंदवाड़ा के इन पीड़ित परिवारों का दर्द सिर्फ एक ज़िला तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे मध्यप्रदेश को शोक और आक्रोश में डुबो चुका है। जनता यह सवाल पूछ रही है कि- ज़हरीली दवाइयों की खरीद किसके संरक्षण में हुई? दोषी कंपनी और अधिकारियों के खिलाफ एफआईआर, गिरफ्तारी और अभियोजन की स्थिति क्या है?

कितने बच्चों की मौत, कितने गंभीर बीमार–इसकी प्रमाणिक सूची सरकार क्यों छुपा रही है?

उमंग सिंघार ने स्पष्ट चेतावनी देते हुए कहा कि कांग्रेस न्याय की लड़ाई अंत तक लड़ेगी–जब तक हर जिम्मेदार अधिकारी, मंत्री और संबंधित कंपनी पर कठोर दंडात्मक कार्रवाई नहीं होती और हर पीड़ित परिवार को उचित मुआवज़ा, सरकारी सहायता और न्याय नहीं मिल जाता, तब तक हम विधानसभा के अंदर और बाहर इस मुद्दे को मजबूती से उठाते रहेंगे।

रायसेन में पुल ढहा, दो बाइक्स गिरीं, एक युवक की मौत

बहन की विदाई से लौट रहा था युवक, बरेली-पिपरिया हाईवे बंद, प्रबंधक सस्पेंड

रायसेन (नप्र)। रायसेन जिले के बरेली-पिपरिया स्टेट हाईवे पर नयागांव में पुल ढहने के हादसे में घायल बाइक सवार देवेंद्र सिंह धाकड़ (35) की मौत हो गई। वह अपनी बहन की विदाई कर लौट रहा था।

भोपाल एम्स में इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। हादसे के बाद पुल को पूरी तरह बंद कर दिया गया है। लापरवाही के चलते प्रबंधक ए.ए. खान को सस्पेंड कर दिया है। तीन सदस्यीय जांच समिति गठित की गई है, जो 7 दिन में रिपोर्ट देगी।

सोमवार को पुल अचानक भरभराकर ढह गया था। उस समय पुल के ऊपर से गुजर रहीं दो बाइक्स नीचे गिर गई थीं, जिससे एक मजदूर और चार बाइक सवार घायल हुए थे। सभी को पहले बरेली सिविल अस्पताल ले जाया गया, जहां से गंभीर हालत में भोपाल एम्स रेफर किया गया।एसडीओपी के.एस. मुकाती ने बताया कि इलाज के दौरान देवेंद्र की मौत हो गई है। अन्य घायलों में जगदीश केवट, महेश केवट और

देवेंद्र लोधी शामिल हैं।

6 मजदूरों ने भागकर बचाई अपनी जान- हादसे के समय पुल के नीचे मरम्मत कार्य चल रहा था और छह मजदूर काम कर रहे थे। पुल ढहते ही मजदूरों ने दौड़कर जान बचाई, हालांकि एक मजदूर मलबे की चपेट में आकर घायल हो गया। सभी घायलों के सिर, हाथ और पैर में गंभीर चोटें आई हैं। सूचना मिलते ही थाना प्रभारी, एसडीओपी और तहसीलदार सहित प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे।

बहन की शादी की खुशी मातम में बदली- मृतक देवेंद्र की बहन की शादी एक दिन पहले इसी बरेली-पिपरिया मार्ग पर ग्राम शिवनी के एक गार्डन में हुई थी। सोमवार सुबह वह बहन की विदाई कर अपने गांव धोखेड़ा लौट रहा था, तभी हादसे का शिकार हो गया। देवेंद्र पहले सीआरपीएफ में था और वर्तमान में दूसरी नौकरी की तैयारी कर रहा था। उसकी पत्नी पटवारी है। मौत की खबर मिलते ही परिवार में मातम पसर गया।

कांग्रेस ने विधानसभा में उठाया मामला, पीडब्ल्यूडी मंत्री बोले- कांग्रेस के जमाने में बना था,

पीडब्लूडी मंत्री राकेश सिंह ने कहा कि एमपीआरडीसी के एमडी से बात की है। ये पुल आइडेंटिफाई था। इसपर काम भी चल रहा था। काम चलने के दौरान ये हादसा हुआ है। विस्तृत जानकारी ले रहे हैं। संबंधित इंजीनियर पर कार्रवाई के लिए एमडी से कहा है।कांग्रेस के भ्रष्टाचार के आरोप लगाने के सवाल पर राकेश सिंह ने कहा कि ये तो कांग्रेस के जमाने में बनाए गए पुल हैं। वो उस गलती को स्वीकार कर रहे हैं। इसमें राजनीति अच्छी चीज नहीं है। ये कहीं से भी नहीं कहा जा सकता कि पुल गिरा है तो ठीक है। जब तक परीक्षण पूरा नहीं हो जाता तब तक कुछ कहा नहीं जा सकता। राज्य मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा कि पुल के नीचे मरम्मत का कार्य चल रहा था। इंजीनियरों के अनुसार ऐसी स्थिति नहीं थी कि ट्रैफिक को रोका जाए।उधर, कांग्रेस विधायकों ने विधानसभा में मुद्दा उठाते हुए कहा कि निर्माण कार्य के बावजूद पुल पर ट्रैफिक नहीं रोका गया और न ही डायवर्जन किया गया, जो गंभीर लापरवाही है। कांग्रेस विधायक विक्रांत भूरिया ने कहा कि सड़कों का टूटना और पुलों का गिरना सरकार में भ्रष्टाचार का उदाहरण है। केंद्रीय कृषि मंत्री के क्षेत्र में यह घटना सरकार के सुशासन पर सवाल खड़े करती है।

छत से कुएं में कूदा छात्र, 23 घंटे चला रेस्क्यू, निकाला शव

3 मोटर से रातभर निकाला पानी फिर भी खाली नहीं हुआ, छिंदवाड़ा में मां की डांट से गुस्सा था छात्र

छिंदवाड़ा (नप्र)। छिंदवाड़ा में 14 वर्षीय छात्र सार्थक की मौत हो गई। करीब 23 घंटे बाद सोमवार सुबह 9.35 बजे उसका शव कुएं से बाहर निकाल लिया गया। बता दें रविवार सुबह न्यू बजरंग नगर कॉलोनी में रहने वाले छात्र सार्थक ने अपनी घर की छत से कच्चे कुएं में छलांग लगा दी थी। सर्चिंग में क्रेन की मदद ली गई।

एसडीईआरएफ के प्लाटून कमांडर गणेश धुर्वे के मुताबिक, हमें कल सुबह 10 बजे पुलिस कंट्रोल रूम से सूचना मिली थी कि एक बच्चा कुएं में कूद गया। इसके बाद 1 बजे हमारी टीम यहां पहुंच गई। सबसे पहले तीन मोटर ऑपरेट कर कुआं खाली करने का प्रयास किया। उसमें काफी पानी था। इसे खाली करने में हमें 15 से 16 घंटे लग गए। उसमें अब भी चार से पांच फीट पानी बचा हुआ है।कुएं में काफी कचरा भी था। इससे सर्चिंग में काफी अड़चनें आईं। कुएं की आसपास काफी सफाई कराई गई। आखिरकार सोमवार सुबह शव पानी की सतह पर दिखाई दिया।

आवेश में आकर उठाया कदम

देहात थाना प्रभारी जी.एस. राजपूत ने बताया कि प्रारंभिक जांच में यह सामने आया है कि सार्थक को उसकी मां ने किसी बात को लेकर डांट दिया था। इसी बात से आहत होकर उसने आवेश में आकर उसने कुएं में छलांग लगा दी। घटना के बाद परिवार में गम का माहौल है। पुलिस मामले की विस्तृत जांच कर रही है और यह पता लगाने की कोशिश में है कि छात्र को किन परिस्थितियों ने इतना बड़ा कदम उठाने पर मजबूर किया।

उज्जैन में नदी में कूदे युवक-युवती,7 घंटे बाद मिली लाश

प्रेम प्रसंग में सुसाइड की आशंका, युवती को मां और मामा दोनों ने छोड़ दिया था

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन के पास पीरझलार में रविवार युवक और युवती एक साथ चामला नदी में कूद गए। पुलिस ने नाव और स्थानीय गोताखोरों की मदद से सर्चिंग अभियान चलाया। करीब 7 घंटे बाद दोनों के शव निकाले गए।

घटना उज्जैन शहर से लगभग 70 किमी दूर बड़नगर के ग्राम पीरझलार के केसूर रोड की है। शाम करीब 7 बजे पुलिस को सूचना मिली कि ग्राम बरगोदा नातू निवासी वारिस पिता इस्लामुद्दीन एक युवती के साथ नदी में कूद गया है। सूचना के बाद बड़नगर पुलिस ने स्थानीय तैराकों के साथ रेस्क्यू शुरू किया, लेकिन रात तक युवती की पहचान नहीं हो पाई थी।

आधी रात को मिले शव- रात करीब 12 बजे स्थानीय निवासी कपिल मोरवाल की टीम ने कड़ी कोशिशों के बाद सबसे पहले युवती का शव निकाला। कुछ देर बाद ही युवक का शव भी मिल गया। जांच में पता चला कि युवती आदिवासी समाज की थांदला निवासी थी और आशंका जताई जा रही है कि दोनों ने प्रेम प्रसंग में सुसाइड किया है।

छलांग से पहले चाचा को किया था फोन- नदी में कूदने से पहले वारिस ने अपने चाचा को फोन कर कहा था कि वह मोबाइल और बाइक पुल पर छोड़ रहा है, जिन्हें आकर ले जाएं। परिजन मौके पर पहुंचे तो बाइक के पास एक लेडीज चप्पल भी मिली। स्थानीय लोगों ने बताया कि युवक के साथ एक युवती ने भी नदी में छलांग लगाई थी।

काली को मां और मामा दोनों ने छोड़ दिया था

बड़नगर टीआई अशोक पाटीदार के अनुसार युवती की पहचान काली के रूप में हुई। उसके पिता का निधन हो चुका था और मां ने दूसरी शादी कर ली थी। इसके बाद काली अपने मामा के पास रहती थी, लेकिन मामा ने भी उसे दूसरे के भरोसे छोड़ दिया था। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंपे जा रहे हैं। पुलिस का कहना है कि जांच के बाद आत्महत्या के कारणों की पुष्टी हो सकेगी।